

पूजा-विधानम्

Colophon

This document was typeset using Xe_{La}TeX, and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several L^AT_EX macros designed by H. L. Prasād. Practically all the encoding was done with the help of Itranslator 2003 and Ajit Krishnan's mudgala IME (<http://www.aupasana.com/>).

Acknowledgements

The initial encodings of some of these texts were obtained from <http://sanskritdocuments.org/> and/or <http://prapatti.com/>.

See also <http://stotrasamhita.github.io/about/>

स्तोत्रसङ्ग्रहः is also available online (in PDF format) at:
<http://stotrasamhita.github.io/>

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

| | |
|---|----|
| १ व्रतपूजा: | 1 |
| लघु-पञ्चायतन-पूजा | 2 |
| प्रधान पूजा — पञ्चायतनपूजा | 2 |
| षोडशोपचारपूजा | 5 |
| उत्तराङ्गपूजा | 15 |
| ब्रह्मपारस्तोत्रम् | 19 |
| एकादशीव्रतम् — श्री-महाविष्णुपूजा | 21 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 21 |
| प्रधान पूजा - एकादशीपूजा | 23 |
| षोडशोपचारपूजा | 26 |
| विष्णुसहस्रनामावलि: | 30 |
| कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलि: | 48 |
| उत्तराङ्गपूजा | 51 |
| श्रीरामनवमी-पूजा | 55 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 55 |
| प्रधान-पूजा - श्रीराम-पूजा | 57 |
| षोडशोपचारपूजा | 60 |
| रामाष्टोत्तरशतनामावलि: | 65 |
| सीताष्टोत्तरशतनामावलि: | 67 |
| हनुमदष्टोत्तरशतनामावलि: | 69 |
| हनुमत्कृतं श्रीसीतारामस्तोत्रम् | 74 |
| प्रार्थना | 76 |
| कथा | 78 |
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा | 86 |

| | |
|--|----|
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 86 |
| प्रधान-पूजा - श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा | 88 |
| षोडशोपचारपूजा | 91 |
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलि: | 94 |
| उत्तराङ्गपूजा | 97 |

श्री-वरमहालक्ष्मी-पूजा 101

| | |
|---|-----|
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 101 |
| प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा | 103 |
| षोडशोपचारपूजा | 106 |
| लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 109 |
| उत्तराङ्गपूजा | 112 |
| दोरग्रन्थि-पूजा | 113 |
| प्रार्थना | 115 |
| कनकधारास्तवम् | 115 |
| महालक्ष्म्यष्टकम् | 118 |
| अपराध-क्षमापनम् | 120 |
| कथा | 120 |

श्री-सिद्धिविनायक-पूजा 124

| | |
|--|-----|
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 124 |
| प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिविनायक-पूजा | 127 |
| षोडशोपचारपूजा | 130 |
| गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 137 |
| प्रार्थना | 146 |
| महागणेशपञ्चरत्नम् | 146 |
| गणेशभुजङ्गम् | 147 |
| अपराध-क्षमापनम् | 148 |
| कथा | 149 |
| स्यमन्तकोपाख्यानम् | 154 |

| | |
|--|----------------|
| श्री-धन्वन्तरिपूजा | 167 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 167 |
| प्रधान-पूजा — धन्वन्तरिपूजा | 169 |
| षोडशोपचारपूजा | 172 |
| धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 175 |
| उत्तराङ्गपूजा | 178 |
| धन्वन्तरि स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) | 181 |
| श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा | 183 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 183 |
| प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा | 185 |
| मातृगणपूजा | 188 |
| नवग्रहपूजा | 189 |
| लोकपालपूजा | 194 |
| षोडशोपचारपूजा | 196 |
| लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 200 |
| उत्तराङ्गपूजा | 202 |
| ईशानादि पूजा | 204 |
| कुबेर पूजा | 204 |
| कुबेराष्टोत्तरशतनामावलि: | 205 |
| प्रार्थना | 208 |
| अपराध-क्षमापनम् | 208 |
| श्री-स्कन्द-षष्ठी-पूजा | 209 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 209 |
| प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा | 211 |
| षोडशोपचारपूजा | 213 |
| सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलि: | 217 |
| वल्ली अष्टोत्तरशतनामावलि: | 219 |

| | |
|--|------------|
| देवसेना अष्टोत्तरशतनामावलिः | 221 |
| वृन्दावनपूजा (तुलसी-विष्णु-पूजा) | 227 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 227 |
| प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा | 229 |
| षोडशोपचारपूजा | 231 |
| अङ्गपूजा | 234 |
| तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः | 235 |
| तुलसीविवाहविधिः | 239 |
| शिवरत्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा | 241 |
| व्रत-सङ्कल्पः | 241 |
| पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा | 242 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-यामः) | 244 |
| षोडशोपचारपूजा | 247 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 249 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 252 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (द्वितीय-यामः) | 255 |
| षोडशोपचारपूजा | 255 |
| महान्यासः | 257 |
| पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 257 |
| पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् | 258 |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः | 260 |
| मूर्धादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः | 265 |
| पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः | 266 |
| हंसगायत्री | 266 |
| दिक् सम्पुटन्यासः | 267 |
| षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् | 270 |
| गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः | 274 |
| आत्मरक्षा | 274 |

| | |
|--|-----|
| शिवसङ्कल्पः | 275 |
| पुरुषसूक्तम् | 280 |
| उत्तरनारायणम् | 281 |
| अप्रतिरथम् | 282 |
| प्रतिपूरुषम् (सं०) | 283 |
| प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) | 284 |
| शतरुद्रीयम् (सं०) | 285 |
| शतरुद्रीयम् (ब्रा०) | 287 |
| पञ्चाङ्गम् | 288 |
| अष्टाङ्ग-नमस्काराः | 288 |
| लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम् | 289 |
| लघुन्यासे देवता-स्थापनम् | 290 |
| आत्मपूजा | 292 |
| कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् | 292 |
| प्रदक्षिणम् | 293 |
| नमस्काराः | 294 |
| चमकानुवाकैः प्रार्थना | 296 |
| प्रार्थना | 300 |
| श्रीरुद्रजपः | 300 |
| ध्यानम् | 301 |
| रुद्रप्रश्नः | 302 |
| रुद्रप्रश्नः | 302 |
| रुद्रप्रश्नः | 303 |
| रुद्रप्रश्नः | 304 |
| रुद्रप्रश्नः | 305 |
| रुद्रप्रश्नः | 306 |
| रुद्रप्रश्नः | 306 |
| रुद्रप्रश्नः | 307 |
| रुद्रप्रश्नः | 308 |
| रुद्रप्रश्नः | 309 |

| | |
|---|-----|
| रुद्रप्रश्नः | 309 |
| श्रीरुद्रनाम त्रिशती | 312 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 318 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 320 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः) | 323 |
| षोडशोपचारपूजा | 324 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 326 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 329 |
| प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) | 332 |
| षोडशोपचारपूजा | 333 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 335 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 337 |

| | |
|----------------------------------|-----|
| सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः | 340 |
|----------------------------------|-----|

| | |
|------------|-----|
| २ उपाङ्गाः | 344 |
|------------|-----|

| | |
|--------------------------|-----|
| संवत्सर-नामानि | 345 |
|--------------------------|-----|

| | |
|----------------|-----|
| नक्षत्र-नामानि | 346 |
|----------------|-----|

| | |
|------------|-----|
| योग-नामानि | 347 |
|------------|-----|

| | |
|------------|-----|
| करण-नामानि | 348 |
|------------|-----|

विभाग: १

व्रतपूजा:

॥ लघु-पञ्चायतन-पूजा ॥

॥ प्रधान पूजा — पञ्चायतनपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवस्सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
()^१ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् /
हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक
/ सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन)
मासे (शुक्ल / कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ (इन्दु /
भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^२ नक्षत्र
()^३ नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम्
अस्याम् () शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय
आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं श्री महागणपति-प्रीत्यर्थं श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-
सूर्यनारायण-प्रीत्यर्थं श्री लक्ष्मीनारायण-प्रीत्यर्थं श्री महालक्ष्मीसमेतं श्री

^१पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^२पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^३पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

सन्तानगोपाल-प्रीत्यर्थं श्री गौरीदेवी-प्रीत्यर्थं श्री साम्बपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं
 श्री नन्दिकेश्वर-प्रीत्यर्थं श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं श्री
 सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति
 ध्यानावाहनादि षोडशोपचारपूजां पञ्चायतनपूजां क्षीराभिषेकं च करिष्ये।
 तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
 (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
 त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
 ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
 नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।
 ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
 आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
 ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप

ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥ ॐ
महागणपतये नमः॥

अस्मिन् बिम्बे श्री महागणपतिं ध्यायामि। आवाहयामि॥

आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता
रथेनाऽदेवो याति भुवना विपश्यन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणं ध्यायामि।
आवाहयामि॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।

च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जा॒तवे॑दो म॒ आव॑ह॥

अस्मिन् बिम्बे श्री लक्ष्मीनारायणं ध्यायामि। अस्मिन् बिम्बे श्री
महालक्ष्मीसमेतं श्री सन्तानगोपालं ध्यायामि।

त्र्य॑म्बकं यजामहे सु॒गन्धिं पु॑ष्टि॒वर्ध॑नम्।

उ॒र्वारु॑कमि॒व ब॑न्ध॒नान्मृ॑त्योर्मु॒क्षीय॑ माऽमृता॑त्॥

गौरी मि॑माय सलिलानि॒ तक्ष॑ती। एक॑पदी द्वि॒पदी॑ सा चतु॑ष्पदी।

अ॒ष्टाप॑दी नव॑पदी बभू॒वुषी॑। स॒हस्रा॑क्षरा पर॒मे व्यो॑मन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री सपरिवार-साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

अस्मिन् बिम्बे श्री गौरीदेवीं ध्यायामि। आवाहयामि॥

अस्मिन् बिम्बे श्री साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ च॒क्रतु॑ण्डाय॑ धीमहि। तन्नो॑ नन्दिः प्रचो॒दया॑त्। अस्मिन्
बिम्बे श्री नन्दिकेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ महा॒सेना॑य॑ धीमहि। तन्नः॑ षण्मुखः प्रचो॒दया॑त्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिनं ध्यायामि।

कल्प॑द्रुमं प्रणमतां कमलारुणभम्

स्कन्दं भुजद्वयमनामयमेकवक्त्रम्।

कात्यायनी-प्रियसुतं कटिबद्धवामम्

कौपीन-दण्डधर-दक्षिणहस्तमीडे ॥

आवाहयामि॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे

मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।

अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्

व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं
ध्यायामि।

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

आवाहयामि॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः।

आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

॥ अभिषेकः ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥ ॐ
महागणपतये नमः॥

ॐ आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता
रथेनाऽदेवो याति भुवना विपश्यन्।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशङ्गुलम्॥

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवाह॥

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
 अष्टापदी नवपदी बभ्रुवर्षी। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।
 तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्।
 तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

रुद्रप्रश्न-चमकप्रश्न-पुरुषष्टुक्तेः अभिषेकम् कृत्वा।

अभिषेकानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ महागणपति-अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

ॐ श्री महागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ आदित्य-अर्चना ॥

- | | |
|------------------|-----------------------|
| १. ॐ मित्राय नमः | ७. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः |
| २. ॐ रवये नमः | ८. ॐ मरीचये नमः |
| ३. ॐ सूर्याय नमः | ९. ॐ आदित्याय नमः |
| ४. ॐ भानवे नमः | १०. ॐ सवित्रे नमः |
| ५. ॐ खगाय नमः | ११. ॐ अर्काय नमः |
| ६. ॐ पूष्णे नमः | १२. ॐ भास्कराय नमः |

ॐ श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ लक्ष्मीनारायण-अर्चना ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः | ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः |
| ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः | १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः |

ॐ श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-अर्चना ॥

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |
| १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः | ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः |
| ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः | १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः |

ॐ श्री महालक्ष्मीसमेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ श्री-साम्बपरमेश्वर-अर्चना ॥

- | | |
|------------------------|------------------------|
| १. ॐ भवाय देवाय नमः | ५. ॐ रुद्राय देवाय नमः |
| २. ॐ शर्वाय देवाय नमः | ६. ॐ उग्राय देवाय नमः |
| ३. ॐ ईशानाय देवाय नमः | ७. ॐ भीमाय देवाय नमः |
| ४. ॐ पशुपतये देवाय नमः | ८. ॐ महते देवाय नमः |
- ॐ श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ नन्दिकेश्वराय नमः।

॥ गौरी-अर्चना ॥

- | |
|----------------------------------|
| १. ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| २. ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ३. ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ४. ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः |
| ५. ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ६. ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ७. ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ८. ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः |
- ॐ श्री-गौरी-देव्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-सुब्रह्मण्यस्वामी-अर्चना ॥

- | | |
|----------------------------|-------------------------|
| १. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः | ८. ॐ कुमाराय नमः |
| २. ॐ स्कन्दाय नमः | ९. ॐ षण्मुखाय नमः |
| ३. ॐ अग्निभुवे नमः | १०. ॐ कुक्कुटध्वजाय नमः |
| ४. ॐ बाहुलेयाय नमः | ११. ॐ शक्तिधराय नमः |
| ५. ॐ गाङ्गेयाय नमः | १२. ॐ गुहाय नमः |
| ६. ॐ शरवणोद्भवाय नमः | १३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः |
| ७. ॐ कार्तिकेयाय नमः | १४. ॐ षण्मातुराय नमः |

१५. ॐ क्रौञ्चभिन्ने नमः

१६. ॐ शिखिवाहनाय नमः

ॐ श्री वल्लिदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ श्री-राम-अर्चना ॥

१. ॐ श्रीरामाय नमः

१३. ॐ परमात्मने नमः

२. ॐ रामभद्राय नमः

१४. ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः

३. ॐ रामचन्द्राय नमः

१५. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय

४. ॐ शाश्वताय नमः

१६. ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः

५. ॐ राजीवलोचनाय नमः

१७. ॐ परस्मै धाम्ने नमः

६. ॐ श्रीमते नमः

१८. ॐ पराकाशाय नमः

७. ॐ राजेन्द्राय नमः

१९. ॐ परात्पराय नमः

८. ॐ रघुपुङ्गवाय नमः

२०. ॐ परेशाय नमः

९. ॐ जानकीवल्लभाय नमः

२१. ॐ पारगाय नमः

१०. ॐ जैत्राय नमः

२२. ॐ पाराय नमः

११. ॐ जितामित्राय नमः

२३. ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः

१२. ॐ जनार्दनाय नमः

२४. ॐ पराय नमः

॥ श्री-सीता-अर्चना ॥

१. ॐ श्रीसीतायै नमः

७. ॐ अवनिसुतायै नमः

२. ॐ जानक्यै नमः

८. ॐ रामायै नमः

३. ॐ देव्यै नमः

९. ॐ राक्षसान्तप्रकारिण्यै

४. ॐ वैदेह्यै नमः

१०. ॐ रत्नगुप्तायै नमः

५. ॐ राघवप्रियायै नमः

११. ॐ मातुलुङ्ग्यै नमः

६. ॐ रमायै नमः

१२. ॐ मैथिल्यै नमः

॥ श्री-हनुमद्-अर्चना ॥

१. ॐ हनुमते नमः
२. ॐ अञ्जनासूनवे नमः
३. ॐ वायुपुत्राय नमः
४. ॐ महाबलाय नमः
५. ॐ कपीन्द्राय नमः
६. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः
७. ॐ लङ्काद्वीपभयङ्कराय नमः
८. ॐ प्रभञ्जनसुताय नमः
९. ॐ वीराय नमः
१०. ॐ सीताशोकविनाशकाय नमः
११. ॐ अक्षहन्त्रे नमः
१२. ॐ रामसखाय नमः
१३. ॐ रामकार्यधुरन्धराय नमः
१४. ॐ महौषधगिरेर्धारिणे नमः
१५. ॐ वानरप्राणदायकाय नमः
१६. ॐ वारीशतारकाय नमः
१७. ॐ मैनाकगिरिभञ्जनाय नमः
१८. ॐ निरञ्जनाय नमः
१९. ॐ जितक्रोधाय नमः
२०. ॐ कदलीवनसंवृताय नमः
२१. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
२२. ॐ महासत्त्वाय नमः
२३. ॐ सर्वमन्त्रप्रवर्तकाय नमः
२४. ॐ महालिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः
२५. ॐ बाष्पकृत् जपतान्तराय नमः
२६. ॐ नित्यं शिवध्यानपराय नमः

२७. ॐ शिवपूजापरायणाय नमः

ॐ श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

धूपमाघ्रापयामि।

पञ्चहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पञ्चहूतं सन्तम्।
पञ्चहोतेत्याचक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥
पञ्चहारतीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
गायत्रीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।
पशूँश्च मह्यमावह जीवं च दिशो दिश॥
मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।
अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥
एकहारतीदीपं दर्शयामि।
दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं कृत्वा।

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-
परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः
श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय
नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः
श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः ()
महानैवेद्यं निवेदयामि।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।
हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि।
निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते। यो राजा सत्राज्यो वा सोमैः यजते।
देवसुवामेतानि हवींषि भवन्ति। एतावन्तो वै देवानां सुवाः। त एवास्मै
सुवान्प्रयच्छन्ति। त एनं पुनः सुवन्ते राज्याय। देवसू राजा भवति॥
न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव
भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-
परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः
श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय
नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः
श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः
समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एव वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोऽनमः॥

अन्तश्चरति॑ भूतेषु॒ गुहायां॑ वि॒श्वमूर्तिषु॑।
 त्वं यज्ञस्त्वं॑ वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व॑
 रुद्रस्त्वं॑ विष्णुस्त्वं॑ ब्रह्म त्वं॑ प्रजापतिः।
 त्वं तदाप॑ आपो॒ ज्योती॑ रसोऽमृतं॑ ब्रह्म॒ भूर्भुवः॑ सुव॒रोम्॥

यो वेदादौ॑ स्वरः॒ प्रोक्तो॑ वेदान्ते॒ च प्रतिष्ठितः॑।
 तस्य॑ प्र॒कृति॑लीनस्य॒ यः परः॑ स म॒हेश्वरः॑॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि॑ कानि॑ च पापानि॑ जन्मान्तरकृतानि॑ च।
 तानि॑ तानि॑ विनश्यन्ति॑ प्रदक्षिण पदे पदे॥
 प्रदक्षिणं॑ कृत्वा।

नमः॑ शिवाय॒ साम्बाय॑ सगणाय॒ ससूनवे॑।
 सनन्दिने॑ सगङ्गाय॒ सवृषाय॑ नमो॒ नमः॑॥

नमः॑ शिवाभ्यां॒ नवयौवनाभ्याम्
 परस्पराश्लिष्टवर्धराभ्याम् ।
 नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्याम्
 नमो॒ नमः॑ शङ्करपार्वतीभ्याम्॥

॥ नमस्कारमन्त्राः ॥

नमो॑ हिरण्यबाहवे॒ हिरण्यवर्णाय॑ हिरण्यरूपाय॒ हिरण्यपतये॑ऽम्बिकापतय॒
 उमापतये॑ पशुपतये॒ नमो॒ नमः॑॥

ऋत॑ सत्यं॒ परं॑ ब्रह्म॒ पुरुषं॑ कृष्णपिङ्गलम्।
 ऊर्ध्वरे॑तं विरूपाक्षं॒ विश्वरूपाय॑ वै नमो॒ नमः॑॥

सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु।

पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः।

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्।

सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे।

वो चेम् शन्तम् ५ हृदे। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। नमस्कारान् कृत्वा।

छत्र-चामर-नृत्त-गीत-वाद्य-समस्त-राजोपचारान् समर्पयामि।

बाण-रावण-चण्डेश-नन्दि-भृङ्गि-रिटादयः।

महादेवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः॥

नन्दिकेश्वराय नमः बलिं निवेदयामि। ॐ हर। ॐ हर। ॐ हर।

शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं शङ्करोपरि।

अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्॥

शङ्खजलेन प्रोक्ष्य।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।

आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।

सर्वपापक्षयकरं शिवपादोदकं शुभम्॥

इति अभिषेकतीर्थं प्राश्य।

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।

तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाऽऽराधनं मम॥

हृद्द्वयकर्णिका-मध्यमुमया सह शङ्कर।

प्रविश त्वं महादेव सर्वैरावरणैः सह॥

सम्पूजकानां परिपालकानां
 यतेन्द्रियानां च तपोधनानाम्।
 देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञाम्
 करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥

अनया पूजया सपरिवार-साम्ब-परमेश्वरः प्रीयताम्।

॥ उद्धासनम् ॥

निर्याणमुद्रया पुष्पाण्यादाय आघ्राय हृदये स्थापयित्वा उद्धासयेत्। निर्माल्यं
 शिरसि धारयेत्।

॥ ब्रह्मपारस्तोत्रम् ॥

प्रचेतस ऊचुः

ब्रह्मपारं मुने श्रोतुमिच्छामः परमं स्तवम्।
 जपता कण्डुना देवो येनाऽऽराध्यत केशवः॥५४॥

सोम उवाच

पारं परं विष्णुरपारपारः
 परः परेभ्यः परमार्थरूपी।
 स ब्रह्मपारः परपारभूतः
 परः पराणामपि पारपारः॥५५॥

स कारणं कारणतस्ततोऽपि
 तस्यापि हेतुः परहेतुहेतुः।
 कार्येषु चैवं सह कर्मकर्तृ-
 रूपैरशेषैरवतीह सर्वम्॥५६॥

ब्रह्म प्रभुर्ब्रह्म स सर्वभूतो
 ब्रह्म प्रजानां पतिरच्युतोऽसौ।
 ब्रह्माव्ययं नित्यमजं स
 विष्णुरपक्षयाद्यैरखिलैरसङ्गिः॥५७॥

ब्रह्माक्षरमजं नित्यं यथाऽसौ पुरुषोत्तमः।
तथा रागादयो दोषाः प्रयान्तु प्रशमं मम॥५८॥

सोम उवाच

एतद्ब्रह्म पराख्यं वै संस्तवं परमं जपन्।
अवाप परमां सिद्धिं समाराध्य स केशवम्॥५९॥

इमं स्तवं यः पठति शृणुयाद्वाऽपि नित्यशः।
स कामदोषैरखिलैर्मुक्तः प्राप्नोति वाञ्छितम्॥

॥इति श्रीविष्णुपुराणे प्रथमेऽंशे पञ्चदशोऽध्याये ब्रह्मपारस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

आचामेत्।



॥ एकादशीव्रतम् — श्री-महाविष्णुपूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पादं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान पूजा - एकादशीपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^४ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त
/ शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह /
कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्ल
/ कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध /
गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^५ नक्षत्र ()^६ नाम योग
() करण युक्तायां च एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम् अस्याम् (एकादश्यां
/ द्वादश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय
आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं श्रीभूमिनीलासमेतश्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि
षोडशोपचारपूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

^४पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^५पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^६पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ५. ॐ अनन्ताय नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ६. ॐ पृथिव्यै नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेत् चतुर्भुजं देवं शङ्खचक्रगदाधरम्।
पीताम्बरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्।
लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीभूमिनीलासमेतं महाविष्णुम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥

आसनं समर्पयामि।

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

पाद्यं समर्पयामि।

त्रि॒पादूर्ध्व उदै॒त्पुरु॑षः। पादौ॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑।
ततो॑ वि॒श्वङ्म॑क्रामत्। सा॒श॒ना॒न॒श॒ने अ॒भि॥
अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्मा॑द्विराड॑जायत। वि॒राजो॑ अ॒धि पू॑रुषः।
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत। प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॑॥
आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑तन्वत।
व॒स॒न्तो अ॑स्याऽऽसी॒दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॑विः॥
मधुपर्कं समर्पयामि।

स॒प्तास्या॑ऽऽसन् परि॒धयः॑। त्रिः सप्त॑ स॒मिधः॑ कृ॒ताः।
दे॒वा यद्य॑ज्ञं त॑न्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पु॒रुषं॑ प॒शुम्॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन्। पु॒रुषं॑ जा॒तम॑ग्रतः।
तेन॑ दे॒वा अये॑जन्त। सा॒ध्या ऋषे॑यश्च॒ ये॥
वस्त्रं समर्पयामि।

तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। सम्भृ॑तं पृषदा॒ज्यम्।
प॒शूँस्ताँश्च॑क्रे वाय॒व्यान्। आ॒र॒ण्यान्प्रा॒म्याश्च॒ ये॥
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। ऋचः॑ सा॒मानि॑ जज्ञिरे।
छन्दा॑ँसि जज्ञिरे॒ तस्मा॑त्। यजु॑स्तस्मा॑दजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।
अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादतः।
गार्वो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ वराहाय नमः — पादौ पूजयामि
२. सङ्कर्षणाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. कालात्मने नमः — जानुनी पूजयामि
४. विश्वरूपाय नमः — जङ्घे पूजयामि
५. क्रोढाय नमः — ऊरू पूजयामि
६. भोक्त्रे नमः — कटिं पूजयामि
७. विष्णवे नमः — मेढ्रं पूजयामि
८. हिरण्यगर्भाय नमः — नाभिं पूजयामि
९. श्रीवत्सधारिणे नमः — कुक्षिं पूजयामि
१०. परमात्मने नमः — हृदयं पूजयामि
११. सर्वास्त्रधारिणे नमः — वक्षः पूजयामि
१२. वनमालिने नमः — कण्ठं पूजयामि
१३. सर्वात्मने नमः — मुखं पूजयामि
१४. सहस्राक्षाय नमः — नेत्राणि पूजयामि
१५. सुप्रभाय नमः — ललाटं पूजयामि
१६. चम्पकनासिकाय नमः — नासिकां पूजयामि
१७. सर्वेशाय नमः — कर्णौ पूजयामि
१८. सहस्रशिरसे नमः — शिरः पूजयामि

१९. नीलमेघनिभाय नमः — केशान् पूजयामि

२०. महापुरुषाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ विष्णुसहस्रनामावलि: ॥

ॐ विश्वस्मै नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ वषट्काराय नमः
 ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः
 ॐ भूतकृते नमः
 ॐ भूतभृते नमः
 ॐ भावाय नमः
 ॐ भूतात्मने नमः
 ॐ भूतभावनाय नमः
 ॐ पूतात्मने नमः १०
 ॐ परमात्मने नमः
 ॐ मुक्तानां परमायै गतये नमः
 ॐ अव्ययाय नमः
 ॐ पुरुषाय नमः
 ॐ साक्षिणे नमः
 ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः
 ॐ अक्षराय नमः
 ॐ योगाय नमः
 ॐ योगविदां नेत्रे नमः
 ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय नमः २०
 ॐ नारसिंहवपुषे नमः
 ॐ श्रीमते नमः
 ॐ केशवाय नमः
 ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
 ॐ सर्वस्मै नमः

ॐ शर्वाय नमः
 ॐ शिवाय नमः
 ॐ स्थाणवे नमः
 ॐ भूतादये नमः
 ॐ निधयेऽव्ययाय नमः ३०
 ॐ सम्भवाय नमः
 ॐ भावनाय नमः
 ॐ भर्त्रे नमः
 ॐ प्रभवाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ ईश्वराय नमः
 ॐ स्वयम्भुवे नमः
 ॐ शम्भवे नमः
 ॐ आदित्याय नमः
 ॐ पुष्कराक्षाय नमः ४०
 ॐ महास्वनाय नमः
 ॐ अनादिनिधनाय नमः
 ॐ धात्रे नमः
 ॐ विधात्रे नमः
 ॐ धातव उत्तमाय नमः
 ॐ अप्रमेयाय नमः
 ॐ हृषीकेशाय नमः
 ॐ पद्मनाभाय नमः
 ॐ अमरप्रभवे नमः
 ॐ विश्वकर्मणे नमः ५०

ॐ मनवे नमः
 ॐ त्वष्ट्रे नमः
 ॐ स्थविष्ठाय नमः
 ॐ स्थविराय ध्रुवाय नमः
 ॐ अग्राह्याय नमः
 ॐ शाश्वताय नमः
 ॐ कृष्णाय नमः
 ॐ लोहिताक्षाय नमः
 ॐ प्रतर्दनाय नमः
 ॐ प्रभूताय नमः
 ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः
 ॐ पवित्राय नमः
 ॐ मङ्गलाय परस्मै नमः
 ॐ ईशानाय नमः
 ॐ प्राणदाय नमः
 ॐ प्राणाय नमः
 ॐ ज्येष्ठाय नमः
 ॐ श्रेष्ठाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
 ॐ भूगर्भाय नमः
 ॐ माधवाय नमः
 ॐ मधुसूदनाय नमः
 ॐ ईश्वराय नमः
 ॐ विक्रमिणे नमः
 ॐ धन्विने नमः
 ॐ मेधाविने नमः

६०

७०

ॐ विक्रमाय नमः
 ॐ क्रमाय नमः
 ॐ अनुत्तमाय नमः
 ॐ दुराधर्षाय नमः
 ॐ कृतज्ञाय नमः
 ॐ कृतये नमः
 ॐ आत्मवते नमः
 ॐ सुरेशाय नमः
 ॐ शरणाय नमः
 ॐ शर्मणे नमः
 ॐ विश्वरेतसे नमः
 ॐ प्रजाभवाय नमः
 ॐ अहे नमः
 ॐ संवत्सराय नमः
 ॐ व्यालाय नमः
 ॐ प्रत्ययाय नमः
 ॐ सर्वदर्शनाय नमः
 ॐ अजाय नमः
 ॐ सर्वेश्वराय नमः
 ॐ सिद्धाय नमः
 ॐ सिद्धये नमः
 ॐ सर्वादये नमः
 ॐ अच्युताय नमः
 ॐ वृषाकपये नमः
 ॐ अमेयात्मने नमः
 ॐ सर्वयोगविनिस्सृताय नमः
 ॐ वसवे नमः

८०

९०

१००

ॐ वसुमनसे नमः
 ॐ सत्याय नमः
 ॐ समात्मने नमः
 ॐ असम्मिताय नमः
 ॐ समाय नमः
 ॐ अमोघाय नमः ११०
 ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः
 ॐ वृषकर्मणे नमः
 ॐ वृषाकृतये नमः
 ॐ रुद्राय नमः
 ॐ बहुशिरसे नमः
 ॐ बभ्रवे नमः
 ॐ विश्वयोनये नमः
 ॐ शुचिश्रवसे नमः
 ॐ अमृताय नमः
 ॐ शाश्वतस्थानवे नमः १२०
 ॐ वरारोहाय नमः
 ॐ महातपसे नमः
 ॐ सर्वगाय नमः
 ॐ सर्वविद्वानवे नमः
 ॐ विष्वक्सेनाय नमः
 ॐ जनार्दनाय नमः
 ॐ वेदाय नमः
 ॐ वेदविदे नमः
 ॐ अव्यङ्गाय नमः
 ॐ वेदाङ्गाय नमः १३०
 ॐ वेदविदे नमः

ॐ कवये नमः
 ॐ लोकाध्यक्षाय नमः
 ॐ सुराध्यक्षाय नमः
 ॐ धर्माध्यक्षाय नमः
 ॐ कृताकृताय नमः
 ॐ चतुरात्मने नमः
 ॐ चतुर्व्यूहाय नमः
 ॐ चतुर्दष्टाय नमः
 ॐ चतुर्भुजाय नमः १४०
 ॐ भ्राजिष्णवे नमः
 ॐ भोजनाय नमः
 ॐ भोक्त्रे नमः
 ॐ सहिष्णवे नमः
 ॐ जगदादिजाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ विजयाय नमः
 ॐ जेत्रे नमः
 ॐ विश्वयोनये नमः
 ॐ पुनर्वसवे नमः १५०
 ॐ उपेन्द्राय नमः
 ॐ वामनाय नमः
 ॐ प्रांशवे नमः
 ॐ अमोघाय नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ ऊर्जिताय नमः
 ॐ अतीन्द्राय नमः
 ॐ सङ्ग्रहाय नमः

| | | | |
|-----------------------|-----|---------------------|-----|
| ॐ सर्गाय नमः | | ॐ सुरानन्दाय नमः | |
| ॐ धृतात्मने नमः | १६० | ॐ गोविन्दाय नमः | |
| ॐ नियमाय नमः | | ॐ गोविदां पतये नमः | |
| ॐ यमाय नमः | | ॐ मरीचये नमः | |
| ॐ वेद्याय नमः | | ॐ दमनाय नमः | १९० |
| ॐ वैद्याय नमः | | ॐ हंसाय नमः | |
| ॐ सदायोगिने नमः | | ॐ सुपर्णाय नमः | |
| ॐ वीरघ्ने नमः | | ॐ भुजगोत्तमाय नमः | |
| ॐ माधवाय नमः | | ॐ हिरण्यनाभाय नमः | |
| ॐ मधवे नमः | | ॐ सुतपसे नमः | |
| ॐ अतीन्द्रियाय नमः | | ॐ पद्मनाभाय नमः | |
| ॐ महामायाय नमः | १७० | ॐ प्रजापतये नमः | |
| ॐ महोत्साहाय नमः | | ॐ अमृत्यवे नमः | |
| ॐ महाबलाय नमः | | ॐ सर्वदृशे नमः | |
| ॐ महाबुद्धये नमः | | ॐ सिंहाय नमः | २०० |
| ॐ महावीर्याय नमः | | ॐ सन्धात्रे नमः | |
| ॐ महाशक्तये नमः | | ॐ सन्धिमतये नमः | |
| ॐ महाद्युतये नमः | | ॐ स्थिराय नमः | |
| ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः | | ॐ अजाय नमः | |
| ॐ श्रीमते नमः | | ॐ दुर्मर्षणाय नमः | |
| ॐ अमेयात्मने नमः | | ॐ शास्त्रे नमः | |
| ॐ महाद्रिधृषे नमः | १८० | ॐ विश्रुतात्मने नमः | |
| ॐ महेष्वासाय नमः | | ॐ सुरारिघ्ने नमः | |
| ॐ महीभर्त्रे नमः | | ॐ गुरवे नमः | |
| ॐ श्रीनिवासाय नमः | | ॐ गुरुतमाय नमः | २१० |
| ॐ सतां गतये नमः | | ॐ धाम्ने नमः | |
| ॐ अनिरुद्धाय नमः | | ॐ सत्याय नमः | |

ॐ सत्यपराक्रमाय नमः
 ॐ निमिषाय नमः
 ॐ अनिमिषाय नमः
 ॐ स्रग्विणे नमः
 ॐ वाचस्पतये उदारधिये नमः
 ॐ अग्रण्ये नमः
 ॐ ग्रामण्ये नमः
 ॐ श्रीमते नमः २२०
 ॐ न्यायाय नमः
 ॐ नेत्रे नमः
 ॐ समीरणाय नमः
 ॐ सहस्रमूर्ध्ने नमः
 ॐ विश्वात्मने नमः
 ॐ सहस्राक्षाय नमः
 ॐ सहस्रपदे नमः
 ॐ आवर्तनाय नमः
 ॐ निवृत्तात्मने नमः
 ॐ संवृताय नमः २३०
 ॐ सम्प्रमर्दनाय नमः
 ॐ अहःसंवर्तकाय नमः
 ॐ वह्नये नमः
 ॐ अनिलाय नमः
 ॐ धरणीधराय नमः
 ॐ सुप्रसादाय नमः
 ॐ प्रसन्नात्मने नमः
 ॐ विश्वधृषे नमः
 ॐ विश्वभुजे नमः

ॐ विभवे नमः २४०
 ॐ सत्कर्त्रे नमः
 ॐ सत्कृताय नमः
 ॐ साधवे नमः
 ॐ जह्वे नमः
 ॐ नारायणाय नमः
 ॐ नराय नमः
 ॐ असङ्ख्येयान् नमः
 ॐ अप्रमेयात्मने नमः
 ॐ विशिष्टाय नमः
 ॐ शिष्टकृते नमः २५०
 ॐ शुचये नमः
 ॐ सिद्धार्थाय नमः
 ॐ सिद्धसङ्कल्पाय नमः
 ॐ सिद्धिदाय नमः
 ॐ सिद्धिसाधनाय नमः
 ॐ वृषाहिणे नमः
 ॐ वृषभाय नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ वृषपर्वणे नमः
 ॐ वृषोदराय नमः २६०
 ॐ वर्धनाय नमः
 ॐ वर्धमानाय नमः
 ॐ विविक्ताय नमः
 ॐ श्रुतिसागराय नमः
 ॐ सुभुजाय नमः
 ॐ दुर्धराय नमः

ॐ वाग्मिने नमः
 ॐ महेन्द्राय नमः
 ॐ वसुदाय नमः
 ॐ वसवे नमः २७०
 ॐ नैकरूपाय नमः
 ॐ बृहद्रूपाय नमः
 ॐ शिपिविष्टाय नमः
 ॐ प्रकाशनाय नमः
 ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः
 ॐ प्रकाशात्मने नमः
 ॐ प्रतापनाय नमः
 ॐ ऋद्धाय नमः
 ॐ स्पष्टाक्षराय नमः
 ॐ मन्त्राय नमः २८०
 ॐ चन्द्रांशवे नमः
 ॐ भास्करद्युतये नमः
 ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः
 ॐ भानवे नमः
 ॐ शशबिन्दवे नमः
 ॐ सुरेश्वराय नमः
 ॐ औषधाय नमः
 ॐ जगतस्सेतवे नमः
 ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः
 ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नमः २९०
 ॐ पवनाय नमः
 ॐ पावनाय नमः
 ॐ अनलाय नमः

ॐ कामघ्ने नमः
 ॐ कामकृते नमः
 ॐ कान्ताय नमः
 ॐ कामाय नमः
 ॐ कामप्रदाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ युगादिकृते नमः ३००
 ॐ युगावर्ताय नमः
 ॐ नैकमायाय नमः
 ॐ महाशनाय नमः
 ॐ अदृश्याय नमः
 ॐ व्यक्तरूपाय नमः
 ॐ सहस्रजिते नमः
 ॐ अनन्तजिते नमः
 ॐ इष्टाय नमः
 ॐ अविशिष्टाय नमः
 ॐ शिष्टेष्टाय नमः ३१०
 ॐ शिखण्डिने नमः
 ॐ नहुषाय नमः
 ॐ वृषाय नमः
 ॐ क्रोधघ्ने नमः
 ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नमः
 ॐ विश्वबाहवे नमः
 ॐ महीधराय नमः
 ॐ अच्युताय नमः
 ॐ प्रथिताय नमः
 ॐ प्राणाय नमः ३२०

ॐ प्राणदाय नमः
 ॐ वासवानुजाय नमः
 ॐ अपान्निधये नमः
 ॐ अधिष्ठानाय नमः
 ॐ अप्रमत्ताय नमः
 ॐ प्रतिष्ठिताय नमः
 ॐ स्कन्दाय नमः
 ॐ स्कन्दधराय नमः
 ॐ धुर्याय नमः
 ॐ वरदाय नमः
 ॐ वायुवाहनाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ बृहद्भानवे नमः
 ॐ आदिदेवाय नमः
 ॐ पुरन्दराय नमः
 ॐ अशोकाय नमः
 ॐ तारणाय नमः
 ॐ ताराय नमः
 ॐ शूराय नमः
 ॐ शौरये नमः
 ॐ जनेश्वराय नमः
 ॐ अनुकूलाय नमः
 ॐ शतावर्ताय नमः
 ॐ पद्मिने नमः
 ॐ पद्मनिभेक्षणाय नमः
 ॐ पद्मनाभाय नमः
 ॐ अरविन्दाक्षाय नमः

३३०

३४०

ॐ पद्मगर्भाय नमः
 ॐ शरीरभृते नमः
 ॐ महर्द्धये नमः
 ॐ ऋद्धाय नमः
 ॐ वृद्धात्मने नमः
 ॐ महाक्षाय नमः
 ॐ गरुडध्वजाय नमः
 ॐ अतुलाय नमः
 ॐ शरभाय नमः
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ समयज्ञाय नमः
 ॐ हविर्हरये नमः
 ॐ सर्वलक्षणलक्षणाय नमः
 ॐ लक्ष्मीवते नमः
 ॐ समितिञ्जयाय नमः
 ॐ विक्षराय नमः
 ॐ रोहिताय नमः
 ॐ मार्गाय नमः
 ॐ हेतवे नमः
 ॐ दामोदराय नमः
 ॐ सहाय नमः
 ॐ महीधराय नमः
 ॐ महाभागाय नमः
 ॐ वेगवते नमः
 ॐ अमिताशनाय नमः
 ॐ उद्भवाय नमः
 ॐ क्षोभणाय नमः

३५०

३६०

३७०

| | | | |
|-------------------|-----|---------------------------|-----|
| ॐ देवाय नमः | | ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः | |
| ॐ श्रीगर्भाय नमः | | ॐ धर्माय नमः | |
| ॐ परमेश्वराय नमः | | ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः | |
| ॐ करणाय नमः | | ॐ वैकुण्ठाय नमः | |
| ॐ कारणाय नमः | | ॐ पुरुषाय नमः | |
| ॐ कर्त्रे नमः | ३८० | ॐ प्राणाय नमः | |
| ॐ विकर्त्रे नमः | | ॐ प्राणदाय नमः | |
| ॐ गहनाय नमः | | ॐ प्रणवाय नमः | |
| ॐ गुहाय नमः | | ॐ पृथ्वे नमः | ४१० |
| ॐ व्यवसायाय नमः | | ॐ हिरण्यगर्भाय नमः | |
| ॐ व्यवस्थानाय नमः | | ॐ शत्रुघ्नाय नमः | |
| ॐ संस्थानाय नमः | | ॐ व्याप्ताय नमः | |
| ॐ स्थानदाय नमः | | ॐ वायवे नमः | |
| ॐ ध्रुवाय नमः | | ॐ अधोक्षजाय नमः | |
| ॐ परर्द्धये नमः | | ॐ ऋतवे नमः | |
| ॐ परमस्पष्टाय नमः | ३९० | ॐ सुदर्शनाय नमः | |
| ॐ तुष्टाय नमः | | ॐ कालाय नमः | |
| ॐ पुष्टाय नमः | | ॐ परमेष्ठिने नमः | |
| ॐ शुभेक्षणाय नमः | | ॐ परिग्रहाय नमः | ४२० |
| ॐ रामाय नमः | | ॐ उग्राय नमः | |
| ॐ विरामाय नमः | | ॐ संवत्सराय नमः | |
| ॐ विरताय नमः | | ॐ दक्षाय नमः | |
| ॐ मार्गाय नमः | | ॐ विश्रामाय नमः | |
| ॐ नेयाय नमः | | ॐ विश्वदक्षिणाय नमः | |
| ॐ नयाय नमः | | ॐ विस्ताराय नमः | |
| ॐ अनयाय नमः | ४०० | ॐ स्थावरस्थाणवे नमः | |
| ॐ वीराय नमः | | ॐ प्रमाणाय नमः | |

ॐ बीजायाव्ययाय नमः
 ॐ अर्थाय नमः
 ॐ अनर्थाय नमः
 ॐ महाकोशाय नमः
 ॐ महाभोगाय नमः
 ॐ महाधनाय नमः
 ॐ अनिर्विण्णाय नमः
 ॐ स्थविष्ठाय नमः
 ॐ अभुवे नमः
 ॐ धर्मयूपाय नमः
 ॐ महामखाय नमः
 ॐ नक्षत्रनेमये नमः
 ॐ नक्षत्रिणे नमः
 ॐ क्षमाय नमः
 ॐ क्षामाय नमः
 ॐ समीहनाय नमः
 ॐ यज्ञाय नमः
 ॐ इज्याय नमः
 ॐ महेज्याय नमः
 ॐ क्रतवे नमः
 ॐ सत्राय नमः
 ॐ सताङ्गतये नमः
 ॐ सर्वदर्शिने नमः
 ॐ विमुक्तात्मने नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ ज्ञानाय उत्तमाय नमः
 ॐ सुव्रताय नमः

४३०

४४०

४५०

ॐ सुमुखाय नमः
 ॐ सूक्ष्माय नमः
 ॐ सुघोषाय नमः
 ॐ सुखदाय नमः
 ॐ सुहृदे नमः
 ॐ मनोहराय नमः
 ॐ जितक्रोधाय नमः
 ॐ वीरबाहवे नमः
 ॐ विदारणाय नमः
 ॐ स्वापनाय नमः
 ॐ स्ववशाय नमः
 ॐ व्यापिने नमः
 ॐ नैकात्मने नमः
 ॐ नैककर्मकृते नमः
 ॐ वत्सराय नमः
 ॐ वत्सलाय नमः
 ॐ वत्सिने नमः
 ॐ रत्नगर्भाय नमः
 ॐ धनेश्वराय नमः
 ॐ धर्मगुप्ते नमः
 ॐ धर्मकृते नमः
 ॐ धर्मिणे नमः
 ॐ सते नमः
 ॐ असते नमः
 ॐ क्षराय नमः
 ॐ अक्षराय नमः
 ॐ अविज्ञात्रे नमः

४६०

४७०

४८०

ॐ सहस्रांशवे नमः
 ॐ विधात्रे नमः
 ॐ कृतलक्षणाय नमः
 ॐ गभस्तिनेमये नमः
 ॐ सत्त्वस्थाय नमः
 ॐ सिंहाय नमः
 ॐ भूतमहेश्वराय नमः
 ॐ आदिदेवाय नमः ४९०
 ॐ महादेवाय नमः
 ॐ देवेशाय नमः
 ॐ देवभृद्गुरवे नमः
 ॐ उत्तराय नमः
 ॐ गोपतये नमः
 ॐ गोत्रे नमः
 ॐ ज्ञानगम्याय नमः
 ॐ पुरातनाय नमः
 ॐ शरीरभूतभृते नमः
 ॐ भोक्त्रे नमः ५००
 ॐ कपीन्द्राय नमः
 ॐ भूरिदक्षिणाय नमः
 ॐ सोमपाय नमः
 ॐ अमृतपाय नमः
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ पुरुजिते नमः
 ॐ पुरुसत्तमाय नमः
 ॐ विनयाय नमः
 ॐ जयाय नमः

ॐ सत्यसन्धाय नमः ५१०
 ॐ दाशार्हाय नमः
 ॐ सात्त्वतां पतये नमः
 ॐ जीवाय नमः
 ॐ विनयितासाक्षिणे नमः
 ॐ मुकुन्दाय नमः
 ॐ अमितविक्रमाय नमः
 ॐ अम्भोनिधये नमः
 ॐ अनन्तात्मने नमः
 ॐ महोदधिशयाय नमः
 ॐ अन्तकाय नमः ५२०
 ॐ अजाय नमः
 ॐ महार्हाय नमः
 ॐ स्वाभाव्याय नमः
 ॐ जितामित्राय नमः
 ॐ प्रमोदनाय नमः
 ॐ आनन्दाय नमः
 ॐ नन्दनाय नमः
 ॐ नन्दाय नमः
 ॐ सत्यधर्मणे नमः
 ॐ त्रिविक्रमाय नमः ५३०
 ॐ महर्षये कपिलाचार्याय नमः
 ॐ कृतज्ञाय नमः
 ॐ मेदिनीपतये नमः
 ॐ त्रिपदाय नमः
 ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः
 ॐ महाशृङ्गाय नमः

| | | | |
|--------------------------|-----|-------------------------|-----|
| ॐ कृतान्तकृते नमः | | ॐ ज्योतिरादित्याय नमः | |
| ॐ महावराहाय नमः | | ॐ सहिष्णवे नमः | |
| ॐ गोविन्दाय नमः | | ॐ गतिसत्तमाय नमः | |
| ॐ सुषेणाय नमः | ५४० | ॐ सुधन्वने नमः | |
| ॐ कनकाङ्गदिने नमः | | ॐ खण्डपरशवे नमः | |
| ॐ गुह्याय नमः | | ॐ दारुणाय नमः | |
| ॐ गभीराय नमः | | ॐ द्रविणप्रदाय नमः | ५७० |
| ॐ गहनाय नमः | | ॐ दिवस्पृशे नमः | |
| ॐ गुप्ताय नमः | | ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः | |
| ॐ चक्रगदाधराय नमः | | ॐ वाचस्पतयेऽयोनिजाय नमः | |
| ॐ वेधसे नमः | | ॐ त्रिसाम्ने नमः | |
| ॐ स्वाङ्गाय नमः | | ॐ सामगाय नमः | |
| ॐ अजिताय नमः | | ॐ साम्ने नमः | |
| ॐ कृष्णाय नमः | ५५० | ॐ निर्वाणाय नमः | |
| ॐ दृढाय नमः | | ॐ भेषजाय नमः | |
| ॐ सङ्कर्षणायाच्युताय नमः | | ॐ भिषजे नमः | |
| ॐ वरुणाय नमः | | ॐ सन्ध्यासकृते नमः | ५८० |
| ॐ वारुणाय नमः | | ॐ शमाय नमः | |
| ॐ वृक्षाय नमः | | ॐ शान्ताय नमः | |
| ॐ पुष्कराक्षाय नमः | | ॐ निष्टायै नमः | |
| ॐ महामनसे नमः | | ॐ शान्त्यै नमः | |
| ॐ भगवते नमः | | ॐ परायणाय नमः | |
| ॐ भगन्ने नमः | | ॐ शुभाङ्गाय नमः | |
| ॐ आनन्दिने नमः | ५६० | ॐ शान्तिदाय नमः | |
| ॐ वनमालिने नमः | | ॐ स्रष्ट्रे नमः | |
| ॐ हलायुधाय नमः | | ॐ कुमुदाय नमः | |
| ॐ आदित्याय नमः | | ॐ कुव्लेशयाय नमः | ५९० |

ॐ गोहिताय नमः
 ॐ गोपतये नमः
 ॐ गोत्रे नमः
 ॐ वृषभाक्षाय नमः
 ॐ वृषप्रियाय नमः
 ॐ अनिवर्तिने नमः
 ॐ निवृत्तात्मने नमः
 ॐ सङ्क्षेत्रे नमः
 ॐ क्षेमकृते नमः
 ॐ शिवाय नमः
 ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
 ॐ श्रीवासाय नमः
 ॐ श्रीपतये नमः
 ॐ श्रीमतां वराय नमः
 ॐ श्रीदाय नमः
 ॐ श्रीशाय नमः
 ॐ श्रीनिवासाय नमः
 ॐ श्रीनिधये नमः
 ॐ श्रीविभावनाय नमः
 ॐ श्रीधराय नमः
 ॐ श्रीकराय नमः
 ॐ श्रेयसे नमः
 ॐ श्रीमते नमः
 ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः
 ॐ स्वक्षाय नमः
 ॐ स्वङ्गाय नमः
 ॐ शतानन्दाय नमः

६००

६१०

ॐ नन्दये नमः
 ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः
 ॐ विजितात्मने नमः
 ॐ अविधेयात्मने नमः
 ॐ सत्कीर्तये नमः
 ॐ छिन्नसंशयाय नमः
 ॐ उदीर्णाय नमः
 ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः
 ॐ अनीशाय नमः
 ॐ शाश्वतस्थिराय नमः
 ॐ भूशयाय नमः
 ॐ भूषणाय नमः
 ॐ भूतये नमः
 ॐ विशोकाय नमः
 ॐ शोकनाशनाय नमः
 ॐ अर्चिष्मते नमः
 ॐ अर्चिताय नमः
 ॐ कुम्भाय नमः
 ॐ विशुद्धात्मने नमः
 ॐ विशोधनाय नमः
 ॐ अनिरुद्धाय नमः
 ॐ अप्रतिरथाय नमः
 ॐ प्रद्युम्नाय नमः
 ॐ अमितविक्रमाय नमः
 ॐ कालनेमिनिघ्ने नमः
 ॐ वीराय नमः
 ॐ शौरये नमः

६२०

६३०

६४०

ॐ शूरजनेश्वराय नमः
 ॐ त्रिलोकात्मने नमः
 ॐ त्रिलोकेशाय नमः
 ॐ केशवाय नमः
 ॐ केशिघ्ने नमः
 ॐ हरये नमः
 ॐ कामदेवाय नमः
 ॐ कामपालाय नमः
 ॐ कामिने नमः
 ॐ कान्ताय नमः
 ॐ कृतागमाय नमः
 ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ वीराय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ धनञ्जयाय नमः
 ॐ ब्रह्मण्याय नमः
 ॐ ब्रह्मकृते नमः
 ॐ ब्रह्मणे नमः
 ॐ ब्रह्मणे नमः
 ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः
 ॐ ब्रह्मविदे नमः
 ॐ ब्राह्मणाय नमः
 ॐ ब्रह्मिणे नमः
 ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः
 ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः
 ॐ महाक्रमाय नमः

६५०

६६०

६७०

ॐ महाकर्मणे नमः
 ॐ महातेजसे नमः
 ॐ महोरगाय नमः
 ॐ महाक्रतवे नमः
 ॐ महायज्वने नमः
 ॐ महायज्ञाय नमः
 ॐ महाहविषे नमः
 ॐ स्तव्याय नमः
 ॐ स्तवप्रियाय नमः
 ॐ स्तोत्राय नमः
 ॐ स्तुतये नमः
 ॐ स्तोत्रे नमः
 ॐ रणप्रियाय नमः
 ॐ पूर्णाय नमः
 ॐ पूरयित्रे नमः
 ॐ पुण्याय नमः
 ॐ पुण्यकीर्तये नमः
 ॐ अनामयाय नमः
 ॐ मनोजवाय नमः
 ॐ तीर्थकराय नमः
 ॐ वसुरेतसे नमः
 ॐ वसुप्रदाय नमः
 ॐ वसुप्रदाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ वसुवे नमः
 ॐ वसुमनसे नमः
 ॐ हविषे नमः

६८०

६९०

| | | | |
|---------------------|-----|---------------------|-----|
| ॐ सद्गतये नमः | | ॐ नैकस्मै नमः | |
| ॐ सत्कृतये नमः | ७०० | ॐ सवाय नमः | |
| ॐ सत्तायै नमः | | ॐ काय नमः | |
| ॐ सद्भूतये नमः | | ॐ कस्मै नमः | |
| ॐ सत्परायणाय नमः | | ॐ यस्मै नमः | ७३० |
| ॐ शूरसेनाय नमः | | ॐ तस्मै नमः | |
| ॐ यदुश्रेष्ठाय नमः | | ॐ पदायानुत्तमाय नमः | |
| ॐ सन्निवासाय नमः | | ॐ लोकबन्धवे नमः | |
| ॐ सुयामुनाय नमः | | ॐ लोकनाथाय नमः | |
| ॐ भूतावासाय नमः | | ॐ माधवाय नमः | |
| ॐ वासुदेवाय नमः | | ॐ भक्तवत्सलाय नमः | |
| ॐ सर्वासुनिलयाय नमः | ७१० | ॐ सुवर्णवर्णाय नमः | |
| ॐ अनलाय नमः | | ॐ हेमाङ्गाय नमः | |
| ॐ दर्पघ्ने नमः | | ॐ वराङ्गाय नमः | |
| ॐ दर्पदाय नमः | | ॐ चन्दनाङ्गदिने नमः | ७४० |
| ॐ दृष्टाय नमः | | ॐ वीरघ्ने नमः | |
| ॐ दुर्धराय नमः | | ॐ विषमाय नमः | |
| ॐ अपराजिताय नमः | | ॐ शून्याय नमः | |
| ॐ विश्वमूर्तये नमः | | ॐ घृताशिषे नमः | |
| ॐ महामूर्तये नमः | | ॐ अचलाय नमः | |
| ॐ दीप्तमूर्तये नमः | | ॐ चलाय नमः | |
| ॐ अमूर्तिमते नमः | ७२० | ॐ अमानिने नमः | |
| ॐ अनेकमूर्तये नमः | | ॐ मानदाय नमः | |
| ॐ अव्यक्ताय नमः | | ॐ मान्याय नमः | |
| ॐ शतमूर्तये नमः | | ॐ लोकस्वामिने नमः | ७५० |
| ॐ शताननाय नमः | | ॐ त्रिलोकधृषे नमः | |
| ॐ एकस्मै नमः | | ॐ सुमेधसे नमः | |

ॐ मेधजाय नमः
 ॐ धन्याय नमः
 ॐ सत्यमेधसे नमः
 ॐ धराधराय नमः
 ॐ तेजोवृषाय नमः
 ॐ द्युतिधराय नमः
 ॐ सर्वशस्त्रभृतां वराय नमः
 ॐ प्रग्रहाय नमः ७६०
 ॐ निग्रहाय नमः
 ॐ व्यग्राय नमः
 ॐ नैकशृङ्गाय नमः
 ॐ गदाग्रजाय नमः
 ॐ चतुर्मूर्तये नमः
 ॐ चतुर्बाहवे नमः
 ॐ चतुर्व्यूहाय नमः
 ॐ चतुर्गतये नमः
 ॐ चतुरात्मने नमः
 ॐ चतुर्भावाय नमः ७७०
 ॐ चतुर्वेदविदे नमः
 ॐ एकपदे नमः
 ॐ समावर्ताय नमः
 ॐ अनिवृत्तात्मने नमः
 ॐ दुर्जयाय नमः
 ॐ दुरतिक्रमाय नमः
 ॐ दुर्लभाय नमः
 ॐ दुर्गमाय नमः
 ॐ दुर्गाय नमः

ॐ दुरावासाय नमः ७८०
 ॐ दुरारिघ्ने नमः
 ॐ शुभाङ्गाय नमः
 ॐ लोकसारङ्गाय नमः
 ॐ सुतन्त्रवे नमः
 ॐ तन्तुवर्धनाय नमः
 ॐ इन्द्रकर्मणे नमः
 ॐ महाकर्मणे नमः
 ॐ कृतकर्मणे नमः
 ॐ कृतागमाय नमः
 ॐ उद्भवाय नमः ७९०
 ॐ सुन्दराय नमः
 ॐ सुन्दाय नमः
 ॐ रत्ननाभाय नमः
 ॐ सुलोचनाय नमः
 ॐ अर्काय नमः
 ॐ वाजसनाय नमः
 ॐ शृङ्गिणे नमः
 ॐ जयन्ताय नमः
 ॐ सर्वविज्जयिने नमः
 ॐ सुवर्णबिन्दवे नमः ८००
 ॐ अक्षोभ्याय नमः
 ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः
 ॐ महाहृदाय नमः
 ॐ महागर्ताय नमः
 ॐ महाभूताय नमः
 ॐ महानिधये नमः

ॐ कुमुदाय नमः
 ॐ कुन्दराय नमः
 ॐ कुन्दाय नमः
 ॐ पर्जन्याय नमः ८१०
 ॐ पावनाय नमः
 ॐ अनिलाय नमः
 ॐ अमृताशाय नमः
 ॐ अमृतवपुषे नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ सर्वतोमुखाय नमः
 ॐ सुलभाय नमः
 ॐ सुव्रताय नमः
 ॐ सिद्धाय नमः
 ॐ शत्रुजिते नमः ८२०
 ॐ शत्रुतापनाय नमः
 ॐ न्यग्रोधाय नमः
 ॐ उदुम्बराय नमः
 ॐ अश्वत्थाय नमः
 ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः
 ॐ सहस्रार्चिषे नमः
 ॐ सप्तजिह्वाय नमः
 ॐ सप्तैधसे नमः
 ॐ सप्तवाहनाय नमः
 ॐ अमूर्तये नमः ८३०
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ अचिन्त्याय नमः
 ॐ भयकृते नमः

ॐ भयनाशनाय नमः
 ॐ अणवे नमः
 ॐ बृहते नमः
 ॐ कृशाय नमः
 ॐ स्थूलाय नमः
 ॐ गुणभृते नमः
 ॐ निर्गुणाय नमः ८४०
 ॐ महते नमः
 ॐ अधृताय नमः
 ॐ स्वधृताय नमः
 ॐ स्वास्याय नमः
 ॐ प्राग्वंशाय नमः
 ॐ वंशवर्धनाय नमः
 ॐ भारभृते नमः
 ॐ कथिताय नमः
 ॐ योगिने नमः
 ॐ योगीशाय नमः ८५०
 ॐ सर्वकामदाय नमः
 ॐ आश्रमाय नमः
 ॐ श्रमणाय नमः
 ॐ क्षामाय नमः
 ॐ सुपर्णाय नमः
 ॐ वायुवाहनाय नमः
 ॐ धनुर्धराय नमः
 ॐ धनुर्वेदाय नमः
 ॐ दण्डाय नमः
 ॐ दमयित्रे नमः ८६०

ॐ दमाय नमः
 ॐ अपराजिताय नमः
 ॐ सर्वसहाय नमः
 ॐ नियन्त्रे नमः
 ॐ अनियमाय नमः
 ॐ अयमाय नमः
 ॐ सत्त्ववते नमः
 ॐ सात्त्विकाय नमः
 ॐ सत्याय नमः
 ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः ८७०
 ॐ अभिप्रायाय नमः
 ॐ प्रियार्हाय नमः
 ॐ अर्हाय नमः
 ॐ प्रियकृते नमः
 ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः
 ॐ विहायसगतये नमः
 ॐ ज्योतिषे नमः
 ॐ सुरुचये नमः
 ॐ हुतभुजे नमः
 ॐ विभवे नमः ८८०
 ॐ रवये नमः
 ॐ विरोचनाय नमः
 ॐ सूर्याय नमः
 ॐ सवित्रे नमः
 ॐ रविलोचनाय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ हुतभुजे नमः

ॐ भोक्त्रे नमः
 ॐ सुखदाय नमः
 ॐ नैकजाय नमः ८९०
 ॐ अग्रजाय नमः
 ॐ अनिर्विण्णाय नमः
 ॐ सदामर्षिणे नमः
 ॐ लोकाधिष्ठानाय नमः
 ॐ अद्भुताय नमः
 ॐ सनाते नमः
 ॐ सनातनतमाय नमः
 ॐ कपिलाय नमः
 ॐ कपये नमः
 ॐ अव्ययाय नमः ९००
 ॐ स्वस्तिदाय नमः
 ॐ स्वस्तिकृते नमः
 ॐ स्वस्तये नमः
 ॐ स्वस्तिभुजे नमः
 ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः
 ॐ अरौद्राय नमः
 ॐ कुण्डलिने नमः
 ॐ चक्रिणे नमः
 ॐ विक्रमिणे नमः
 ॐ ऊर्जितशासनाय नमः ९१०
 ॐ शब्दातिगाय नमः
 ॐ शब्दसहाय नमः
 ॐ शिशिराय नमः
 ॐ शर्वरीकराय नमः

ॐ अक्रूराय नमः
 ॐ पेशलाय नमः
 ॐ दक्षाय नमः
 ॐ दक्षिणाय नमः
 ॐ क्षमिणां वराय नमः
 ॐ विद्वत्तमाय नमः १२०
 ॐ वीतभयाय नमः
 ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः
 ॐ उत्तारणाय नमः
 ॐ दुष्कृतिघ्ने नमः
 ॐ पुण्याय नमः
 ॐ दुस्स्वप्ननाशनाय नमः
 ॐ वीरघ्ने नमः
 ॐ रक्षणाय नमः
 ॐ सद्भ्यो नमः
 ॐ जीवनाय नमः १३०
 ॐ पर्यवस्थिताय नमः
 ॐ अनन्तरूपाय नमः
 ॐ अनन्तश्रिये नमः
 ॐ जितमन्यवे नमः
 ॐ भयापहाय नमः
 ॐ चतुरश्राय नमः
 ॐ गभीरात्मने नमः
 ॐ विदिशाय नमः
 ॐ व्यादिशाय नमः
 ॐ दिशाय नमः १४०
 ॐ अनादये नमः

ॐ भुवो भुवे नमः
 ॐ लक्ष्म्यै नमः
 ॐ सुवीराय नमः
 ॐ रुचिराङ्गदाय नमः
 ॐ जननाय नमः
 ॐ जनजन्मादये नमः
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ भीमपराक्रमाय नमः
 ॐ आधारनिलयाय नमः १५०
 ॐ अधात्रे नमः
 ॐ पुष्पहासाय नमः
 ॐ प्रजागराय नमः
 ॐ ऊर्ध्वगाय नमः
 ॐ सत्पथाचाराय नमः
 ॐ प्राणदाय नमः
 ॐ प्रणवाय नमः
 ॐ पणाय नमः
 ॐ प्रमाणाय नमः
 ॐ प्राणनिलयाय नमः १६०
 ॐ प्राणभृते नमः
 ॐ प्राणजीवनाय नमः
 ॐ तत्त्वाय नमः
 ॐ तत्त्वविदे नमः
 ॐ एकात्मने नमः
 ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नमः
 ॐ भूर्भुवस्स्वस्तरवे नमः
 ॐ ताराय नमः

ॐ सवित्रे नमः
 ॐ प्रपितामहाय नमः १७०
 ॐ यज्ञाय नमः
 ॐ यज्ञपतये नमः
 ॐ यज्वने नमः
 ॐ यज्ञाङ्गाय नमः
 ॐ यज्ञवाहनाय नमः
 ॐ यज्ञभृते नमः
 ॐ यज्ञकृते नमः
 ॐ यज्ञिने नमः
 ॐ यज्ञभुजे नमः
 ॐ यज्ञसाधनाय नमः १८०
 ॐ यज्ञान्तकृते नमः
 ॐ यज्ञगुह्याय नमः
 ॐ अन्नाय नमः
 ॐ अन्नादाय नमः

ॐ आत्मयोनये नमः
 ॐ स्वयञ्जाताय नमः
 ॐ वैखानाय नमः
 ॐ सामगायनाय नमः
 ॐ देवकीनन्दनाय नमः
 ॐ स्रष्ट्रे नमः १९०
 ॐ क्षितीशाय नमः
 ॐ पापनाशनाय नमः
 ॐ शङ्खभृते नमः
 ॐ नन्दकिने नमः
 ॐ चक्रिणे नमः
 ॐ शार्ङ्गधन्वने नमः
 ॐ गदाधराय नमः
 ॐ रथाङ्गपाणये नमः
 ॐ अक्षोभ्याय नमः
 ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः १०००

॥ इति श्रीविष्णुसहस्रनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ श्रीकृष्णाय नमः
 ॐ कमलानाथाय नमः
 ॐ वासुदेवाय नमः
 ॐ सनातनाय नमः
 ॐ वसुदेवात्मजाय नमः
 ॐ पुण्याय नमः

ॐ लीलामानुषविग्रहाय नमः
 ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः
 ॐ यशोदावत्सलाय नमः
 ॐ हरये नमः १०
 ॐ चतुर्भुजात्तचक्रासि-
 गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः

ॐ देवकीनन्दनाय नमः
 ॐ श्रीशाय नमः
 ॐ नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः
 ॐ यमुनावेगसंहारिणे नमः
 ॐ बलभद्रप्रियानुजाय नमः
 ॐ पूतनाजीवितहराय नमः
 ॐ शकटासुरभञ्जनाय नमः
 ॐ नन्दव्रजजनानन्दिने नमः
 ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः २०
 ॐ नवनीतविलिप्ताङ्गाय नमः
 ॐ नवनीतनटाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ नवनीतनवाहाराय नमः
 ॐ मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः
 ॐ षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः
 ॐ त्रिभङ्गीमधुराकृतये नमः
 ॐ शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः
 ॐ गोविन्दाय नमः
 ॐ योगिनां पतये नमः ३०
 ॐ वत्सवाटचराय नमः
 ॐ अनन्ताय नमः
 ॐ धेनुकासुरमर्दनाय नमः
 ॐ तृणीकृततृणावर्ताय नमः
 ॐ यमलार्जुनभञ्जनाय नमः
 ॐ उत्तालतालभेत्रे नमः
 ॐ तमालश्यामलाकृतये नमः
 ॐ गोपगोपीश्वराय नमः

ॐ योगिने नमः
 ॐ कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः ४०
 ॐ इलापतये नमः
 ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः
 ॐ यादवेन्द्राय नमः
 ॐ यदूद्वहाय नमः
 ॐ वनमालिने नमः
 ॐ पीतवाससे नमः
 ॐ पारिजातापहारकाय नमः
 ॐ गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः
 ॐ गोपालाय नमः
 ॐ सर्वपालकाय नमः ५०
 ॐ अजाय नमः
 ॐ निरञ्जनाय नमः
 ॐ कामजनकाय नमः
 ॐ कञ्जलोचनाय नमः
 ॐ मधुघ्ने नमः
 ॐ मथुरानाथाय नमः
 ॐ द्वारकानायकाय नमः
 ॐ बलिने नमः
 ॐ बृन्दावनान्तसञ्चारिणे नमः
 ॐ तुलसीदामभूषणाय नमः ६०
 ॐ स्यमन्तकमणैर्हर्त्रे नमः
 ॐ नरनारायणात्मकाय नमः
 ॐ कुब्जाकृष्णाम्बरधराय नमः
 ॐ मायिने नमः
 ॐ परमपुरुषाय नमः

ॐ मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्ध-
 विशारदाय नमः
 ॐ संसारवैरिणे नमः
 ॐ कंसारये नमः
 ॐ मुरारये नमः
 ॐ नरकान्तकाय नमः ७०
 ॐ अनादिब्रह्मचारिणे नमः
 ॐ कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः
 ॐ शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः
 ॐ दुर्योधनकुलान्तकाय नमः
 ॐ विदुराक्रूरवरदाय नमः
 ॐ विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः
 ॐ सत्यवाचे नमः
 ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः
 ॐ सत्यभामारताय नमः
 ॐ जयिने नमः ८०
 ॐ सुभद्रापूर्वजाय नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ जगन्नाथाय नमः
 ॐ वेणुनादविशारदाय नमः
 ॐ वृषभासुरविध्वंसिने नमः

ॐ बाणासुरकरान्तकाय नमः
 ॐ युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः
 ॐ बर्हिर्बर्हावतंसकाय नमः ९०
 ॐ पार्थसारथये नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ गीतामृतमहोदधये नमः
 ॐ कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्री-
 पदाम्बुजाय नमः
 ॐ दामोदराय नमः
 ॐ यज्ञभोक्त्रे नमः
 ॐ दानवेन्द्रविनाशकाय नमः
 ॐ नारायणाय नमः
 ॐ परब्रह्मणे नमः
 ॐ पन्नगाशनवाहनाय नमः १००
 ॐ जलक्रीडासमासक्तगोपी-
 वस्त्रापहारकाय नमः
 ॐ पुण्यश्लोकाय नमः
 ॐ तीर्थपादाय नमः
 ॐ वेदवेद्याय नमः
 ॐ दयानिधये नमः
 ॐ सर्वतीर्थात्मकाय नमः
 ॐ सर्वग्रहरूपिणे नमः
 ॐ परात्पराय नमः

॥ इति श्री ब्रह्माण्डमहापुराणे वायुप्रोक्ते
 श्री कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥
श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।
पशूँश्च मह्यमावह जीवन् च दिशो दिश॥
मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।
अभिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥
श्रीभूमिनीलासमेत महाविष्णवे नमः () निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोका अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदा॒हमे॒तं पु॒रुषं॑ म॒हान्त॑म्। आ॒दि॒त्यव॑र्णं॒ तम॑स॒स्तु पा॒रो।
सर्वा॑णि रू॒पाणि॑ वि॒चित्य॑ धी॒रः। नामा॑नि कृ॒त्वाऽभि॑वदन्॒ यदास्ते॑॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं
कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धा॒ता पु॒रस्ता॒द्यमु॑दाज॒हारः। श॒क्रः प्र॒वि॒द्वान् प्र॒दि॒शश्च॑त॒स्रः।
तमे॒वं वि॒द्वान॑मृ॒तं इ॒ह भ॑वति। ना॒न्यः प॒न्था अ॒र्य॒नाय॑ वि॒द्यते॑॥

यो॑ऽपां पु॒ष्पं वे॒द। पु॒ष्प॒वान् प्र॒जावा॑न् प॒शुमा॑न् भ॒वति॑।
च॒न्द्रमा॒ वा अ॒पां पु॒ष्पम्। पु॒ष्प॒वान् प्र॒जावा॑न् प॒शुमा॑न् भ॒वति॑।
य ए॒वं वे॒द। यो॑ऽपामा॒यत॑नं॒ वे॒द। आ॒यत॑नवान् भवति।

ओं तद्ब्र॒ह्म। ओं तद्वा॒युः। ओं तदा॒त्मा।
ओं तथ्स॒त्यम्। ओं तथ्सर्व॑म्। ओं तत्पु॒रोर्न॑मः॥

अ॒न्तश्च॑रति॑ भू॒तेषु॑ गुहा॒यां वि॑श्वमूर्तिषु।
त्वं य॒ज्ञस्त्वं व॑ष॒ट्कार॑स्त्वमिन्द्रस्त्व॑
रु॒द्रस्त्वं वि॑ष्णुस्त्वं ब्र॒ह्म त्वं प्र॑जा॒पतिः॑।
त्वं तंदा॒प आ॒पो ज्योती॑ र॒सोऽमृ॑तं ब्र॒ह्म भूर्भुवः॑ सु॒व॒रोम्॥

श्री भूमीनीलासमेतमहाविष्णवे नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।
स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥
स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।
मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः। तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन्।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्ते। यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥
छत्र॑चामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् एकादशीपुण्यकाले
महाविष्णुपूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

एकादश्यामुपोष्यैव पारणात् पूर्वकालतः।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण सुखवन्दित॥

महाविष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

नमोऽस्तु केशवादिभ्यः सर्वलोकैकवन्दिताः।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो भव सर्वदा॥

केशवादिभ्यः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

कर्मरूपाय देवाय मत्स्यरूप नमोऽस्तुते।
 नीलमेघस्वरूपाय अर्घ्यं दत्तं मया प्रभो॥
 विष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

क्षीरोद्भवे महालक्ष्मि सुप्रसन्ने सुरेश्वरि।
 सर्वप्रदे जगद्वन्द्ये गृहीदार्यमिदं रमे॥॥
 महालक्ष्म्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।
 अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः
 श्री लक्ष्मीनारायणः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
 अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥
 एकादशीपुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
 महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं
 श्रीभूमिनीलासमेत श्री महाविष्णुप्रीतिं कामयमानः
 मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।
 अनया पूजया श्रीभूमिनीलासमेतः श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
 न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
 न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्रीभूमिनीलासमेतश्रीमहाविष्णुं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
 (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)
 अनया पूजया श्रीभूमिनीलासमेतः श्रीमहाविष्णुः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
 आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥
 अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
 सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥
 इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।

॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम् ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य व्रतेनानेन केशव।
 प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



॥ श्रीरामनवमी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः
निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥
अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा - श्रीराम-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
() नाम संवत्सरे उत्तरायणे वसन्त-ऋतौ (मेष/मीन) मासे शुक्लपक्षे
नवम्यां शुभतिथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु /स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम्
(आर्द्रा/पुनर्वसू/पुष्य) नक्षत्रयुक्तायां ()-योग ()-करण-युक्तायां च एवं गुण-

विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् नवम्यां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-
चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम
इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-
पातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां
सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेत
श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थं श्रीरामनवमीपुण्यकाले कल्पोक्तप्रकारेण यथाशक्ति
श्रीरामचन्द्रपूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।
श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति प्रसादं शिरसा
गृहीत्वा)

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
ॐ गङ्गायै नमः, ॐ यमुनायै नमः, ॐ गोदावर्यै नमः, ॐ सरस्वत्यै नमः,
ॐ नर्मदायै नमः, ॐ सिन्धवे नमः, ॐ कावेर्यै नमः,
ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा भू॒तान्यापः प्रा॒णा वा आपः प॒शव॑
आपोऽन्न॒मापोऽमृत॑मापः स॒म्राडापो वि॒राडापः स्व॒राडाप॒श्छन्दा॑ऽस्यापो
ज्योती॑ऽप्यापो यजू॑ऽप्यापः स॒त्यमापः सर्वा॑ दे॒वता॒ आपो भूर्भुव॑स्सुव॒राप॑
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
 मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
 कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः॥
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः।
 गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
 नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
 मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
 अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
 व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
 शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादि कोणेषु च।
 सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
 मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं ध्यायामि।

(अथ प्राणप्रतिष्ठा)

आवाहयामि विश्वेशं वैदेहीवल्लभं विभुम्।

कौसल्यातनयं रामं पूर्णचन्द्रनिभाननम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रम्
 आवाहयामि।

रत्नसिंहासनारूढ सर्वभूपालवन्दित।

आसनं ते मया दत्तं प्रीतिं जनयतु प्रभो॥ - आसनं समर्पयामि।

पादाङ्गुष्ठसमुद्भूतगङ्गापावितविष्टप।

पादार्थमुदकं राम ददामि परिगृह्यताम्॥ - पाद्यं समर्पयामि।

वालखिल्यादिभिर्विप्रैस्त्रिसन्ध्यं प्रयतात्मभिः।

अर्घ्यैराराधित विभो ममार्घ्यं राम गृह्यताम्॥ - अर्घ्यं समर्पयामि।

आचान्ताम्भोधिना राम मुनिना परिसेवित।

मया दत्तेन तोयेन कुर्वाचमनमीश्वर॥ - आचमनीयं समर्पयामि।

मधुदध्याज्यसंयुक्तं मधुसुदन राघव।

मधुपर्क मया दत्तं गृहाण रघुनायक॥ - मधुपर्कं समर्पयामि।

कामधेनु-समुद्भूतक्षीरेणेन्द्रेण राघव।

अभिषिक्ताखिलार्थाप्त्यै स्नाहि मदत्तदुग्धतः॥ - क्षीराभिषेकं समर्पयामि।

हनूमता मधुवनोद्भूतेन मधुना प्रभो।

प्रीत्याऽभिषेचिततनौ मधुना स्नाहि मेऽद्य भोः॥ - मध्वभिषेकं समर्पयामि।

त्रैलोक्यतापहरणनामकीर्तन राघव।

मधूत्थतापशान्त्यर्थं स्नाहि क्षीरेण वै पुनः॥ - मध्वभिषेकान्ते पुनः क्षीराभिषेकं समर्पयामि।

नदीनदसमुद्रादितोयैर्मन्त्राभिसंस्कृतैः।

पट्टाभिषिक्त राजेन्द्र स्नाहि शुद्धजलेन मे॥ - शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

हित्वा पीताम्बरं चीरकृष्णाजिनधराच्युत।
परिधत्स्वाद्य मे वस्त्रं स्वर्णसूत्रविनिर्मितम्॥ - वस्त्रं समर्पयामि।

राजर्षिवंशतिलक रामचन्द्र नमोऽस्तु ते।
यज्ञोपवीतं विधिना निर्मितं धत्स्व मे प्रभो॥ - उपवीतं समर्पयामि।

किरीटादीनि राजेन्द्र हंसकान्तानि राघव।
विभूषणानि धृत्वाऽद्य शोभस्व सह सीतया॥ - आभरणम् समर्पयामि।

सन्ध्यासमानरुचिना नीलाभ्रसमविग्रह।
लिम्पाभि तेऽङ्गकं राम चन्दनेन मुदा हृदि॥ - गन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतान् कुङ्कुमोन्मिश्रानक्षय्यफलदायक।
अर्पये तव पादाब्जे शालितण्डुलसम्भवान्॥ - अक्षतान् समर्पयामि।

चम्पकाशोकपुत्रागैर्जलजैस्तुलस्सीदलैः।
पूजयामि रघूत्तंस पूज्यं त्वां सनकादिभिः॥ - पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ अङ्गगुणपूजा ॥

| | |
|----------------------------|-----------------------|
| ॐ अहल्योद्धारकाय नमः | श्रीरामपादरजः पूजयामि |
| ॐ शरणागतरक्षकाय नमः | पादकान्तिं पूजयामि |
| ॐ गङ्गानदीप्रवर्तनपराय नमः | पादनखान् पूजयामि |
| ॐ सीतासंवाहितपदाय नमः | पादतलं पूजयामि |

| | |
|-----------------------------------|-----------------------------|
| ॐ विनतकल्पद्रुमाय नमः | गुल्फौ पूजयामि |
| ॐ दुन्दुभिकायविक्षेपकाय नमः | पादाङ्गुष्ठं पूजयामि |
| ॐ दण्डकारण्य-गमन-जङ्घालाय नमः | जङ्घे पूजयामि |
| ॐ जानुन्यस्तकराम्बुजाय नमः | जानुनी पूजयामि |
| ॐ वीरासनाध्यासिने नमः | ऊरू पूजयामि |
| ॐ पीताम्बरालङ्कृताय नमः | कटिं पूजयामि |
| ॐ आकाशमध्यगाय नमः | मध्यं पूजयामि |
| ॐ अरिनिग्रहपराय नमः | कटिलम्बितमासं पूजयामि |
| ॐ अब्धिमेषलापतये नमः | मध्यलम्बितमेखलादामं पूजयामि |
| ॐ उदरस्थितब्रह्माण्डाय नमः | उदरं पूजयामि |
| ॐ जगत्रयगुरवे नमः | वलित्रयं पूजयामि |
| ॐ सीतानुलेपित-काश्मीर-चन्दनाय नमः | वक्षः पूजयामि |
| ॐ अभयप्रदानशौण्डाय नमः | दक्षिणबाहुदण्डं पूजयामि |
| ॐ वितरणजितकल्पद्रुमाय नमः | दक्षिणकरतलं पूजयामि |
| ॐ आशरनिरसनपराय नमः | दक्षिणकरस्थितशरं पूजयामि |
| ॐ ज्ञानविज्ञानभासकाय नमः | चिन्मुद्रां पूजयामि |
| ॐ मुनिसङ्घार्पितदिव्यपदाय नमः | वामभुजदण्डं पूजयामि |
| ॐ दशाननकालरूपिणे नमः | वामहस्तस्थितकोदण्डं पूजयामि |
| ॐ शतमखदत्तशतपुष्करस्रजे नमः | अंसौ पूजयामि |
| ॐ कृत्तदशाननकिरीटकूटाय नमः | अंसलम्बिनिषङ्गद्वयं पूजयामि |
| ॐ सीताबाहुलतालिक्रिंताय नमः | कण्ठं पूजयामि |

| | |
|-------------------------------|---|
| ॐ स्मितभाषिणे नमः | स्मितं पूजयामि |
| ॐ नित्यप्रसन्नाय नमः | मुखप्रसादं पूजयामि |
| ॐ सत्यवाचे नमः | वाचं पूजयामि |
| ॐ कपालिपूजिताय नमः | कपोलौ पूजयामि |
| ॐ चक्षुश्रवः प्रभुपूजिताय नमः | श्रवसी पूजयामि |
| ॐ अनासादितपापगन्धाय नमः | घ्राणं पूजयामि |
| ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः | अक्षिणी पूजयामि |
| ॐ अपाङ्गस्यन्दिकरुणाय नमः | अरुणापाङ्गद्वयं पूजयामि |
| ॐ विनाकृतरुषे नमः | अनाथ-रक्षक-कटाक्षं पूजयामि |
| ॐ कस्तूरीतिलकाङ्किताय नमः | फालं पूजयामि |
| ॐ राजाधिराजवेषाय नमः | किरीटं पूजयामि |
| ॐ मुनिमण्डलपूजिताय नमः | जटामण्डलं पूजयामि |
| ॐ मोहितमुनिजनाय नमः | पुंसां मोहनं रूपं पूजयामि |
| ॐ जानकीव्यजनवीजिताय नमः | विद्युद्विद्योतितकालाभ्रसदृशकान्तिं पूजयामि |
| ॐ हनुमदर्पितचूडामणये नमः | करुणारसोद्वेलितकटाक्षधारां पूजयामि |
| ॐ सुमन्त्रानुग्रहपराय नमः | तेजोमयरूपं पूजयामि |
| ॐ कम्पिताम्भोधये नमः | आहार्यकोपं पूजयामि |
| ॐ तिरस्कृतलङ्केश्वराय नमः | धये पूजयामि |
| ॐ दूराद्वन्दितजनकाय नमः | विनयं पूजयामि |
| ॐ सम्मानितत्रिजटाय नमः | अतिमानुषसौलभ्यं पूजयामि |

| | | |
|--|--------------------------|--------|
| ॐ गन्धर्वराजप्रतिमाय नमः | लोकोत्तरसौन्दर्य पूजयामि | |
| ॐ असहाय-हत-खर-दूषणादि-चतुर्दश- सहस्र-राक्षसाय नमः | पराक्रमं पूजयामि | |
| ॐ आलिङ्गिताञ्जनेयाय नमः | भक्तवात्सल्यं पूजयामि | |
| ॐ लब्धराज्यपरित्यक्त्रे नमः | धर्मं पूजयामि | |
| ॐ दर्भशायिने नमः | लोकानुवर्तनं पूजयामि | |
| ॐ सर्वेश्वराय नमः | सर्वाण्यङ्गानि सर्वांश्च | गुणान् |
| | पूजयामि | |

॥ रामाष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

| | | |
|--------------------------|-----------------------------|----|
| ॐ श्रीरामाय नमः | ॐ वाग्मिने नमः | |
| ॐ रामभद्राय नमः | ॐ सत्यवाचे नमः | |
| ॐ रामचन्द्राय नमः | ॐ सत्यविक्रमाय नमः | |
| ॐ शाश्वताय नमः | ॐ सत्यव्रताय नमः | २० |
| ॐ राजीवलोचनाय नमः | ॐ व्रतधराय नमः | |
| ॐ श्रीमते नमः | ॐ सदा हनुमदाश्रिताय नमः | |
| ॐ राजेन्द्राय नमः | ॐ कौसलेयाय नमः | |
| ॐ रघुपुङ्गवाय नमः | ॐ खरध्वंसिने नमः | |
| ॐ जानकीवल्लभाय नमः | ॐ विराधवधपण्डिताय नमः | |
| ॐ जैत्राय नमः | ॐ विभीषणपरित्रात्रे नमः | |
| ॐ जितामित्राय नमः | ॐ हरकोदण्डखण्डनाय नमः | |
| ॐ जनार्दनाय नमः | ॐ सप्ततालप्रभेत्रे नमः | |
| ॐ विश्वामित्रप्रियाय नमः | ॐ दशग्रीवशिरोहराय नमः | |
| ॐ दान्ताय नमः | ॐ जामदग्न्यमहादर्पदलनाय नमः | |
| ॐ शरणत्राणतत्पराय नमः | ३० | |
| ॐ वालिप्रमथनाय नमः | ॐ ताटकान्तकाय नमः | |

ॐ वेदान्तसाराय नमः
 ॐ वेदात्मने नमः
 ॐ भवरोगस्य भेषजाय नमः
 ॐ दूषणत्रिशिरोहत्रे नमः
 ॐ त्रिमूर्तये नमः
 ॐ त्रिगुणात्मकाय नमः
 ॐ त्रिविक्रमाय नमः
 ॐ त्रिलोकात्मने नमः
 ॐ पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः ४०
 ॐ त्रिलोकरक्षकाय नमः
 ॐ धन्विने नमः
 ॐ दण्डकारण्यकर्तनाय नमः
 ॐ अहल्याशापशमनाय नमः
 ॐ पितृभक्ताय नमः
 ॐ वरप्रदाय नमः
 ॐ जितेन्द्रियाय नमः
 ॐ जितक्रोधाय नमः
 ॐ जितामित्राय नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः ५०
 ॐ ऋक्षवानरसङ्घातिने नमः
 ॐ चित्रकूटसमाश्रयाय नमः
 ॐ जयन्तत्राणवरदाय नमः
 ॐ सुमित्रापुत्रसेविताय नमः
 ॐ सर्वदेवादिदेवाय नमः
 ॐ मृतवानरजीवनाय नमः
 ॐ मायामारीचहत्रे नमः
 ॐ महादेवाय नमः

ॐ महाभुजाय नमः
 ॐ सर्वदेवस्तुताय नमः ६०
 ॐ सौम्याय नमः
 ॐ ब्रह्मण्याय नमः
 ॐ मुनिसंस्तुताय नमः
 ॐ महायोगाय नमः
 ॐ महोदाराय नमः
 ॐ सुग्रीवेप्सितराज्यदाय नमः
 ॐ सर्वपुण्याधिकफलाय नमः
 ॐ स्मृतसर्वाघनाशनाय नमः
 ॐ अनादये नमः
 ॐ आदिपुरुषाय नमः ७०
 ॐ महापुरुषाय नमः
 ॐ पुण्योदयाय नमः
 ॐ दयासाराय नमः
 ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय नमः
 ॐ स्मितवक्त्राय नमः
 ॐ मितभाषिणे नमः
 ॐ पूर्वभाषिणे नमः
 ॐ राघवाय नमः
 ॐ अनन्तगुणगम्भीराय नमः
 ॐ धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः ८०
 ॐ मायामानुषचारित्राय नमः
 ॐ महादेवादिपूजिताय नमः
 ॐ सेतुकृते नमः
 ॐ जितवारीशाय नमः
 ॐ सर्वतीर्थमयाय नमः

ॐ हरये नमः
 ॐ श्यामाङ्गाय नमः
 ॐ सुन्दराय नमः
 ॐ शूराय नमः
 ॐ पीतवाससे नमः १०
 ॐ धनुर्धराय नमः
 ॐ सर्वयज्ञाधिपाय नमः
 ॐ यज्विने नमः
 ॐ जरामरणवर्जिताय नमः
 ॐ शिवलिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः
 ॐ सर्वापगुणवर्जिताय नमः
 ॐ परमात्मने नमः

ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः
 ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
 ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः १००
 ॐ परस्मै धाम्ने नमः
 ॐ पराकाशाय नमः
 ॐ परात्पराय नमः
 ॐ परेशाय नमः
 ॐ पारगाय नमः
 ॐ पाराय नमः
 ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः
 ॐ पराय नमः

॥ इति श्री पद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्री-रामाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ सीताष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ श्रीसीतायै नमः
 ॐ जानक्यै नमः
 ॐ देव्यै नमः
 ॐ वैदेह्यै नमः
 ॐ राघवप्रियायै नमः
 ॐ रमायै नमः
 ॐ अवनिसुतायै नमः
 ॐ रामायै नमः
 ॐ राक्षसान्तप्रकारिण्यै नमः
 ॐ रत्नगुप्तायै नमः १०

ॐ मातुलुङ्ग्यै नमः
 ॐ मैथिल्यै नमः
 ॐ भक्ततोषदायै नमः
 ॐ पद्माक्षजायै नमः
 ॐ कञ्जनेत्रायै नमः
 ॐ स्मितास्यायै नमः
 ॐ नूपुरस्वनायै नमः
 ॐ वैकुण्ठनिलयायै नमः
 ॐ मायै नमः
 ॐ श्रियै नमः २०

ॐ मुक्तिदायै नमः
 ॐ कामपूरण्यै नमः
 ॐ नृपात्मजायै नमः
 ॐ हेमवर्णायै नमः
 ॐ मृदुलाङ्ग्यै नमः
 ॐ सुभाषिण्यै नमः
 ॐ कुशाम्बिकायै नमः
 ॐ दिव्यदायै नमः
 ॐ लवमात्रे नमः
 ॐ मनोहरायै नमः ३०
 ॐ हनुमद्वन्दितपदायै नमः
 ॐ मुग्धायै नमः
 ॐ केयूरधारिण्यै नमः
 ॐ अशोकवनमध्यस्थायै नमः
 ॐ रावणादिकमोहिन्यै नमः
 ॐ विमानसंस्थितायै नमः
 ॐ सुभ्रुवे नमः
 ॐ सुकेश्यै नमः
 ॐ रशान्वितायै नमः
 ॐ रजोरूपायै नमः ४०
 ॐ सत्त्वरूपायै नमः
 ॐ तामस्यै नमः
 ॐ वह्निवासिन्यै नमः
 ॐ हेममृगासक्तचित्तायै नमः
 ॐ वाल्मीक्याश्रमवासिन्यै नमः
 ॐ पतिव्रतायै नमः
 ॐ महामायायै नमः

ॐ पीतकौशेयवासिन्यै नमः
 ॐ मृगनेत्रायै नमः
 ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः ५०
 ॐ धनुर्विद्याविशारदायै नमः
 ॐ सौम्यरूपायै नमः
 ॐ दशरथसुषायै नमः
 ॐ चामरवीजितायै नमः
 ॐ सुमेधादुहित्रे नमः
 ॐ दिव्यरूपायै नमः
 ॐ त्रैलोक्यपालिन्यै नमः
 ॐ अन्नपूर्णायै नमः
 ॐ महालक्ष्म्यै नमः
 ॐ धियै नमः ६०
 ॐ लज्जायै नमः
 ॐ सरस्वत्यै नमः
 ॐ शान्त्यै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ क्षमायै नमः
 ॐ गौर्यै नमः
 ॐ प्रभायै नमः
 ॐ अयोध्यानिवासिन्यै नमः
 ॐ वसन्तशीतलायै नमः
 ॐ गौर्यै नमः ७०
 ॐ स्नानसन्तुष्टमानसायै नमः
 ॐ रमानामभद्रसंस्थायै नमः
 ॐ हेमकुम्भपयोधरायै नमः
 ॐ सुरार्चितायै नमः

ॐ धृत्यै नमः
 ॐ कान्त्यै नमः
 ॐ स्मृत्यै नमः
 ॐ मेधायै नमः
 ॐ विभाव्यै नमः
 ॐ लघूदरायै नमः ८०
 ॐ वरारोहायै नमः
 ॐ हेमकङ्कणमण्डितायै नमः
 ॐ द्विजपत्न्यर्पितनिजभूषायै नमः
 ॐ राघवतोषिण्यै नमः
 ॐ श्रीरामसेवानिरतायै नमः
 ॐ रत्नताटङ्कधारिण्यै नमः
 ॐ रामवामाङ्गसंस्थायै नमः
 ॐ रामचन्द्रैकरञ्जन्यै नमः
 ॐ सरयूजलसङ्कीडाकारिण्यै नमः
 ॐ राममोहिन्यै नमः ९०
 ॐ सुवर्णतुलितायै नमः
 ॐ पुण्यायै नमः
 ॐ पुण्यकीर्त्यै नमः

ॐ कलावत्यै नमः
 ॐ कलकण्ठायै नमः
 ॐ कम्बुकण्ठायै नमः
 ॐ रम्भोरुवे नमः
 ॐ गजगामिन्यै नमः
 ॐ रामार्पितमनायै नमः
 ॐ रामवन्दितायै नमः १००
 ॐ रामवल्लभायै नमः
 ॐ श्रीरामपदचिह्नाङ्गायै नमः
 ॐ रामरामेतिभाषिण्यै नमः
 ॐ रामपर्यङ्कशयनायै नमः
 ॐ रामाङ्घ्रिक्षालिन्यै नमः
 ॐ वरायै नमः
 ॐ कामधेन्वन्नसन्तुष्टायै नमः
 ॐ मातुलुङ्गकरे धृतायै नमः
 ॐ दिव्यचन्दनसंस्थायै नमः
 ॐ श्रियै नमः ११०
 ॐ मूलकासुरमर्दिन्यै नमः

॥ इति श्री आनन्दरामायणे श्री सीताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ आज्ञनेयाय नमः
 ॐ महावीराय नमः
 ॐ हनूमते नमः

ॐ मारुतात्मजाय नमः
 ॐ तत्त्वज्ञानप्रदाय नमः
 ॐ सीतादेवीमुद्राप्रदायकाय नमः
 ॐ अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः

ॐ सर्वमायाविभञ्जनाय नमः
 ॐ सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः
 ॐ रक्षोविध्वंसकारकाय नमः १०
 ॐ परविद्यापरीहर्त्रे नमः
 ॐ परशौर्यविनाशनाय नमः
 ॐ परमन्ननिराकर्त्रे नमः
 ॐ परयन्त्रप्रभेदकाय नमः
 ॐ सर्वग्रहविनाशिने नमः
 ॐ भीमसेनसहायकृते नमः
 ॐ सर्वदुःखहराय नमः
 ॐ सर्वलोकचारिणे नमः
 ॐ मनोजवाय नमः
 ॐ पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः २०
 ॐ सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः
 ॐ सर्वतन्त्रस्वरूपिणे नमः
 ॐ सर्वयन्त्रात्मकाय नमः
 ॐ कपीश्वराय नमः
 ॐ महाकायाय नमः
 ॐ सर्वरोगहराय नमः
 ॐ प्रभवे नमः
 ॐ बलसिद्धिकराय नमः
 ॐ सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकाय नमः
 ॐ कपिसेनानायकाय नमः ३०
 ॐ भविष्यच्चतुराननाय नमः
 ॐ कुमारब्रह्मचारिणे नमः
 ॐ रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः
 ॐ चञ्चलद्वालसन्नद्ध-

लम्बमानशिखोज्ज्वलाय नमः
 ॐ गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः
 ॐ महाबलपराक्रमाय नमः
 ॐ कारागृहविमोक्त्रे नमः
 ॐ शृङ्खलाबन्धमोचकाय नमः
 ॐ सागरोत्तारकाय नमः
 ॐ प्राज्ञाय नमः ४०
 ॐ रामदूताय नमः
 ॐ प्रतापवते नमः
 ॐ वानराय नमः
 ॐ केसरीसुताय नमः
 ॐ सीताशोकनिवारणाय नमः
 ॐ अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः
 ॐ बालार्कसदृशाननाय नमः
 ॐ विभीषणप्रियकराय नमः
 ॐ दशग्रीवकुलान्तकाय नमः
 ॐ लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः ५०
 ॐ वज्रकायाय नमः
 ॐ महाद्युतये नमः
 ॐ चिरञ्जीविने नमः
 ॐ रामभक्ताय नमः
 ॐ दैत्यकार्यविघातकाय नमः
 ॐ अक्षहन्त्रे नमः
 ॐ काञ्चनाभाय नमः
 ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
 ॐ महातपसे नमः
 ॐ लङ्किणीभञ्जनाय नमः ६०

ॐ श्रीमते नमः
 ॐ सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः
 ॐ गन्धमादनशैलस्थाय नमः
 ॐ लङ्कापुरविदाहकाय नमः
 ॐ सुग्रीवसचिवाय नमः
 ॐ धीराय नमः
 ॐ शूराय नमः
 ॐ दैत्यकुलान्तकाय नमः
 ॐ सुरार्चिताय नमः
 ॐ महातेजसे नमः ७०
 ॐ रामचूडामणिप्रदाय नमः
 ॐ कामरूपिणे नमः
 ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः
 ॐ वर्धिमैनाकपूजिताय नमः
 ॐ
 कबलीकृतमार्तण्डमण्डलाय नमः
 ॐ विजितेन्द्रियाय नमः
 ॐ रामसुग्रीवसन्धात्रे नमः
 ॐ महिरावणमर्दनाय नमः
 ॐ स्फटिकाभाय नमः
 ॐ वागधीशाय नमः ८०
 ॐ नवव्याकृतिपण्डिताय नमः
 ॐ चतुर्बाहवे नमः
 ॐ दीनबन्धवे नमः
 ॐ महात्मने नमः

ॐ भक्तवत्सलाय नमः
 ॐ सञ्जीवननगाहर्त्रे नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ वाग्मिने नमः
 ॐ दृढव्रताय नमः
 ॐ कालनेमिप्रमथनाय नमः ९०
 ॐ हरिमर्कटमर्कटाय नमः
 ॐ दान्ताय नमः
 ॐ शान्ताय नमः
 ॐ प्रसन्नात्मने नमः
 ॐ शतकण्ठमदापहृते नमः
 ॐ योगिने नमः
 ॐ रामकथालोलाय नमः
 ॐ सीतान्वेषणपण्डिताय नमः
 ॐ वज्रदंष्ट्राय नमः
 ॐ वज्रनखाय नमः १००
 ॐ रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः
 ॐ इन्द्रजित्प्रहितामोघ-
 ब्रह्मास्त्रविनिवारकाय नमः
 ॐ पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः
 ॐ शरपञ्जरहेलकाय नमः
 ॐ दशबाहवे नमः
 ॐ लोकपूज्याय नमः
 ॐ जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः
 ॐ सीतासमेतश्रीराम-
 पादसेवाधुरन्धराय नमः

॥ इति श्री हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

वनस्पतिरसोद्भूतः सुगन्धः सुमनोहरः।
रामचन्द्र कृपाराशे धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
धूपमाग्रापयामि।

सूर्यवंशसुदीपस्त्वं साज्यवर्तिसमन्वितम्।
गृहाण मङ्गलं दीपं दीनबन्धो दयानिधे॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ओं भूर्भुवस्सुवः + ब्रह्मणे स्वाहा।

नैवेद्यं षड्विपेतं घृतसूपसमन्वितम्।
फलभक्ष्यसमायुक्तं गृह्यतां रघुपुङ्गव॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।
नैवेद्यानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

ताम्बूलं च सकर्पूरं पूगीफलसमन्वितम्।
नागवल्लीदलैर्युक्तं गृह्यतां रघुनायक॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

विभीषणाय भक्ताय लङ्काराज्यप्रदायक।
नरिजनं गृहाणेदं मया भक्त्या समर्पितम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

कल्पवृक्षसमुद्भूतैः पुरुहूतादिभिः सुमैः।
पुष्पाञ्जलिं ददाम्यद्य पूजितायाशरद्विषे॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९

रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
वेदोक्तमन्नपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

मन्दाकिनीसमुद्भूतकाञ्चनाञ्जस्रजा विभो।
सम्मानिताय शक्रेण स्वर्णपुष्पं ददामि ते॥

स्वर्णपुष्पम् समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि + प्रदक्षिणपदेपदे।
प्रकृष्टपापनाशाय + प्रसीद पुरुषोत्तम॥

चराचरं व्याप्नुवन्तमपि त्वां रघुनन्दन।
प्रदक्षिणं करोग्यद्य मदते मूर्तिसंयुतम्॥

(प्रदक्षिणम्)

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविशिष्टतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल-भवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यद्वादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावत्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

साङ्गोपाङ्गाय साराय जगतां सनकादिभिः।
वन्दिताय वरेण्याय राघवाय नमो नमः ॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे
नमस्काराः समर्पयामि।

नमः

॥ हनुमत्कृतं श्रीसीतारामस्तोत्रम् ॥

अयोध्यापुरनेतारं मिथिलापुरनायिकाम्।
इक्ष्वाकूणामलंकारं वैदेहानामलंक्रियाम्॥१॥

रघूणां कुलदीपं च निमीनां कुलदीपिकाम्।
सूर्यवंशसमुद्भूतं सोमवंशसमुद्भवाम्॥२॥

पुत्रं दशरथस्यापि पुत्रीं जनकभूपतेः।
वसिष्ठानुमताचारं शतानन्दमतानुगाम्॥३॥

कौसल्यागर्भसंभूतं वेदिगर्भोदितां स्वयम्।
कालमेघनिभं रामं कार्तस्वरविभूषिताम्॥४॥

चन्द्रकान्ताननाम्भोजं चन्द्रबिम्बोपमाननाम्।
पुण्डरीकविशालाक्षं स्फुरदिन्दीवरेक्षणम्॥५॥

मत्तमातङ्गगमनं मत्तसारसगामिनीम्।
तालीदलश्यामलाङ्गं तप्तचामीकरप्रभाम्॥६॥

चन्दनार्द्रभुजामध्यं कुङ्कुमाक्तभुजान्तराम्।
चापालंकृत हस्ताब्जं पद्मालंकृतपाणिकाम्॥७॥

शरणागतगोप्तारं प्रणिपातप्रसादिकाम्।
सर्वलोकविधातारं सर्वलोकविधायिनीम्॥८॥

लोकाभिरामं श्रीराममभिरामां च मैथिलीम्।
दिव्यसिन्ध्वासनारूढं दिव्यव्रग्वस्त्रभूषणाम्॥९॥

अनुक्षणं कटाक्षाभ्यामन्योन्येक्षणकाङ्क्षिणौ।
अन्योन्यसदृशावेतो त्रैलोक्यगृहदम्पती।
इमौ युवां प्रणम्याहं भजाम्यद्य कृतार्थताम्॥१०॥

अनया स्तोति यः स्तुत्या रामं सीतां च भक्तितः।
तस्य तो तनुतां प्रीतो संपदः सकला अपि॥११॥

इतीदं रामचन्द्रस्य जानक्याश्च विशेषतः।
कृतं हनुमता पुण्यं स्तोत्रं सद्योविमुक्तिदम्।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥१२॥

(इति स्तोत्रम्)

एकातपत्रच्छायायां शासिताशेषभूमिक।
मम छत्रमिदं रत्नजालकं राम गृह्यताम्॥

छत्रम् समर्पयामि।

रक्षोराजानुजाभ्यां ते कृतं चामरसेवया।
वीजयेऽहं कराभ्यां ते चामरद्वयमादरात्॥

चामरम् वीजयामि।

रामायणं साधु गीतं सुताभ्यां श्रुतवानसि।
मयाऽपि गीयमानं ते स्तोत्रं चित्ताय रोचताम्॥

गीतम् गायामि।

वीणावेणुमृदङ्गादिवाद्यैस्त्वां प्रीणयाम्यहम्।
मददम्भाहङ्कृतीनां नाशको भव राघव॥

वाद्यम् घोषयामि।

आरुह्य सीतया सार्धं दत्तामान्दोलिकां मया।
विभाहि भूषितो राम मत्कृते पूजनोत्सवे॥

आन्दोलिकां समर्पयामि।

मया कल्पितपल्याणं महान्तं मम घोटकम्।
मदंसे चरणं न्यस्य मुदाऽऽरोह रघूत्तम॥

अश्वान् आरोहयामि।

गजेन महताऽऽयान्तमाकांक्षन्ति स्म नागराः।
द्रष्टुं त्वां मगजे भाहि दृष्ट्वा नन्देयमप्यहम्॥

गजान् आरोहयामि।

समस्तराजोपचारदेवोपचारपूजाः समर्पयामि।

॥ प्रार्थना ॥

त्वमक्षरोऽसि भगवन् व्यक्ताव्यक्तस्वरूपधृत्।
यथा त्वं रावणं हत्वा यज्ञविघ्नकरं खलम्।
लोकान् रक्षितवान् राम तथा मन्मानसाश्रयम्॥१॥

रजस्तमश्च निर्हृत्य त्वत्पूजालस्यकारकम्।
सत्त्वमुद्रेकय विभो त्वत्पूजादरसिद्धये॥२॥

विभूतिं वर्धय गृहे पुत्रपौत्राभिवृद्धिकृत्।
कल्याणं कुरु मे नित्यं कैवल्यं दिश चान्ततः॥३॥

विधितोऽविधितो वाऽपि या पूजा क्रियते मया।
तां त्वं सन्तुष्टहृदयो यथावद्विहितामिव॥४॥

स्वीकृत्य परमेशान मात्रा मे सह सीतया।
लक्ष्मणादिभिरप्यत्र प्रसादं कुरु मे सदा॥५॥

मनसा वचसा कायेनागसां शतमन्वहम्।
धियाऽधिया च रचये क्षमस्व सहजक्षम॥६॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजाविधिं न जानामि क्षमस्व पुरुषोत्तम॥७॥

॥ अर्घ्य-प्रदानम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्त + प्रीत्यर्थम् अद्य पूर्वोक्त + शुभतिथौ श्रीरामचन्द्रपूजान्ते
अर्घ्यप्रदानं करिष्ये (इति सङ्कल्प्य)।

राम रात्रिश्चराराते क्षीरमध्वाज्यकल्पितम्।
पूजान्तेऽर्घ्यं मया दत्तं स्वीकृत्य वरदो भव॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्॥

अनेनार्घ्यप्रदानेन श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः
प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-रामनवमी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण श्रीरामपूजायां
यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-
हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय
सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः
प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं
यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः
प्रीयताम्।

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ कथा ॥

अगस्त्य उवाच

रहस्यं कथयिष्यामि सूतीक्ष्ण मुनिसत्तम।
चैत्रे नवम्यां प्राक्पक्षे दिवापुण्ये पुनर्वसौ॥१॥

उदये गुरुगौरांशे स्वोच्चस्थे ग्रहपञ्चके।
मेष पूषणि सम्प्राप्ते लग्ने कर्कटकाह्वये॥२॥

आविरासीत्स कलया कौसल्यायां परः पुमान्।
तस्मिन्दिने तु कर्तव्यमुपवासव्रतं सदा॥३॥

तत्र जागरणं कुर्याद्रघुनाथपुरो भुवि।
प्रतिमायां यथाशक्ति पूजा कार्या यथाविधि॥४॥

प्रातर्दशम्यांस्नात्वैव कृत्वा सन्ध्यादिकाः क्रियाः।
सम्पूज्य विधिवद् रामं भक्त्या वित्तानुसारतः॥५॥

ब्राह्मणान् भोजयेत् सम्यक् दक्षिणाभिश्च तोषयेत्।
गोभूतिलहिरण्याद्यैर्वस्त्रालङ्कारणैस्तथा ॥६॥

रामभक्तान्प्रयत्नेन प्रीणयेत्परया मुदा।
एवं यः कुरुते भक्त्या श्रीरामनवमीव्रतम्॥७॥

अनेकजन्मासिद्धानि पापानि सुबहूनि च।
भस्मीकृत्य व्रजत्येव तद्विष्णोः परमं पदम्॥८॥

सर्वेषामप्ययं धर्मो भुक्तिमुत्तयेकसाधनः।
अशुचिर्वाऽपि पापिष्ठः कृत्वेदं व्रतमुत्तमम्।
पूज्यः स्यात्सर्वभूतानां यथा रामस्तथैव सः॥९॥

यस्तु रामनवम्यां वै भुङ्क्ते स तु नराधमः।
कुम्भीपाकेषु घोरेषु गच्छत्येव न संशयः॥१०॥

अकृत्वा रामनवमीव्रतं सर्वव्रतोत्तमम्।
व्रतान्यन्यानि कुरुते न तेषां फलभागभवेत्॥११॥

रहस्यकृतपापानि प्रख्यातानि बहून्यपि।
महान्ति च प्रणश्यन्ति श्रीरामनवमीव्रतात्॥१२॥

एकामपि नरो भक्त्या श्रीरामनवमीं मुने।
उपोष्य कृतकृत्यः स्यात्सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१३॥

नरो रामनवम्यां तु श्रीरामप्रतिमाप्रदः।
विधानेन मुनिश्रेष्ठ स मुक्तो नात्र संशयः॥१४॥

सुतीक्ष्ण उवाच

श्रीरामप्रतिमादानविधानं वा कथं मुने।
कथय त्वं हि रामेऽपि भक्तम्य मम विस्तरात्॥१५॥

अगस्त्य उवाच

कथायिष्यामि तद्विद्वन् प्रतिमादानमुत्तमम्॥१६॥
विधानं चापि यत्नेन यतस्त्वं वैष्णवोत्तमः।
अष्टम्यां चैत्रमासे तु शुक्लपक्षे जितेन्द्रियः॥१७॥
दन्तधावनपूर्वं तु प्रातः स्नायाद्यथाविधि।
नद्यां तडागे कूपे वा हृदे प्रस्रवणेऽपि वा॥१८॥
ततः सन्ध्यादिका कार्याः संस्मरन् राघवं हृदि।
गृहमासाद्य विप्रेन्द्र कुर्यादौपासनादिकम्॥१९॥
दान्तं कुटुम्बिनं विप्रं वेदशास्त्रपरं सदा।
श्रीरामपूजानिरतं सुशीलं दम्भवर्जितम्॥२०॥
विधिज्ञं राममन्त्राणां राममन्त्रैकसाधनम्।
आहूय भक्त्या सम्पूज्य वृणुयात्प्रार्थयन्निति॥२१॥
श्रीरामप्रतिमादानं करिष्येऽहं द्विजोत्तम।
तत्राचार्यो भव प्रीतः श्रीरामोऽसि त्वमेव च॥२२॥
इत्युक्त्वा पूज्य विप्रं तं स्नापयित्वा ततः परम्।
तैलेनाभ्यज्य पयसा चिन्तयन्नाघवं हृदि॥२३॥
श्वेताम्बरधरः श्वेतगन्धमाल्यानि धारयेत्।
अर्चितो भूषितश्चैव कृतमाध्याह्निकक्रियः॥२४॥
आचार्यभोजयेद् भक्त्या सात्त्विकान्नैः सुविस्तरम्।
भुञ्जीत स्वयमप्येवं हृदि राममनुस्मरन्॥२५॥

एकभक्तव्रती तत्र सहाचार्यो जितन्द्रियः।
शृण्वन्नामकथां दिव्यामहःशेषं नयेन्मुने॥२६॥

सायं सन्ध्यादिकाः कुर्यात्क्रिया राममनुस्मरन्।
आचार्यसहितो रात्रावधःशायी जितेन्द्रियः॥२७॥

वसेत्स्वयं न चैकान्ते श्रीरामार्पितमानसः।
ततः प्रातः समुत्थाय स्नात्वा सन्ध्यां यथाविधि॥२८॥

प्रातः सर्वाणि कर्माणि शीघ्रमेव समापयेत्।
ततः स्वस्थमना भूत्वा विद्वद्भिः सहितोऽनघ॥२९॥

स्वगृहे चोत्तरे देशे दानस्योज्ज्वलमण्डपम्।
चतुरं पताकाढयं सवितानं सतोरणम्॥३०॥

मनोहरं महोत्सेधं पुष्पाद्यैः समलङ्कृतम्।
शङ्खचक्रहनूमाद्विः प्रारद्वारे समलङ्कृतम्॥३१॥

गरुत्मच्छार्ङ्गबाणैश्च दक्षिणे समलङ्कृतम्।
गदाखङ्गाङ्गदैश्चैव पश्चिमे च विभूषितम्॥३२॥

पद्मस्वस्तिकनीलैश्च कौबेर्यां समलङ्कृतम्।
मध्यहस्तचतुष्काढ्यवेदिकायुक्तमायतम् ॥३३॥

प्रविश्य गीतनृत्यैश्च वाद्यैश्चापि समन्वितम्।
पुण्याहं वाचयित्वा च विद्वद्भिः प्रीतमानसः॥३४॥

ततः सङ्कल्पयेद्देवं राममेव स्मरन्मुने।
अस्यां रामनवम्यां तु रामाराधनतत्परः॥३५॥

उपोष्याष्टसु यामेषु पूजयित्वा यथाविधि।
इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां तु प्रयत्नतः॥३६॥

श्रीरामप्रीतये दास्ये रामभक्ताय धीमते।
प्रीतो रामो हरत्वाशु पापानि सुबहूनि मे॥३७॥

अनेकजन्मसंसिद्धान्यभ्यस्तानि महान्ति च।
विलिखेत्सर्वतोभद्रं वेदिकोपरि सुन्दरम्॥३८॥

मध्ये तीर्थोदकेर्युक्तं पात्र संस्थाप्य चार्चितम्।
सौवर्णे राजते ताम्रे पात्रे षट्कोणमालिखेत्॥३९॥

ततः स्वर्णमयीं रामप्रतिमां पलमात्रतः।
निर्मितां द्विभुजां रम्यां वामाङ्गस्थितजानकीम्॥४०॥

बिभ्रतीं दक्षिणे हस्ते ज्ञानमुद्रां महामुने।
वामेनाधःकरेणाराद्वीमालिङ्ग्य संस्थिताम्॥४१॥

सिंहासने राजते च पलद्वयविनिर्मिते।
पञ्चामृतस्नानपूर्वं सम्पूज्य विधिवत्ततः॥४२॥

मूलमन्त्रेण नियतो न्यासपूर्वमतन्द्रितः।
दिवैवं विधिवत् कृत्वा रात्रौ जागरणं ततः॥४३॥

दिव्यां रामकथां श्रुत्वा रामभक्तिसमन्वितः।
गीतनृत्यादिभिश्चैव रामस्तोत्रैरनेकधा॥४४॥

रामाष्टकैश्च संस्तुत्य गन्धपुष्पाक्षतादिभिः।
कर्पूरागुरुकस्तूरीकह्वाराद्यैरनेकधा ॥४५॥

सम्पूज्य विधिवद् भक्त्या दिवारात्रं नयेद्बुधः।
ततः प्रातः समुत्थाय स्नानसन्ध्यादिकाः क्रियाः॥४६॥

समाप्य विधिवद्रामं पूजयेद्विधिवन्मुने।
ततो होम प्रकुर्वीत मूलमन्त्रेण मन्त्रवित्॥४७॥

पूर्वोक्त पद्मकुण्डे वा स्थण्डिले वा समाहितः।
लौकिकाग्नौ विधानेन शतमष्टोत्तरं मुने॥४८॥

साज्येन पायसेनैव स्मरन्नाममनन्यधीः।
ततो भक्त्या सुसन्तोष्य आचार्यं पूजयेन्मुने॥४९॥

कुण्डलाभ्यां सरनाभ्यामगुलीयैरनेकधा।
गन्धपुष्पाक्षतैर्वस्त्रैर्विचित्रैस्तु मनोहरैः॥५०॥

ततो रामं स्मरन्दद्यादिमं मन्त्रमुदीरयेत्।
इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां समलङ्कृताम्॥५१॥

चित्रवस्त्रयुगच्छन्नरामोऽहं राघवाय ते।
श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टो भवतु राघवः॥५२॥

इति दत्त्वा विधानेन दद्याद्वै दक्षिणां ध्रुवम्।
अन्नेभ्यश्च यथाशक्त्या गोहिरण्यादि भक्तितः॥५३॥

दद्याद्वासोयुगं धान्यं तथाऽलङ्करणानि च।
एवं यः कुरुते रामप्रतिमादानमुत्तमम्॥५४॥

ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।
तुलापुरुषदानादिफलमाप्नोति सुव्रत॥५५॥

अनेकजन्मसंसिद्धपापेभ्यो मुच्यते ध्रुवम्।
बहुनाऽत्र किमुक्तेन मुक्तिस्तस्य करे स्थिता॥५६॥

कुरुक्षेत्रे महापुण्ये सूर्यपर्वण्यशेषतः।
तुलापुरुषदानाद्यैः कृतैर्यल्लभते फलम्।
तत्फलं लभते मर्त्यो दानेनानेन सुव्रत॥५७॥

सुतीक्ष्ण उवाच

प्रायेण हि नराः सर्वे दरिद्राः कृपणा मुने।
कैः कर्तव्यं कथमिदं व्रतं ब्रूहि महामुने॥५८॥

अगस्त्य उवाच

दरिद्रश्च महाभाग स्वस्य वित्तानुसारतः॥५९॥

पलार्धेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः।
वित्तशाठ्यमकृत्वैव कुर्यादिवं व्रतं मुने॥६०॥

यदि घोरतरं दुष्टं पातकं नेहते क्वचित्।
अकिञ्चनोऽपि यत्नेन उपोष्य नवमीदिने॥६१॥

एकचित्तोऽपि विधिवत्सर्वपापैः प्रमुच्यते।
प्रातःस्नानं च विधिवत्कृत्वा सन्ध्यादिकाः क्रियाः॥६२॥

गोभूतिलहिरण्यादि दद्याद्वित्तानुसारतः।
श्रीरामचन्द्रभक्तेभ्यो विद्वद्भ्यः श्रद्धयान्वितः॥६३॥

पारणं त्वथ कुर्वीत ब्राह्मणैश्च स्वबन्धुभिः।
एवं यः कुरुते भक्त्या सर्वपापैः प्रमुच्यते॥६४॥

प्राप्ते श्रीरामनवमीदिने मर्त्यो विमूढधीः।
उपोषणं न कुरुते कुम्भीपाकेषु पच्यते॥६५॥

यत्किञ्चिद्राममुदिक्ष्य क्रियते न स्वशक्तितः।
रौरवे स तु मूढात्मा पच्यते नात्र संशयः॥६६॥

सुतीक्ष्ण उवाच

यामाष्टके तु पूजा वै तत्र चोक्ता महामुने।
मूलमन्त्रेण संयुक्ता तां कथां वद सुव्रत॥६७॥

अगस्त्य उवाच

सर्वेषां राममन्त्राणां मन्त्रराज षडक्षरम्।
मुमूर्मणिकान्ते अर्धोदकनिवासिनः॥६८॥

अहं दिशामि ते मन्त्रं तारकस्योपदेशतः।
श्रीराम राम रामेति एतत्तारकमुच्यते॥६९॥

अतस्त्वं जानकीनाथपरं ब्रह्माभिधीयसे।
तारकं ब्रह्म चेत्युक्तं तेन पूजा प्रशस्यते॥७०॥

पीठाङ्गदेवतानां तु आवृत्तीनां तथैव च।
आदावेव प्रकुर्वीत देवस्य प्रीतमानस॥७१॥

उपचारैः षोडशभिः पूजाकार्या यथाविधि।
आवाहनं स्थापनं च सम्मुखीकरणं तथा॥७२॥

एवं मुद्रां प्रार्थनां च पूजामुद्रां प्रयत्नतः।
शङ्खपूजां प्रकुर्वीत पूर्वोक्तविधिना ततः॥७३॥

कलशं वामभागे च पूजाद्रव्याणि चादरात्।
पीठे सम्पूज्य यत्नेन आत्मानं मन्त्रमुच्चरेत्॥७४॥

पात्रासादनमप्येवं कुर्याद्यामेष्वतन्द्रितः।
पीताम्बराणि देवाय प्रार्पयन्नर्चयेत्सुधीः॥७५॥

स्वर्णयज्ञोपवीतानि दद्याद्देवाय भक्तितः।
नानारत्नविचित्राणि दद्यादाभरणानि च॥७६॥

हिमाम्बुघृष्टं रुचिरं घनसारमनोहरम्।
क्रमात्तु मूलमन्त्रेण उपचारान्प्रकल्पयेत्॥७७॥

कह्लारैः केतकैर्जात्यैः पुन्नागाद्यैः प्रपूजयेत्।
चम्पकैः शतपत्रैश्च सुगन्धैः सुमनोहरैः॥७८॥

पाद्यचन्दनधूपैश्च तत्तन्मन्त्रैः प्रपूजयेत्।
भक्ष्यभोज्यादिकं भक्त्या देवाय विधिनार्ऽपयेत्॥७९॥

येन सोपस्करं देवं दत्त्वा पापैः प्रमुच्यते।
जन्मकोटिकृतैर्घोरैर्नानारूपैश्च दारुणः॥८०॥

विमुक्तः स्यात्क्षणादेव राम एव भवेन्मुने।
श्रद्धधानस्य दातव्यं श्रीरामनवमीव्रतम्॥८१॥

सर्वलोकहितायेदं पवित्रं पापनाशनम्।
लोहेन निर्मितं वाऽपि शिलया दारुणाऽपि वा॥८२॥

एकेनैव प्रकारेण यस्मै कस्मै च वा मुने।
कृतं सर्वं प्रयत्नेन यत्किञ्चिदपि भक्तितः॥८३॥

जपेदेकान्तमासीनो यावत्स दशमीदिनम्।
अनेन स्यात्पुनः पूजा दशम्यां भोजयेद् द्विजान्॥८४॥

भक्त्या भोज्यैर्बहुविधैर्दद्याद् भक्त्या च दक्षिणाम्।
कृतकृत्यो भवेत्तेन सद्यो रामः प्रसीदति॥८५॥

तूष्णीं तिष्ठन्नरो वाऽपि पुनरावृत्तिवर्जितः।
द्वादशाब्दे कृतेनापि यत्पापं चापि मुच्यते॥८६॥

विलयं याति तत्सर्वं श्रीरामनवमीव्रतम्।
जपं च रामनन्त्राणां यो न जानाति तस्य वै॥८७॥

उपोष्य संस्मरेद्रामं न्यासपूर्वमतन्द्रितः।
गुरोर्लब्धमिमं मन्त्रं न्यसेन्न्यासपुरःसरम्॥८८॥

यामे यामे च विधिना कुर्यात्पूजां समाहितः।
मुमुक्षुश्च सदा कुर्याच्छ्रीरामनवमीव्रतम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो याति ब्रह्म सनातनम्॥८९॥

॥इति श्रीस्कन्दपुराणे अगस्त्य संहितायामगस्तिसुतीक्ष्णसंवादे रामनवमी-
व्रतविधिः सम्पूर्णः॥

॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः
निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥
अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा - श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
()^७ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने वसन्तऋतौ मेषमासे

शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् (स्वाती/?)^८ नक्षत्र ()^९ नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां चतुर्दश्यां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले यथाशक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः श्री-नृसिंह-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

^८पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^९पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायामि देवदेवं तं शङ्खचक्रगदाधरम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्॥
अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥
अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहम् आवाहयामि।

पुरुष ए॒वेद॑ः सर्व॑म्। यद्भू॒तं यच्च॑ भव्य॑म्।
उ॒तामृ॑त॒त्वस्ये॑शानः। यद॒न्नैनाति॑रोह॒ति॥

आसनं समर्पयामि।

ए॒तावा॑नस्य महि॒मा। अतो॑ ज्या॒याऽश्च॑ पू॒रुषः॑।
पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑। त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑ दि॒वि॥

पाद्यं समर्पयामि।

त्रि॒पाद॑र्ध्व उ॒दैत्पु॑रुषः। पादो॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑।
ततो॑ वि॒श्वङ्म॑क्रामत्। सा॒श॒ना॒न॒श॒ने अ॒भि॥
अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्मा॑द्विराडजायत। वि॒राजो॑ अधि॒ पूरु॑षः।
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत। प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॥

आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पु॑रुषेण ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑त॒न्वत।
व॒स॒न्तो अ॑स्याऽऽसी॒दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॑विः॥
मधु॒पर्कं॑ समर्पयामि।

स॒प्तास्या॑ऽऽसन् परि॒धयः॑। त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः।
दे॒वा यद्य॑ज्ञं त॒न्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पु॒रुषं॑ प॒शुम्॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन्। पु॒रुषं॑ जा॒तम॑ग्रतः।
तेन॑ दे॒वा अ॑य॒जन्त। सा॒ध्या ऋषे॑यश्च॒ ये॥

वस्त्रं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
 पशूँस्ताँश्चक्रे वायुव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥
 यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
 छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।
 अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः।
 गार्वा ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
 पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ अनघाय नमः — पादौ पूजयामि
२. वामनाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. शौरये नमः — जङ्घे पूजयामि
४. वैकुण्ठवासिने नमः — ऊरू पूजयामि
५. पुरुषोत्तमाय नमः — मेढ्रं पूजयामि
६. वासुदेवाय नमः — कटिं पूजयामि
७. हृषीकेशाय नमः — नाभिं पूजयामि
८. माधवाय नमः — हृदयं पूजयामि
९. मधुसूदनाय नमः — कण्ठं पूजयामि
१०. वराहाय नमः — बाहून् पूजयामि
११. नृसिंहाय नमः — हस्तान् पूजयामि
१३. दैत्यसूदनाय नमः — मुखं पूजयामि

१६. दामोदराय नमः — नासिकां पूजयामि
 १४. पुण्डरीकाक्षाय नमः— नेत्रे पूजयामि
 १५. गरुडध्वजाय नमः — श्रोत्रे पूजयामि
 १६. गोविन्दाय नमः — ललाटं पूजयामि
 १७. अच्युताय नमः — शिरः पूजयामि
 १८. श्री-नृसिंहाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

- | | |
|--------------------|------------------|
| ॐ श्रीनृसिंहाय नमः | ॐ महाबलाय नमः |
| ॐ महासिंहाय नमः | ॐ उग्रसिंहाय नमः |
| ॐ दिव्यसिंहाय नमः | ॐ महादेवाय नमः |

| | | | |
|-------------------------|----|---------------------|----|
| ॐ उपेन्द्राय नमः | | ॐ सुरारिघ्नाय नमः | |
| ॐ अग्निलोचनाय नमः | | ॐ सदार्तिघ्नाय नमः | |
| ॐ रौद्राय नमः | | ॐ सदाशिवाय नमः | |
| ॐ शौरये नमः | १० | ॐ गुणभद्राय नमः | |
| ॐ महावीराय नमः | | ॐ महाभद्राय नमः | |
| ॐ सुविक्रमपराक्रमाय नमः | | ॐ बलभद्राय नमः | |
| ॐ हरिकोलाहलाय नमः | | ॐ सुभद्रकाय नमः | ४० |
| ॐ चक्रिणे नमः | | ॐ करालाय नमः | |
| ॐ विजयाय नमः | | ॐ विकरालाय नमः | |
| ॐ अजयाय नमः | | ॐ गतायुषे नमः | |
| ॐ अव्ययाय नमः | | ॐ सर्वकर्तृकाय नमः | |
| ॐ दैत्यान्तकाय नमः | | ॐ भैरवाडम्बराय नमः | |
| ॐ परब्रह्मणे नमः | | ॐ दिव्याय नमः | |
| ॐ अघोराय नमः | २० | ॐ अगम्याय नमः | |
| ॐ घोरविक्रमाय नमः | | ॐ सर्वशत्रुजिते नमः | |
| ॐ ज्वालामुखाय नमः | | ॐ अमोघास्त्राय नमः | |
| ॐ ज्वालामालिने नमः | | ॐ शस्त्रधराय नमः | ५० |
| ॐ महाज्वालाय नमः | | ॐ सव्यजूटाय नमः | |
| ॐ महाप्रभवे नमः | | ॐ सुरेश्वराय नमः | |
| ॐ निटिलाक्षाय नमः | | ॐ सहस्रबाहवे नमः | |
| ॐ सहस्राक्षाय नमः | | ॐ वज्रनखाय नमः | |
| ॐ दुर्निरीक्षाय नमः | | ॐ सर्वसिद्धये नमः | |
| ॐ प्रतापनाय नमः | | ॐ जनार्दनाय नमः | |
| ॐ महादंष्ट्राय नमः | ३० | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ प्राज्ञाय नमः | | ॐ भगवते नमः | |
| ॐ हिरण्यक-निषूदनाय नमः | | ॐ स्थूलाय नमः | |
| ॐ चण्डकोपिने नमः | | ॐ अगम्याय नमः | ६० |

ॐ परावराय नमः
 ॐ सर्वमन्त्रैकरूपाय नमः
 ॐ सर्वयन्त्रविदारणाय नमः
 ॐ अव्ययाय नमः
 ॐ परमानन्दाय नमः
 ॐ कालजिते नमः
 ॐ खगवाहनाय नमः
 ॐ भक्तातिवत्सलाय नमः
 ॐ अव्यक्ताय नमः
 ॐ सुव्यक्ताय नमः ७०
 ॐ सुलभाय नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ लोकैकनायकाय नमः
 ॐ सर्वाय नमः
 ॐ शरणागतवत्सलाय नमः
 ॐ धीराय नमः
 ॐ धराय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ भीमपराक्रमाय नमः ८०
 ॐ देवप्रियाय नमः
 ॐ नुताय नमः
 ॐ पूज्याय नमः
 ॐ भवहृते नमः

ॐ परमेश्वराय नमः
 ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
 ॐ श्रीवासाय नमः
 ॐ विभवे नमः
 ॐ सङ्कर्षणाय नमः
 ॐ प्रभवे नमः ९०
 ॐ त्रिविक्रमाय नमः
 ॐ त्रिलोकात्मने नमः
 ॐ कालाय नमः
 ॐ सर्वेश्वराय नमः
 ॐ विश्वम्भराय नमः
 ॐ स्थिराभाय नमः
 ॐ अच्युताय नमः
 ॐ पुरुषोत्तमाय नमः
 ॐ अधोक्षजाय नमः
 ॐ अक्षयाय नमः १००
 ॐ सेव्याय नमः
 ॐ वनमालिने नमः
 ॐ प्रकम्पनाय नमः
 ॐ गुरवे नमः
 ॐ लोकगुरवे नमः
 ॐ स्रष्ट्रे नमः
 ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः
 ॐ परायणाय नमः १०८

॥इति श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्धीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

पशूँश्च मह्यमावह जीवन् च दिशो दिश॥

मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।

अविभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः () पानकं च निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोका अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारो।
 सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं
 दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजुहारं। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।
 तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥
 योऽपां पुष्पं वेदं। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 य एव वेदं। योऽपामायतनं वेदं। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
 ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
 त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९
 रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।
 त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।
 स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥
 स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।

मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥
 यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
 तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।
 नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।
 साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
 ते ह नाकं महिमानं सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥
 - छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्
 नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

हिरण्याक्षवधार्थाय भूभारोत्तरणाय च।
 परित्राणाय साधूनां जातो विष्णुर्नृकेसरी।
 गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सलक्ष्मी-नृहरि स्वयम्॥
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
 अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं
श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-प्रीतिं कामयमानः

मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।
अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

मद्वंशे ये नरा जाता ये जनिष्यन्ति चापरे।
तांस्त्वमुद्धर देवेश दुःसहाद्भवसागरात्॥

पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदुःखाम्बुवारिभिः।
तीव्रैश्च परिभूतस्य मोहदुःखगतस्य मे॥

करावलम्बनं देहि शेषशायिन् जगतपते।
श्रीनृसिंह रमाकान्त भक्तानां भयनाशन॥

क्षीराब्धिनिवासिन् त्वं चक्रपाणे जनार्दन।
व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्)।

अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥
इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।



॥ श्री-वरमहालक्ष्मी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
 पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।
 आचमनीयं समर्पयामि।
 ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
 स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।
 यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
 दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
 गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
 पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
 अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
 प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
 अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
 कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
 शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
 ()^{१०} नाम संवत्सरे दक्षिनायने वर्ष-ऋतौ (कटक/सिंह)-श्रावण-मासे
 शुक्लपक्षे () शुभतिथौ भृगुवासरयुक्तायाम् ()^{११} नक्षत्र ()^{१२} नाम योग
 ()^{१३} करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् ()
 शुभतिथौ अस्माकं सकुटुम्बायाः क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
 ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
 वृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च

^{१०}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^{११}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{१२}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

^{१३}पृष्ठं ?? पश्यताम्

सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं आयुष्मत्सत्सन्तानसमृद्धर्थं दीर्घसौमङ्गल्यावाप्त्यर्थं श्रीवरमहालक्ष्मी-प्रसादसिद्ध्यर्थं यथाशक्ति-ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः श्रीवरमहालक्ष्मी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय च।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।
ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशवः
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाः स्यापो

ज्योतीं॑ ऽप्यापो यजूं॑ ऽप्यापः स॒त्यमापः॑ सर्वा॑ दे॒वता॒ आपो॑ भूर्भुवः॑ सुव॒राप॑
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः॑ सुवो॑ भूर्भुवः॑ सुवो॑ भूर्भुवः॑ सुवः॑।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

पद्मासनां पद्मकरां पद्ममालाविभूषिताम्।
क्षीरसागरसंभूतां हेमवर्णसमप्रभाम्॥

क्षीरवर्गसमं वस्त्रं दधानां हरिवल्लभाम्।
भावये भक्तियोगेन कलशेऽस्मिन् मनोहरे॥

अस्मिन् कुम्भे (प्रतिमायां) श्री-वरलक्ष्मीं ध्यायामि।

बालभानुप्रतीकाशे पूर्णचन्द्रनिभानने।
सूत्रेऽस्मिन् सुस्थिरा भूत्वा प्रयच्छ बहुलान् वरान्॥

इति दोरस्थापनम्।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये विष्णुवक्षस्थलालये।
आवाहयामि देवि त्वामभीष्टफलदा भव॥

श्री-वरलक्ष्मीमावाहयामि।

अनेकरत्नखचितं क्षीरसागरसम्भवे।
स्वर्णसिंहासनं देवि स्वीकुरुष्व हरिप्रिये॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आसनं समर्पयामि।
गङ्गादिसरिदानीतं गन्धपुष्पसमन्वितम्।
पाद्यं ददामि ते देवि प्रसौद परमेश्वरि॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पाद्यं समर्पयामि।

गङ्गानदीसमानीतं सुवर्णकलशस्थितम्।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं पुत्रपौत्रफलप्रदे॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

प्रसन्नं शीतलं तोयं प्रसन्नमुखपङ्कजे।
गृहाणाचमनार्थाय गरुडध्वजवल्लभे॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आचमनं समर्पयामि।

महालक्ष्मि महादेवि मध्वाज्यदधिसंयुतम्।
मधुपर्कं गृहाणेमं मधुसूदनवल्लभे॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पयोदधिघृतैर्युक्तं शर्करामधुसंयुतम्।
पञ्चामृतं गृहाणेदं वरलक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पञ्चामृतं समर्पयामि।

हेमकुम्भस्थितं स्वच्छं गङ्गादिसरिदाहृतम्।
स्नानार्थं सलिलं देवि गृह्यतां सागरात्मजे॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः स्नानं समर्पयामि।

दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कञ्चुकं च मनोहरम्।
वरलक्ष्मि महादेवि गृहाणेदं मयाऽर्पितम्॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि।

माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ता-विद्रुमसंयुतम्।
दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नताटङ्ककेयूरहारकङ्कणभूषिते ।
भूषणानि महार्हाणि गृहाण करुणानिधे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आभरणानि समर्पयामि।

शालिजातान् चन्द्रवर्णान् स्निग्धमौक्तिकसन्निभान्।
अक्षतान् देवि गृहीष्व पङ्कजाक्षस्य वल्लभे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि।

मन्दारपारिजाताब्जैः केतक्युत्पलपाटलैः।
मल्लिकाजातिवकुलैः पुष्पैस्त्वां पूजयाम्यहम्॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. वरलक्ष्म्यै नमः — पादौ पूजयामि
२. महालक्ष्म्यै नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. इन्दिरायै नमः — जङ्घे पूजयामि
४. चण्डिकायै नमः — जानुनी पूजयामि
५. क्षीराब्धितनयायै नमः — ऊरू पूजयामि
६. पीताम्बरधारिण्यै नमः — कटिं पूजयामि
७. सागरसम्भवायै नमः — गुह्यं पूजयामि

८. नारायणप्रियायै नमः — नाभिं पूजयामि
 ९. जगत्कुक्ष्यै नमः — कुक्षिं पूजयामि
 १०. विश्वजनन्यै नमः — वक्षः पूजयामि
 ११. सुस्तन्यै नमः — स्तनौ पूजयामि
 १२. कम्बुकण्ठ्यै नमः — कण्ठं पूजयामि
 १३. सुन्दर्यै नमः — स्कन्धौ पूजयामि
 १४. पद्महस्तायै नमः — हस्तान् पूजयामि
 १५. बहुप्रदायै नमः — बाहून् पूजयामि
 १६. चन्द्रवदनायै नमः — वक्त्रं पूजयामि
 १७. चञ्चलायै नमः — चुबुकं पूजयामि
 १८. बिम्बोष्ठ्यै नमः — ओष्ठं पूजयामि
 १९. अनघायै नमः — अधरं पूजयामि
 २०. सुकपोलायै नमः — कपोलौ पूजयामि
 २१. फलप्रदायै नमः — फालम् पूजयामि
 २२. नीलालकायै नमः — अलकान् पूजयामि
 २३. शिवायै नमः — शिरः पूजयामि
 २४. सर्वमङ्गलायै नमः — सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

॥ अष्टलक्ष्मी-अर्चना ॥

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः | ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः |
| ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः | १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः |

॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ प्रकृत्यै नमः
 ॐ विकृत्यै नमः
 ॐ विद्यायै नमः
 ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः
 ॐ श्रद्धायै नमः
 ॐ विभूत्यै नमः
 ॐ सुरभ्यै नमः
 ॐ परमात्मिकायै नमः
 ॐ वाचे नमः
 ॐ पद्मालयायै नमः
 ॐ पद्मायै नमः
 ॐ शुचये नमः
 ॐ स्वाहायै नमः
 ॐ स्वधायै नमः
 ॐ सुधायै नमः
 ॐ धन्यायै नमः
 ॐ हिरण्मय्यै नमः
 ॐ लक्ष्म्यै नमः
 ॐ नित्यपुष्टायै नमः
 ॐ विभावर्यै नमः
 ॐ अदित्यै नमः
 ॐ दित्यै नमः
 ॐ दीप्तायै नमः
 ॐ वसुधायै नमः
 ॐ वसुधारिण्यै नमः
 ॐ कमलायै नमः
 ॐ कान्तायै नमः

१०

२०

ॐ क्षमायै नमः
 ॐ क्षीरोदसम्भवायै नमः
 ॐ अनुग्रहपदायै नमः
 ॐ बुद्धये नमः
 ॐ अनघायै नमः
 ॐ हरिवल्लभायै नमः
 ॐ अशोकायै नमः
 ॐ अमृतायै नमः
 ॐ दीप्तायै नमः
 ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः
 ॐ धर्मनिलयायै नमः
 ॐ करुणायै नमः
 ॐ लोकमात्रे नमः
 ॐ पद्मप्रियायै नमः
 ॐ पद्महस्तायै नमः
 ॐ पद्माक्ष्यै नमः
 ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः
 ॐ पद्मोद्भवायै नमः
 ॐ पद्ममुख्यै नमः
 ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः
 ॐ रमायै नमः
 ॐ पद्ममालाधरायै नमः
 ॐ देव्यै नमः
 ॐ पद्मिन्यै नमः
 ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः
 ॐ पुण्यगन्धायै नमः
 ॐ सुप्रसन्नायै नमः

३०

४०

५०

ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः
 ॐ प्रभायै नमः
 ॐ चन्द्रवदनायै नमः
 ॐ चन्द्रायै नमः
 ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः
 ॐ चतुर्भुजायै नमः
 ॐ चन्द्ररूपायै नमः
 ॐ इन्दिरायै नमः
 ॐ इन्दुशीतलायै नमः
 ॐ आह्लादजनन्यै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ शिवायै नमः
 ॐ शिवकर्यै नमः
 ॐ सत्यै नमः
 ॐ विमलायै नमः
 ॐ विश्वजनन्यै नमः
 ॐ तुष्ट्यै नमः
 ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
 ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः
 ॐ शान्तायै नमः
 ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः
 ॐ श्रियै नमः
 ॐ भास्कर्यै नमः
 ॐ बिल्वनिलयायै नमः
 ॐ वरारोहायै नमः
 ॐ यशस्विन्यै नमः
 ॐ वसुन्धरायै नमः

६०

७०

८०

ॐ उदाराङ्गायै नमः
 ॐ हरिण्यै नमः
 ॐ हेममालिन्यै नमः
 ॐ धनधान्यकर्यै नमः
 ॐ सिद्ध्यै नमः
 ॐ स्त्रैणसौम्यायै नमः
 ॐ शुभप्रदायै नमः
 ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः
 ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
 ॐ वसुप्रदायै नमः
 ॐ शुभायै नमः
 ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः
 ॐ समुद्रतनयायै नमः
 ॐ जयायै नमः
 ॐ मङ्गलायै देव्यै नमः
 ॐ विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः
 ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
 ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः
 ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः १००
 ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः
 ॐ देव्यै नमः
 ॐ सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः
 ॐ नवदुर्गायै नमः
 ॐ महाकाल्यै नमः
 ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः
 ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः
 ॐ भुवनेश्वर्यै नमः

९०

१००

॥इति श्री लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥उत्तराङ्गपूजा॥

धूपं ददामि ते रम्यं गुग्गुल्वगरुसंयुतम्।
गृहाण त्वं महालक्ष्मि भक्तानामिष्टदायिनि॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं सर्वाभीष्टप्रदायिनि।
दीपं गृहाण कमले देहि मे सर्वमीप्सितम्॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः अलङ्कार-दीपं सन्दर्शयामि।

नानाभक्ष्यसमायुक्तं नानाफलसमन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि नारायणकुटुम्बिनि॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

उशीरवासितं तोयं शीतलं शशिसोदरि।
पानाय गृह्यतां देवि पारावारतनूभवे॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पानीयं समर्पयामि।

पूगीफलं सकर्पूरं नागवल्लीदलानि च।
चूर्णं च चन्द्रसहजे गृह्यन्तां हरिवल्लभे॥
श्री-वरलक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं नीरजाक्षि नारायणविलासिनि ।
गृह्यतामर्पितं भक्त्या गरुडध्वजभामिनि॥
श्रीवरलक्ष्म्यै नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेमं पुरुषोत्तमवल्लभे।
 वरलक्ष्मि नमस्तुभ्यं वरान्देहि ममाखिलान्॥
 श्रीवरलक्ष्म्यै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सर्वमंगललाभाय सर्वपापनिवृत्तये।
 प्रदक्षिणं करोग्यद्य प्रसीद परमेश्वरि॥
 श्रीवरलक्ष्म्यै नमः प्रदक्षिणं समर्पयामि।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
 नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ।
 नमोऽस्तु रत्नाकरसम्भवायै
 नमोऽस्तु लक्ष्म्यै जगतां जनन्यै॥
 श्रीवरलक्ष्म्यै नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रपौत्रान् पशून् धनम्।
 शत्रुक्षयं महालक्ष्मि प्रयच्छ करुणानिधे॥
 श्रीवरलक्ष्म्यै नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।

॥ दोरग्रन्थि-पूजा ॥

कमलायै नमः — प्रथमग्रन्थिं पूजयामि।
 रमायै नमः — द्वितीयग्रन्थिं पूजयामि।
 लोकमात्रे नमः — तृतीयग्रन्थिं पूजयामि।
 विश्वजनन्यै नमः — चतुर्थग्रन्थिं पूजयामि।
 महालक्ष्म्यै नमः — पञ्चमग्रन्थिं पूजयामि।
 क्षीराब्धितनयायै नमः — षष्ठग्रन्थिं पूजयामि।
 विश्वसाक्षिण्यै नमः — सप्तमग्रन्थिं पूजयामि।

हरिवल्लभायै नमः — अष्टमग्रन्थिं पूजयामि।
चन्द्रसहोदर्यै नमः — नवमग्रन्थिं पूजयामि।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये सर्वपापप्रणाशिनि।
दोरकं प्रतिगृह्णामि सुप्रीता भव सर्वदा॥
इति दोरकं हस्तेन गृहीत्वा।

करिष्यामि व्रतं देवि त्वद्भक्ता त्वत्परायणा।
श्रियं देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे शुभे॥

नवतन्तुसमायुक्तं नवग्रन्थिसमन्वितम्।
बध्नीयां दक्षिणे हस्ते दोरकं हरिवल्लभे॥
इति दोरकं बध्नीयात्।

॥ अर्घ्यम् ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्री-वरलक्ष्मी-प्रीत्यर्थं वरलक्ष्मीपूजान्ते
क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

गोक्षीरेण युतं देवि गन्धपुष्पसमन्वितम्।
अर्घ्यं गृहाण वरदे वरलक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

॥ उपायन-दानम् ॥

इन्दिरा प्रतिगृह्णाति इन्दिरा वै ददाति च।
इन्दिरा तारयेद् द्वाभ्यां इन्दिरायै नमो नमः॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीवरमहालक्ष्मीपूजाकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
श्रीवरमहालक्ष्मीपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं

श्रीवरमहालक्ष्मीप्रीतिं कामयमानः
 मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे नमः न मम।
 अनया पूजया श्रीवरमहालक्ष्मीः प्रीयताम्।
 इति उपायनं दत्वा सुवासिनीश्च सम्पूजयेत्॥
 इति वरलक्ष्मीपूजाविधिः॥

॥ प्रार्थना ॥

दामोदरि नमस्तेऽस्तु नमस्त्रैलोक्यमातृके।
 नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वरि॥
 सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानायापि च भुक्तये।
 धनधान्यं धरां हर्षं कीर्तिम् आयुश्च देहि मे॥
 यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु।
 न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटं मे निवारय॥

॥ कनकधारास्तवम् ॥

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
 भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
 अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
 माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः॥१॥
 मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
 प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
 माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
 सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः॥२॥
 आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम्
 आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतत्रम् ।
 आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रम्
 भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः॥३॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
 हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
 कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
 कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ४ ॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेः
 धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
 मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
 भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ५ ॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
 माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
 मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धम्
 मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ ६ ॥

विश्वामरेन्द्रपदवीभ्रमदानदक्षम्
 आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
 ईषन्निषीदतु मायि क्षणमीक्षणार्द्धम्
 इन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ७ ॥

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-
 दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
 दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टाम्
 पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥ ८ ॥

दद्यादयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्
 अस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
 दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरम्
 नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥ ९ ॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
 शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
 सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
 तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
 रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
 शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
 पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै॥११॥

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
 नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै।
 नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
 नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै॥१२॥

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
 नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै।
 नमोऽस्तु देवादिदयापरायै
 नमोऽस्तु शार्ङ्गयुधवल्लभायै॥१३॥

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
 नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै।
 नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
 नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै॥१४॥

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
 नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै।
 नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
 नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै॥१५॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
 साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
 त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
 मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये॥१६॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
 सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
 सन्तनोति वचनाङ्गमानसैः
 त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥१७॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
 धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
 भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
 त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥१८॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-
 स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्लुताङ्गीम्।
 प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
 लोकाधिनाथगृहिणीम् अमृताब्धिपुत्रीम्॥१९॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
 करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः ।
 अवलोकय मामकिञ्चनानां
 प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः॥२०॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहम्
 त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
 गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
 भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः॥२१॥

देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः
 कल्याणगात्रि कमलेक्षणजीवनाथे।
 दारिद्र्यभीतिहृदयं शरणागतं माम्
 आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गैः॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-
 शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-कनकधारास्तवं सम्पूर्णम्॥

॥ महालक्ष्म्यष्टकम् ॥

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
 शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥१॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥२॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥३॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥४॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥५॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥६॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥७॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥८॥

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा॥

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा॥

॥इति श्रीमद्ब्रह्मपुराणे श्री-महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ अपराध-क्षमापनम् ॥

न्यूनं वाऽप्यगुणं वाऽपि यन्मया मोहितं कृतम्।
सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

लक्ष्मि त्वत्कृपया नित्यं कृता पूजा तवाऽऽज्ञया।
स्थिरा भव गृहे ह्यस्मिन् मम सन्तानकर्मणि॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ कथा ॥

सूत उवाच

कैलासशिखरे रम्ये सर्वदेवनिषेविते।
गौर्या सह महादेवो दीव्यन्नक्षैवनोदतः॥१॥

जितोऽसि त्वं मया चाऽऽह पार्वती परमेश्वरम्।
सोऽपि त्वं च जितेत्याह सुविवादस्तयोरभूत्॥२॥

चित्रनेमिस्तदा पृष्टो मृषावादमभाषत।
तदा कोपसमाविष्टा गौरी शापं ददौ ततः॥३॥

कुष्ठी भव मृषावादिन् चित्रनेमिर्हतप्रभः।
नानृतेन समं पापं क्वापि दृष्टं श्रुतं मया॥४॥

चित्रनेमिर्महाप्राज्ञः सत्यं वदति नो मृषा।
प्रसादः क्रियतां देवि देवीमाह वृषध्वजः॥५॥

प्रसादसुमुखी तस्मै विशापं च जगाद सा।
यदा सरोवरे रम्ये करिष्यन्ति शुचिव्रतम्॥६॥

ततः स्वर्गणिकाः सर्वं यक्ष्यन्ति त्वां समाहिताः।
तदा तव विशापः स्यादित्युक्तः स पपात ह॥७॥

ततः कतिपयाहोभिश्चित्रनेमिः सरोवरे।
कुष्ठी भूत्वा वसंस्तत्र ददर्श स्वर्विलासिनीः॥८॥

देवतापूजनासक्ताः पप्रच्छ प्रणिपत्यताः।
किमेतद्भो महाभागाः किं पूजा किं च वाञ्छितम्॥९॥

किं मया च ह्यनुष्ठेयमिहामुत्र फलप्रदम्।
इति व्रतं चित्रनेमिः पप्रच्छ स्वर्विलासिनीः॥१०॥

येनाहे गिरिजाशापान्मोक्ष्यामि चिरदुःखतः।
ता ऊचुः क्रियतामद्य त्वया चैतदनुत्तमम्॥११॥

वरलक्ष्मीव्रतं दिव्यं सर्वकामसमृद्धिदम्।
यदा रवौ कुलीरस्थे मासे च श्रावणे तथा॥१२॥

गङ्गायमुनयोर्योगे तुङ्गभद्रासरित्तटे।
तस्मिन्वै श्रावणे मासि शुक्लपक्षे भृगोर्दिने॥१३॥

प्रारब्धव्यं व्रतं तत्र महालक्ष्म्या यतात्मभिः।
सुवर्णप्रतिमां कुर्याच्चतुर्भुजसमन्विताम्॥१४॥

पूर्वं गृहमलङ्कृत्य तोरणै रङ्गवल्लिभिः।
गृहस्य पूर्वदिग्भागे ईशान्यां च विशेषतः॥१५॥

प्रस्थमितांस्तण्डुलांश्च भूमौ निक्षिप्य पद्मके।
संस्थाप्य कलशं तत्र तीर्थतोयैः प्रपूरयेत्॥१६॥

फलानि च विनिक्षिप्य सुवर्णं प्रक्षिपेत्ततः।
पल्लवांश्च विनिक्षिप्य वस्त्रेणाच्छाद्य यत्नतः॥१७॥

प्रतिमां स्थापयेत्तत्र पूजयेच्च यथाविधि।
अग्न्युत्तारणपूर्वं तु शुद्धस्नानं यथाक्रमम्॥१८॥

पश्चामृतेन स्नपनं कारयेन्मन्त्रतः सुधीः।
अभिषेकं ततः कृत्वा देवीसूक्तेन वै ततः॥१९॥

अष्टगन्धैः समभ्यर्च्य पल्लवैश्च समर्चयेत्।
अश्वत्थवटबिल्वाम्रमालतीदाडिमास्तथा॥२०॥

एतेषां पत्राण्यादाय एकविंशतिसंख्यया।
नामाविधैस्तथा पुष्पैर्मालत्यादिसमुद्भवैः॥२१॥

धूपदीपैर्महालक्ष्मीं पूजयेत् सर्वकामदाम्।
पायसैर्भक्ष्यभोज्यैश्च नानाव्यञ्जनसंयुतैः॥२२॥

एकविंशतिसङ्ख्याकैरूपैः पूजयेच्छिवाम्।
निवेद्य सर्वदेव्यै तु वरं स वृणुयात्ततः॥२३॥

नृत्यगीतादिसहितो देवीं सम्प्रार्थयेच्छ्रियम्।
रमां सरस्वतीं ध्यायेच्छचीं च प्रियवादिनीम्॥२४॥

एवं व्रतविधिं तस्मै कथयित्वा विधानतः।
पञ्चवायनकान् दत्त्वा कथां शृण्वीत यत्नतः॥२५॥

तथा मौनं गृहीत्वा तु पश्चार्तिकेन पूजयेत्।
व्रतं च कुर्वता गृह्य एकं पूगफलं तथा॥२६॥

पर्णेकं चूर्णरहितं चर्वणीयं प्रयत्नतः।
चैलखण्डे दृढं बद्ध्वा प्रातः पश्येद्विचक्षणः॥२७॥

आरक्तं यदि जायेत कुर्याद्व्रतमनुत्तमम्।
नोचेन्न तद्व्रतं कार्यं सर्वथा भूतिमिच्छता॥२८॥

अनेनैव विधानेन व्रतं गृहीत यत्नतः।
अप्सरोभिः कृतं सम्यग्व्रतं सर्वसमृद्धिदम्॥२९॥

पूजावसानपर्यन्तं चित्रनेमिरलोकयत्।
धूपधूमं समाघ्राय घृतदीपप्रभावतः॥३०॥

गतकुष्ठः स्वर्णतेजाः शुचिस्तद्गतमानसः।
अहं यत्नात् करिष्यामि व्रतं सर्वसमृद्धिदम्॥३१॥

इत्युक्त्वा सर्वदेवीस्तु कारयामास तत्क्षणात्।
सुवर्णनिर्मितां देवीं वस्त्रालङ्कारसंयुताम्॥३२॥

पूर्वोक्तेन विधानेन पूजां कृत्वा प्रयत्नतः।
ततो वैणवपात्राणि फलान्नैश्च सदक्षिणैः॥३३॥

एकविंशतिपक्वान्नैः पूरितानि विधाय च।
पञ्चवायनकान्येवं कृत्वादातु यथाक्रमम्॥३४॥

विप्राय चाथ यतये देव्यै तु ब्रह्मचारिणे।
सुवासिन्यै ततस्त्वेकमर्पितं चित्रनेमिना॥३५॥

एवं सम्यक् क्रमेणैतद्वत्त्वा वायनपञ्चकम्।
ततो गृहं गतः सोऽथ देवीं नत्वा यथाक्रमम्॥३६॥

नागवल्लीदलं त्वेकं क्रमुकं चूर्णवजितम्।
भक्षययित्वा तु चैलान्ते बद्ध्वा प्रातर्निरैक्षत॥३७॥

आरक्ते च ततो जाते व्रतं चक्रे स भक्तितः।
अद्याहं गतपापोऽस्मि देवीदर्शनयोगतः॥३८॥

एतत्सम्यग्व्रतं चीर्णं भक्तिभावेन यन्मया।
चित्रनेमिव्रतं कृत्वा कैलासं शङ्करालयम्॥३९॥

गत्वा प्रणम्य देवेशं देवीमादरपूर्वकम्।
पार्वती च तदा प्राह चित्रनेमे स्वपुत्रवत्॥४०॥

पालनीयो मया त्वं च सत्यमित्यवधार्यताम्।
चित्रनेमिस्तदा प्राहः पार्वतीं हरवल्लभे॥४१॥

तव पादाम्बुजं दृष्टं वरलक्ष्मीप्रसादतः।
महादेवस्ततः प्राह चित्रनेमिं शुचिव्रतम्॥४२॥

अद्यप्रभृति कैलासे भुङ्क्ते भोगान् यथेप्सितान्।
पश्चाद्गन्तासि वैकुण्ठं वरस्यास्य प्रसादतः॥४३॥

पार्वत्यापि कृतं पूर्वं पुत्रलाभार्थमेव च।
लब्धश्च षण्मुखो देव्या व्रतराजप्रसादतः॥४४॥

नन्दश्च विक्रमादित्यो राज्यं प्राप्तौ महाव्रतौ।
नन्दश्च कान्तया हीनः कान्तां लेभे सुलक्षणाम्॥४५॥

तयाचतद्व्रतं कृत्स्नं कृतं वै पुत्रहेतवे।
पुत्रं प्रसुषुवे सा च त्रैलोक्यभरणक्षमम्॥४६॥

इह भुक्त्वा तु विपुलान्भोगान्वै सुमनोहरान्।
तदाप्रभृति लोकेऽस्मिन् वरलक्ष्मी व्रतं शुभम्॥४७॥

व्रतं करोति या नारी नरो वापि शुचिव्रतः।
भुक्त्वा भोगांश्च विपुलानन्ते शिवपुरं व्रजेत्॥४८॥

इत्याख्यातं मया विप्रा वरलक्ष्मीव्रतं शुभम्।
य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः॥४९॥

धनं धान्यमवाप्नोति वरलक्ष्मीप्रसादतः॥५०॥

॥इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे श्रावणशुक्रवारे वरलक्ष्मीव्रतं सम्पूर्णम्॥

॥ श्री-सिद्धिविनायक-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिविनायक-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
()^{१४} नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (कटक/सिंह)-श्रावण-मासे
शुक्लपक्षे () शुभतिथौ भृगुवासरयुक्तायाम् ()^{१५} नक्षत्र ()^{१६} नाम योग
()^{१७} करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् ()
शुभतिथौ अस्माकं सकुटुम्बायाः क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
वृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं
श्री-सिद्धिविनायक-प्रसादसिद्ध्यर्थं यथाशक्ति-ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः
श्री-सिद्धिविनायक-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय
च।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

^{१४}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^{१५}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{१६}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

^{१७}पृष्ठं ?? पश्यताम्

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।
ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ प्राण-प्रतिष्ठा ॥

असुनीते पुनरिति ऋचं पठित्वा गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कार सिद्धयर्थं
पञ्चदशप्रणवावृत्तीः करिष्ये इति सङ्कल्प्य पञ्चदशवारं प्रणवमावर्त्य
तच्चक्षुर्देवहितम् इति मन्त्रेण देवस्याज्येन नेत्रोन्मीलनं कृत्वा पञ्चोपचारैः
पूजनं कुर्यात्। आसनविधिं कृत्वा पुरुषसूक्त-न्यासान् विधाय पूजनमारभेत्॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

करिष्ये गणनाथस्य व्रतं सम्पत्करं शुभम्।
भक्तानामिष्टवरदं सर्वमंगल-कारणम्॥

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्॥

ध्यायेद् देवं महाकायं तप्तकाञ्चनसन्निभम्।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम्॥

दन्ताक्षमाला-परशु-पूर्णमोदक-हस्तकम् ।
मोदकासक्त-शुण्डाग्रम् एकदन्तं विनायकम्॥

अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकं ध्यायामि।

आवाहयामि विघ्नेश सुरराजार्चितेश्वर।
अनाथनाथ सर्वज्ञ पूजार्थं गणनायक॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकम् आवाहयामि।

विचित्ररत्नरचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृहाण सुरपूजित॥

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदत्रैनातिरोहति॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः आसनं समर्पयामि।

सर्वतीर्थसमानीतं पाद्यं गन्धादिसंयुतम्।
विघ्नराज गृहाणेनदं भगवन् भक्तवत्सल॥
एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्।
गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणानिधे॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः।
ततो विश्वद्व्यक्रामत्। साशानानशने अभि॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गाहृतेन तोयेन शीघ्रमाचमनं कुरु॥
तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।

दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्।
गृहाण सर्वलोकेश गणनाथ नमोऽस्तु ते॥

यत्पुरुषेण हविषा॥ देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्॥ ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम्।
पश्चामृतं गृहाणेदं स्नानाय गणनायक॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः पश्चामृतस्नानम् समर्पयामि।

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।
भक्त्या समर्पितं तुभ्यं स्नानायाभीष्टदायक॥

सप्तास्याऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

रक्तवस्त्रयुगं देव दिव्यं काञ्चनसम्भवम्।
सर्वप्रदं गृहाणेदं लम्बोदर हरात्मज॥

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयेजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः वस्त्रं समर्पयामि।

राजतं ब्रह्मसूत्रं च काञ्चनं चोत्तरीयकम्।
गृहाण चारु सर्वज्ञ भक्तानां वरदो भव॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उद्यद्भास्करसङ्काशं सन्ध्यावदरुणं प्रभो।
वीरालङ्करणं दिव्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

नानाविधानि दिव्यानि नानारत्नोज्ज्वलानि च।
भूषणानि गृहाणेश पार्वतीप्रियनन्दन॥
आभरणानि समर्पयामि।

कस्तूरीरोचनाचन्द्रकुङ्कुमैश्च समन्वितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतैः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

रक्ताक्षतांश्च देवेश गृहाण द्विरदानन। ललाटपटले चन्द्रस्तस्योपरि
विधार्यताम्॥ अक्षतान् समर्पयामि।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि मे प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

करवीरैर्जातिकुसुमैश्चम्पकैर्बकुलैः शुभैः।
शतपत्रैश्च कह्लारैरर्चयेद् गणनायकम्॥

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादंतः।
गार्वो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

| | | |
|-----|----------------|------------------------|
| १. | पार्वतीनन्दनाय | नमः — पादौ पूजयामि |
| २. | गणेशाय | नमः — गुल्फौ पूजयामि |
| ३. | जगद्धात्रे | नमः — जङ्घे पूजयामि |
| ४. | जगद्वल्लभाय | नमः — जानुनी पूजयामि |
| ५. | उमापुत्राय | नमः — ऊरू पूजयामि |
| ६. | विकटाय | नमः — कटिं पूजयामि |
| ७. | गुहाग्रजाय | नमः — गुह्यं पूजयामि |
| ८. | महत्तमाय | नमः — मेढ्रं पूजयामि |
| ९. | नाथाय | नमः — नाभिं पूजयामि |
| १०. | उत्तमाय | नमः — उदरं पूजयामि |
| ११. | विनायकाय | नमः — वक्षः पूजयामि |
| १२. | पाशच्छिदे | नमः — पार्श्वौ पूजयामि |
| १३. | हेरम्बाय | नमः — हृदयं पूजयामि |
| १४. | कपिलाय | नमः — कण्ठं पूजयामि |
| १५. | स्कन्दाग्रजाय | नमः — स्कन्धौ पूजयामि |
| १६. | हरसुताय | नमः — हस्तान् पूजयामि |
| १७. | ब्रह्मचारिणे | नमः — बाहून् पूजयामि |
| १८. | सुमुखाय | नमः — मुखं पूजयामि |
| १९. | एकदन्ताय | नमः — दन्तौ पूजयामि |
| २०. | विघ्नेत्रे | नमः — नेत्रे पूजयामि |
| २१. | शूर्पकर्णाय | नमः — कर्णौ पूजयामि |
| २२. | फालचन्द्राय | नमः — फालं पूजयामि |
| २३. | नागाभरणाय | नमः — नासिकां पूजयामि |
| २४. | चिरन्तनाय | नमः — चुबुकं पूजयामि |

२५. स्थूलौष्ठाय नमः — ओष्ठौ पूजयामि
 २६. गलन्मदाय नमः — गण्डौ पूजयामि
 २७. कपिलाय नमः — कचान् पूजयामि
 २८. शिवप्रियाय नमः — शिरः पूजयामि
 २९. सर्वमङ्गलासुताय नमः — सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

॥ एकविंशति-पत्र-पूजा ॥

१. सुमुखाय नमः — मालती -पत्रं समर्पयामि
 २. उमापुत्राय नमः — माची -पत्रं समर्पयामि
 ३. हेरम्बाय नमः — बृहती -पत्रं समर्पयामि
 ४. लम्बोदराय नमः — बिल्व -पत्रं समर्पयामि
 ५. द्विरदाननाय नमः — दूर्वा -पत्रं समर्पयामि
 ६. धूमकेतवे नमः — दुर्धूर -पत्रं समर्पयामि
 ७. बृहते नमः — बदरी -पत्रं समर्पयामि
 ८. अपवर्गदाय नमः — अपामार्ग -पत्रं समर्पयामि
 ९. द्वैमातुराय नमः — तुलसी -पत्रं समर्पयामि
 १०. चिरन्तनाय नमः — चूत -पत्रं समर्पयामि
 ११. कपिलाय नमः — करवीर -पत्रं समर्पयामि
 १२. विष्णुस्तुताय नमः — विष्णुक्रान्त-पत्रं समर्पयामि
 १३. अमलाय नमः — आमलकी -पत्रं समर्पयामि
 १४. महते नमः — मरुवक -पत्रं समर्पयामि
 १५. सिन्धूराय नमः — सिन्धूर -पत्रं समर्पयामि
 १६. गजाननाय नमः — जाती -पत्रं समर्पयामि
 १७. गण्डगलन्मदाय नमः — गण्डली -पत्रं समर्पयामि
 १८. शङ्करीप्रियाय नमः — शमी -पत्रं समर्पयामि

१९. भृङ्गराजत्कटाय नमः — भृङ्गराज -पत्रं समर्पयामि
 २०. अर्जुनदन्ताय नमः — अर्जुन -पत्रं समर्पयामि
 २१. अर्कप्रभाय नमः — अर्क -पत्रं समर्पयामि

॥ एकविंशति-पुष्प-पूजा ॥

१. पञ्चास्य -गणपतये नमः — पुन्नाग -पुष्पं समर्पयामि
 २. महा -गणपतये नमः — मन्दार -पुष्पं समर्पयामि
 ३. धीर -गणपतये नमः — दाडिमी -पुष्पं समर्पयामि
 ४. विष्वक्सेन-गणपतये नमः — वकुल -पुष्पं समर्पयामि
 ५. आमोद -गणपतये नमः — अमृणाल -पुष्पं समर्पयामि
 ६. प्रमथ -गणपतये नमः — पाटली -पुष्पं समर्पयामि
 ७. रुद्र -गणपतये नमः — द्रोण -पुष्पं समर्पयामि
 ८. विद्या -गणपतये नमः — दुर्धूर -पुष्पं समर्पयामि
 ९. विघ्न -गणपतये नमः — चम्पक -पुष्पं समर्पयामि
 १०. दुरित -गणपतये नमः — रसाल -पुष्पं समर्पयामि
 ११. कामितार्थ -गणपतये नमः — केतकी -पुष्पं समर्पयामि
 १२. सम्मोह -गणपतये नमः — माधवी -पुष्पं समर्पयामि
 १३. विष्णु -गणपतये नमः — श्यामक -पुष्पं समर्पयामि
 १४. ईश -गणपतये नमः — अर्क -पुष्पं समर्पयामि
 १५. गजास्य -गणपतये नमः — कह्लार -पुष्पं समर्पयामि
 १६. सर्वसिद्धि -गणपतये नमः — सेवन्तिका -पुष्पं समर्पयामि
 १७. वीर -गणपतये नमः — बिल्व -पुष्पं समर्पयामि
 १८. कन्दर्प -गणपतये नमः — करवीर -पुष्पं समर्पयामि
 १९. उच्छिष्ट -गणपतये नमः — कुन्द -पुष्पं समर्पयामि
 २०. ब्रह्म -गणपतये नमः — पारिजात -पुष्पं समर्पयामि

२१. ज्ञान -गणपतये नमः — जाती -पुष्पं समर्पयामि

॥ एकविंशति-दूर्वायुग्म-पूजा ॥

| | | |
|-----|-------------------|-------------------------------|
| १. | गणाधिपाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| २. | पाशाङ्कुशधराय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ३. | आखुवाहनाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ४. | विनायकाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ५. | ईशपुत्राय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ६. | सर्वसिद्धि-प्रदाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ७. | एकदन्ताय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ८. | इभवक्राय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ९. | मूषिकवाहनाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १०. | कुमारगुरवे | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ११. | कपिलवर्णाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १२. | ब्रह्मचारिणे | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १३. | मोदकहस्ताय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १४. | सुरश्रेष्ठाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १५. | गजनासिकाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १६. | कपित्थफल-प्रियाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १७. | गजमुखाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १८. | सुप्रसन्नाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १९. | सुराग्रजाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| २०. | उमापुत्राय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| २१. | स्कन्दप्रियाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |

॥ गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ गणेश्वराय नमः
 ॐ गणक्रीडाय नमः
 ॐ महागणपतये नमः
 ॐ विश्वकर्त्रे नमः
 ॐ विश्वमुखाय नमः
 ॐ दुर्जयाय नमः
 ॐ धूर्जयाय नमः
 ॐ जयाय नमः
 ॐ सुरूपाय नमः
 ॐ सर्वनेत्राधिवासाय नमः १०
 ॐ वीरासनाश्रयाय नमः
 ॐ योगाधिपाय नमः
 ॐ तारकस्थाय नमः
 ॐ पुरुषाय नमः
 ॐ गजकर्णकाय नमः
 ॐ चित्राङ्गाय नमः
 ॐ श्यामदशनाय नमः
 ॐ भालचन्द्राय नमः
 ॐ चतुर्भुजाय नमः
 ॐ शम्भुतेजसे नमः २०
 ॐ यज्ञकायाय नमः
 ॐ सर्वात्मने नमः
 ॐ सामबृंहिताय नमः
 ॐ कुलाचलांसाय नमः
 ॐ व्योमनाभये नमः
 ॐ कल्पद्रुमवनालयाय नमः
 ॐ निम्ननाभये नमः

ॐ स्थूलकुक्षये नमः
 ॐ पीनवक्षसे नमः
 ॐ बृहद्भुजाय नमः ३०
 ॐ पीनस्कन्धाय नमः
 ॐ कम्बुकण्ठाय नमः
 ॐ लम्बोष्ठाय नमः
 ॐ लम्बनासिकाय नमः
 ॐ सर्वावयवसम्पूर्णाय नमः
 ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय नमः
 ॐ इक्षुचापधराय नमः
 ॐ शूलिने नमः
 ॐ कान्तिकन्दलिताश्रयाय नमः
 ॐ अक्षमालाधराय नमः ४०
 ॐ ज्ञानमुद्रावते नमः
 ॐ विजयावहाय नमः
 ॐ कामिनी-कामना-काम-मालिनी-
 केलि-लालिताय नमः
 ॐ अमोघसिद्धये नमः
 ॐ आधाराय नमः
 ॐ आधाराधेयवर्जिताय नमः
 ॐ इन्दीवरदलश्यामाय नमः
 ॐ इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः
 ॐ कर्मसाक्षिणे नमः
 ॐ कर्मकर्त्रे नमः ५०
 ॐ कर्माकर्मफलप्रदाय नमः
 ॐ कमण्डलुधराय नमः
 ॐ कल्पाय नमः

ॐ कपर्दिने नमः
 ॐ कटिसूत्रभृते नमः
 ॐ कारुण्यदेहाय नमः
 ॐ कपिलाय नमः
 ॐ गुह्यागमनिरूपिताय नमः
 ॐ गुहाशयाय नमः
 ॐ गुहाब्धिस्थाय नमः
 ॐ घटकुम्भाय नमः
 ॐ घटोदराय नमः
 ॐ पूर्णानन्दाय नमः
 ॐ परानन्दाय नमः
 ॐ धनदाय नमः
 ॐ धरणीधराय नमः
 ॐ बृहत्तमाय नमः
 ॐ ब्रह्मपराय नमः
 ॐ ब्रह्मण्याय नमः
 ॐ ब्रह्मवित्प्रियाय नमः
 ॐ भव्याय नमः
 ॐ भूतालयाय नमः
 ॐ भोगदात्रे नमः
 ॐ महामनसे नमः
 ॐ वरेण्याय नमः
 ॐ वामदेवाय नमः
 ॐ वन्द्याय नमः
 ॐ वज्रनिवारणाय नमः
 ॐ विश्वकर्त्रे नमः
 ॐ विश्वचक्षुषे नमः
 ॐ हवनाय नमः

६०

७०

८०

ॐ हव्यकव्यभुजे नमः
 ॐ स्वतन्त्राय नमः
 ॐ सत्यसङ्कल्पाय नमः
 ॐ सौभाग्यवर्धनाय नमः
 ॐ कीर्तिदाय नमः
 ॐ शोकहारिणे नमः
 ॐ त्रिवर्गफलदायकाय नमः
 ॐ चतुर्बाहवे नमः
 ॐ चतुर्दन्ताय नमः
 ॐ चतुर्थी-तिथि-सम्भवाय नमः
 ॐ सहस्रशीर्ष्णे पुरुषाय नमः
 ॐ सहस्राक्षाय नमः
 ॐ सहस्रपदे नमः
 ॐ कामरूपाय नमः
 ॐ कामगतये नमः
 ॐ द्विरदाय नमः
 ॐ द्वीपरक्षकाय नमः
 ॐ क्षेत्राधिपाय नमः
 ॐ क्षमाभर्त्रे नमः
 ॐ लयस्थाय नमः
 ॐ लङ्कप्रियाय नमः
 ॐ प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः
 ॐ दुष्टचित्तप्रसादनाय नमः
 ॐ भगवते नमः
 ॐ भक्तिसुलभाय नमः
 ॐ याज्ञिकाय नमः
 ॐ याजकप्रियाय नमः

९०

१००

॥इति श्री गणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्री गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलिः
सम्पूर्णा॥

दशाङ्गं गुग्गुलुं धूपं सुगन्धं च मनोहरम्।
गृहाण सर्वदेवेश उमापुत्र नमोऽस्तु ते॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

सर्वज्ञ सर्वलोकेश त्रैलोक्यतिमिरापह।
गृहाण मङ्गलं दीपं रुद्रप्रिय नमोऽस्तु ते॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

पशूँश्च मह्यमावह जीवं च दिशो दिश॥

मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।

अबिभ्रदग्नि आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। दीपानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

नानाखाद्यमयं दिव्यं नैवेद्यं ते निवेदितम्।
मया भक्त्या शिवापुत्र गृहाण गणनायक॥

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः () निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरपरिवासितम् ।
प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण गणनायक॥

मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं मुखप्रक्षालनं च समर्पयामि।

मलयाचलसम्भूतं कर्पूरेण समन्वितम्।
करोद्वर्तनकं चारु गृह्यतां जगतः पते॥
करोद्वर्तनम् समर्पयामि।

बीजपुराम्रपनसखजूरीकदलीफलम् ।
नारिकेलफलं दिव्यं गृहाण गणनायक॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेन्नन्मनि जन्मनि॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः फलं समर्पयामि।

एकविंशतिसङ्ख्याकान् मोदकान् घृतपाचितान्।
नैवेद्यं सफलं दद्यान्नमस्ते विघ्ननाशिने॥
गणेशाय मोदकान् समर्पयामि।

पूगीफलं महदिव्यं नागवल्ल्या दलैर्युतम्।
कर्पूरैलासमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥
चकर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः भूषणानि समर्पयामि।

दूर्वायुग्मं गृहीत्वा तु गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्।
पूजयेत्सिद्धिविघ्नेशं प्रत्येकं पूर्वनामभिः॥

गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन।
एकदन्तेभवक्रेति तथा मूषकवाहन॥

विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक।
कुमारगुरवे नित्यं पूजनीयः प्रयत्नतः॥

इति दूर्वार्पणम्॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु
लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः॥

विघ्नेश्वर विशालाक्ष सर्वाभीष्टफलप्रद।
प्रदक्षिणं करोमि त्वां सर्वान्कामान् प्रयच्छ मे॥

नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाः अकल्पयन्॥

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वतेजांसि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।
सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं
दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि। पुष्पैः
पूजयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।
तमेवं विद्वान्मृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
 य एव वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
 ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोन्मः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
 त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९
 रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।
 त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
 तस्य प्रकृतिंलीनस्य यः परः स महेश्वरः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

नमस्ते विघ्नसंहत्रे नमस्ते ईप्सितप्रद।
 नमस्ते देवदेवेश नमस्ते गणनायक॥

विनायकेशपुत्रस्त्वं गजराज सुरोत्तम।
 देहि मे सकलान् कामान् वन्दे सिद्धिविनायक॥

सप्तास्याऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः देवा यद्यज्ञं तन्वानाः।
 अबध्नन् पुरुषं पशुम्

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
 ते ह नाकं महिमानं सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥

छत्रचामर-नृत्त-गीत-वाद्यादि समस्तराजोपचारान् समर्पयामि॥

यन्मयाऽऽचरितं देव व्रतमेतत् सुदुर्लभम्।
गणेश त्वं प्रसन्नः सन् सफलं कुरु सर्वदा॥

विनायक गणेशान सर्वदेवनमस्कृत।
पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नान्निवारय॥
नमो नमो गणेशाय नमस्ते विश्वरूपिणे।
निर्विघ्नं कुरु मे कामं नमामि त्वां गजानन॥

अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्।
अनेकदं तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे॥

विनायक वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

॥ अर्घ्यम् ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्री-सिद्धिविनायक-प्रीत्यर्थं
श्री-सिद्धिविनायक-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

(हस्ते साक्षतपुष्पं क्षीरं गृहीत्वा)

अर्घ्यं गृहाण हेरम्ब वरप्रद विनायक।
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं भक्त्या दत्तं मया प्रभो॥१॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

नमस्ते भिन्नदन्ताय नमस्ते हरसूनवे।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गणनायक॥२॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

नमस्तुभ्यं गणेशाय नमस्ते विघ्ननायक।
पुनरर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गणनायक॥३॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

॥ उपायन-दानम् ॥

आचार्य पूजा

अद्यपूर्वोक्त-एवङ्गुण-विशेषण-विशिष्टायामस्यां चतुर्थ्यां शुभतिथौ
श्री-सिद्धिविनायक-पूजा-फलसिद्ध्यर्थं ब्राह्मणपूजाम् उपायन-दानं च
करिष्ये॥ श्री-महागणपति-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम्।

गन्धादि-सकलाराधनैः स्वर्चितम्॥

[अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान् घृतपाचितान्।
स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनन्दन॥

दश विप्राय दातव्याः स्थापयेद् दश आत्मनि।
एकं गणाधिपे दद्यात् सघृतं मोदकं शुभम्॥

वायनमन्त्रः

दशानां मोदकानां च फलदक्षिणया युतम्।
विप्राय फलसिद्ध्यर्थं वायनं प्रददाम्यहम्॥

प्रतिमा-दान-मन्त्रः

विनायकस्य प्रतिमां वस्त्रयुग्मेन वेष्टिताम्।
तुभ्यं संप्रददे विप्र प्रीयतां मे गजाननः॥

गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च।
गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-विनायक-चतुर्थी-पुण्यकाले अस्मिन् मया
क्रियमाण-श्री-सिद्धिविनायक-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं
हिरण्यं श्री-सिद्धिविनायक-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय
सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्।

॥ प्रार्थना ॥

॥ महागणेशपञ्चरत्नम् ॥

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकम्
 कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम्।
 अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम्
 नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्॥१॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरम्
 नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्।
 सुरेश्वरं निधेश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरम्
 महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम्॥२॥

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरम्
 दरेतरोदरं वरं वरेभवक्रमक्षरम्।
 कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करम्
 मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम्॥३॥

अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनम्
 पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्।
 प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणम्
 कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम्॥४॥

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजम्
 अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् ।
 हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनाम्
 तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम्॥५॥

महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहम्
 प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्।
 अरोगतामदोषतां सुसाहितां सुपुत्रताम्
 समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-महागणेशपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ गणेशभुजङ्गम् ॥

रणत् क्षुद्रघण्टानिनादाभिरामम्
चलत् ताण्डवोद्वण्डवत्पद्मतालम्।
लसत् तुन्दिलाङ्गोपरिव्यालहारम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥१॥

ध्वनिध्वंसवीणालयोल्लासिवक्रम्
स्फुरच्छुण्डदण्डोल्लसद्बीजपूरम्।
गलदर्पसौगन्ध्यलोलालिमालम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥२॥

प्रकाशञ्जपारक्तरन्तप्रसून-
प्रवालप्रभातारुणज्योतिरेकम्।
प्रलम्बोदरं वक्रतुण्डैकदन्तम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥३॥

विचित्रस्फुरद्रत्नमालाकिरीटम्
किरीटोल्लसच्चन्द्ररेखाविभूषम्।
विभूषैकभूषं भवध्वंसहेतुम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥४॥

उदञ्चद्भुजावल्लरीदृश्यमूलोच्-
चलद्-भ्रूलता-विभ्रमभ्राजदक्षम्।
मरुत् सुन्दरीचामरैः सेव्यमानम्
गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥५॥

स्फुरन्निष्ठुरालोलपिङ्गाक्षितारम्
 कृपाकोमलोदारलीलावतारम्।
 कलाबिन्दुगं गीयते योगिवर्यैर्-
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥६॥

यमेकाक्षरं निर्मलं निर्विकल्पम्
 गुणातीतमानन्दमाकारशून्यम्।
 परं पारमोङ्कारमाम्नायगर्भम्
 वदन्ति प्रगल्भं पुराणं तमीडे॥७॥

चिदानन्दसान्द्राय शान्ताय तुभ्यम्
 नमो विश्वकर्त्रे च हर्त्रे च तुभ्यम्।
 नमोऽनन्तलीलाय कैवल्यभासे
 नमो विश्वबीज प्रसीदेशसूनो॥८॥

इमं सुस्तवं प्रातरुत्थाय भक्त्या
 पठेद्यस्तु मर्त्यो लभेत्सर्वकामान्।
 गणेशप्रसादेन सिद्ध्यन्ति वाचो
 गणेशे विभौ दुर्लभं किं प्रसन्ने॥९॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-गणेशभुजङ्गं सम्पूर्णम्॥

॥ अपराध-क्षमापनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजाक्रियादिषु।
 न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे गजाननम्॥
 अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ कथा ॥

शौनकाद्या ऋषिगणा नैमिषारण्यवासिनः।
 सूतं पौराणिकं श्रेष्ठमिदमूचुर्वचस्तदा॥१॥

ऋषय ऊचुः

निर्विघ्ने तु कार्याणि कथं सिध्यन्ति सूतज।
 अर्थसिद्धिः कथं नृणां पुत्रसौभाग्यसम्पदः॥२॥

दम्पत्योः कलहे चैव बन्धुभेदे तथा नृणाम्।
 उदासीनेषु लोकेषु कथं सुमुखता भवेत्॥३॥

विद्यारम्भे तथा नृणां वाणिज्ये च कृषौ तथा।
 नृपतेः परचक्रं च जयसिद्धिः कथं भवेत्॥४॥

कां देवतां नमस्कृत्य कार्यसिद्धिर्भवेन्नृणाम्।
 एतत् समस्तं विस्तार्य ब्रूहि मे सूत पृच्छतः॥५॥

सूत उवाच

सन्नद्धयोः पुरा विप्राः कुरुपाण्डवसेनयोः।
 पृष्टवान् देवकीपुत्रं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः॥६॥

युधिष्ठिर उवाच

निर्विघ्नेन जयं मह्यं वद त्वां देवकीसूत।
 कां देवतां नमस्कृत्य सम्यग्राज्यं लभेमहि॥७॥

कृष्ण उवाच

पूजयस्व गणाध्यक्षमुमा-मल-समुद्रवम्।
तस्मिन् सम्पूजिते देवे ध्रुवं राज्यमवाप्स्यसि॥८॥

युधिष्ठिर उवाच

देव केन विधानेन पूजनीयो गणाधिपः।
पूजितस्तु तितौ कस्यां सिद्धिदो गणपो भवेत्॥९॥

कृष्ण उवाच

मासि भाद्रपदे शुक्ले चतुर्थ्यां पूजयेन्नृप।
मासि माघे श्रावणे वा मार्गशीर्षेऽथवा भवेत्॥१०॥

गजवक्त्रं तु शुक्लायां चतुर्थ्यां पूजयेन्नृप।
यदा चोत्पद्यते भक्तिस्तदा पूज्यो गणाधिपः॥११॥

प्रातः शुक्लतिलैः स्नात्वा मध्याह्ने पूजयेन्नृप।
निष्कमात्रसुवर्णेन तदर्धार्धेन वा पुनः॥१२॥

स्वशक्त्या गणनाथस्य स्वर्णरौप्यमयाकृतिम्।
अथवा मृन्मयीं कुर्याद् वित्तशाठ्यं न कारयेत्॥१३॥

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्॥१४॥

ध्यात्वा चानेन मन्त्रेण स्नाप्य पश्चामृतैः पूथक्।
गणाध्यक्षेति नाम्ना वै गन्धं दद्याच्च भक्तितः॥१५॥

आवाहनार्थं पाद्यं च दत्त्वा पश्चात् प्रयत्नतः।
रक्तवस्त्रयुगं सर्वप्रदं दद्याच्च भक्तितः॥१६॥

विनायकेति पुष्पाणि धूपं चोमासुताय च।
दीपं रुद्रप्रियायेति नैवेद्यं विघ्ननाशिने॥१७॥

किञ्चित् सुवर्णं पूजां च ताम्बूलं च समर्पयेत्।
ततो दूर्वाङ्कुरान् गृह्य विंशतिं चैकमेव हि॥१८॥

पूजनीयः प्रयत्नेन एभिर्नामपदैः पृथक्।
गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन॥१९॥

विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक।
एकदन्तेभवक्रेति तथा मूषकवाहन॥२०॥

कुमारगुरवे तुभ्यं पूजनीयः प्रयत्नतः।
दूर्वायुग्मं गृहीत्वा तु गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्॥२१॥

एकैकेन तु नाम्ना वै दत्त्वैकं सर्वनामभिः।
अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान् घृतपाचितान्॥२२॥

स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनन्दन।
दश विप्राय दातव्याः स्वयं ग्राह्यास्तथा दश॥२३॥

एकं गणाधिपे दद्यात् सनैवेद्यं नृपोत्तम।
विनायकस्य प्रतिमां ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥२४॥

विनायकस्य प्रतिमां वस्त्रयुग्मेन वेष्टिताम्।
तुभ्यं सम्प्रददे विप्र प्रीयतां मे गजाननः॥२५॥

विनायक गणेश त्वं सर्वदेवनमस्कृत।
पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नं विनाशय॥२६॥

गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च।
गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः॥२७॥

कृत्वा नैमित्तिकं कर्म पूजयेदिष्टदेवताम्।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाद् भुञ्जीयात् तैलवर्जितम्॥२८॥

एवं कृते धर्मराज गणनाथस्य पूजने।
विजयस्ते भवेन्नूनं सत्यं सत्यं मयोदितम्॥२९॥

त्रिपुरं हन्तुकामेन पूजितः शूलपाणिना।
शक्रेण पूजितः पूर्वं वृत्रासुरवधेच्छया॥३०॥

अन्वेषयन्त्या भर्तारं पूजितोऽहल्यया पुरा।
नलस्यान्वेषणार्थाय दमयन्त्या पुराऽऽर्चितः॥३१॥

रघुनाथेन तद्वच्च सीतायान्वेषणे पुरा।
द्रष्टुं सीतां महाभागां वीरेण च हनूमता॥३२॥

भगीरथेन तद्वच्च गङ्गामानयता पुरा।
अमृतोत्पादनार्थाय तथा देवासुरैरपि॥३३॥

अमृतं हरता पूर्वं वैनतेयेन पक्षिणा।
आराधितो गणाध्यक्षो ह्यमृतं च हृतं बलात्॥३४॥

रुक्मिणीहेतुकामेन पूजितोऽसौ मया प्रभुः।
तस्य प्रसादाद्राजेन्द्र रुक्मिणीं प्राप्तवानहम्॥३५॥

यदा पूर्वं हि दैत्येन हृतो रुक्मिणिनन्दनः।
आराधितो मया तद्वद् रुक्मिण्या सहितेन च॥३६॥

कुष्ठव्याधियुतेनाथ साम्बेनाऽऽराधितः पुरा।
जयकामस्तथा शीघ्रं त्वमाराधय शाङ्करिम्॥३७॥

विद्याकामो लभेद् विद्यां धनकामो धनं तथा।
जयं च जयकामस्तु पुत्रार्थी विन्दते सुतान्॥३८॥

पतिकामा च भर्तारं सौभाग्यं च सुवासिनी।
विधवा पूजयित्वा तु वैधव्यं नाप्नुयात्क्वचित्॥३९॥

वैष्णव्याद्यासु दीक्षासु आदौ पूज्यो गणाधिपः।
तस्मिन् सम्पूजिते विष्णुरीशो भानुस्तथा ह्युमा॥४०॥

हव्यवाहमुखा देवाः पूजिताः स्युर्न संशयः।
चण्डिकाद्या मातृगणाः परितुष्टा भवन्ति च॥४१॥

तस्मिन्सम्पूजिते विप्रा भक्त्या सिद्धिविनायके।
एवं कृते धर्मराज गणनाथस्य पूजने॥४२॥

प्राप्स्यसि त्वं स्वकं राज्यं हत्वा शत्रून् रणाजिरे।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि नात्र कार्या विचारणा॥४३॥

एवमुक्तस्तु कृष्णेन सानुजः पाण्डुनन्दनः।
पूजयामास देवस्य पुत्रं त्रिपुरघातिनः॥४४॥

शत्रुसङ्घं निहत्यासौ प्राप्तवान्राज्यमोजसा।

सूत उवाच

यः पूजयेन्मन्दभाग्यो गणेशं सिद्धिदायकम्॥४५॥

सिध्यन्ति तस्य कार्याणि मनसा चिन्तितान्यपि।
ख्यातिं गमिष्यते तेन नाम्ना सिद्धिविनायकः॥४६॥

य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद् वा समाहितः।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि विनायकप्रसादतः॥४७॥

॥इति सिद्धिविनायकव्रतं भविष्योक्तं सम्पूर्णम्॥

॥ सारभूतः श्लोकः ॥

“सिंहः प्रसेनम् अवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक मा रोदीः तव ह्येष स्यमन्तकः॥”

॥ स्यमन्तकोपाख्यानपठने प्रमाणवचनानि ॥

कन्यादित्ये चतुर्थ्यां च शुक्ले चन्द्रस्य दर्शनम्।
मिथ्याभिदूषणं कुर्यात् तस्मात् पश्येन्न तं तदा॥
तद्दोषशान्तये जाप्यं विष्णुनोक्तं स्यमन्तकम्॥

(व्रतचूडामण्यादौ व्रतग्रन्थेषु)

ये शृण्वन्ति तवाख्यानं स्यमन्तकमणीयकम्॥
चन्द्रस्य चरितं सर्वं तेषां दोषो न जायते॥१३२॥

(अत्रैव अग्रे उपाख्याने)

॥ स्यमन्तकोपाख्यानम् ॥

नन्दिकेश्वर उवाच

शृणुष्वैकाग्रचित्तः सन् व्रतं गाणेश्वरं महत्।
चतुर्थ्यां शुक्लपक्षे तु सदा कार्यं प्रयत्नतः॥१॥

सनत्कुमार योगीन्द्र यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
नारी वा पुरुषो वाऽपि यः कुर्याद् विधिवद् व्रतम्॥२॥

मोचयत्याशु विप्रेन्द्र सङ्कष्टाद् व्रतिनं हि तत्।
अपवादहरं चैव सर्वविघ्नप्रणाशनम्॥३॥

कान्तारे विषमे वाऽपि रणे राजकुलेऽथवा।
सर्वसिद्धिकरं विद्धि व्रतानामुत्तमं व्रतम्॥४॥

गजाननप्रियं चाथ त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
अतो न विद्यते ब्रह्मन् सर्वसङ्कष्टनाशनम्॥५॥

सनत्कुमार उवाच

केन चादौ पुरा चीर्णं मर्त्यलोकं कथं गतम्।
एतत्समस्तं विस्तार्य ब्रूहि गाणेश्वरं व्रतम्॥६॥

नन्दिकेश्वर उवाच

चक्रे व्रतं जगन्नाथो वासुदेवः प्रतापवान्।
आदिष्टं नारदेनैव वृथालाञ्छनमुक्तये॥७॥

सनत्कुमार उवाच

षड्गुणैश्वर्य-सम्पन्नः सृष्टिसंहार-कारकः।
वासुदेवो जगद्धापी प्राप्तवान् लाञ्छनं कथम्॥८॥

एतदाश्चर्यमाख्यानं ब्रूहि त्वं नन्दिकेश्वर।

नन्दिकेश्वर उवाच

भूमिभारनिवृत्त्यर्थं वसुदेवसुताबुभौ॥९॥

रामकृष्णौ समुत्पन्नौ पद्मनाभ-फणीश्वरौ।
जरासन्धभयात् कृष्णो द्वारकां समकल्पयत्॥१०॥

विश्वकर्माणमाहूय पुरीं हाटकनिर्मिताम्।
तत्र षोडशसाहस्रं स्त्रीणां चैव शताधिकम्॥११॥

भवनानि मनोज्ञानि तेषां मध्ये व्यकल्पयत्।
पारिजाततरुं मध्ये तासां भोगाय कल्पयत्॥१२॥

यादवानां गृहास्तत्र षट् पञ्चाशच्च कोटयः।
अन्येऽपि बहवो लोका वसन्ति विगतज्वराः॥१३॥

यत् किञ्चित् त्रिषु लोकेषु सुन्दरं तत्र दृश्यते।
सत्राजितप्रसेनाख्यौ पुत्राबुग्रस्य विश्रुतौ॥१४॥

अम्भोधितीरमासाद्य तन्मनस्कतया च सः।
सत्राजितस्तपस्तेपे सूर्यमुद्दिश्य बुद्धिमान्॥१५॥

व्रतं निरशनं गृह्य सूर्यसम्बद्धलोचनः।
ततः प्रसन्नो भगवान् सत्राजितपुरः स्थितः॥१६॥

सत्राजितोऽपि तुष्टाव दृष्ट्वा देवं दिवाकरम्।
तेजोराशे नमस्तेऽस्तु नमस्ते सर्वतोमुख॥१७॥

विश्वव्यापिन् नमस्तेऽस्तु नमस्ते विश्वरूपिणे।
काश्यपेय नमस्तेऽस्तु हरिदश्व नमोऽस्तु ते॥१८॥

ग्रहराज नमस्तेऽस्तु नमस्ते चण्डरोचिषे।
वेदत्रय नमस्तेऽस्तु सर्वदेव नमोऽस्तु ते॥१९॥

प्रसीद पाहि देवेश सुदृष्ट्या मां दिवाकर।
इत्थं संस्तूयमानोऽसौ देवदेवो दिवाकरः॥२०॥

स्निग्धगम्भीरमधुरं सत्राजितमुवाच ह।

सूर्य उवाच

वरं ब्रूहि प्रदास्यामि यत् ते मनसि वर्तते॥२१॥

सत्राजित महाभाग तुष्टोऽहं तव निश्चयात्।

सत्राजित उवाच

स्यमन्तकमणिं देहि यदि तुष्टोऽसि भास्कर॥२२॥

ददौ तस्य च तद् रत्नं स्वकण्ठादवतार्य सः।

भास्कर उवाच

भाराष्टकं शातकुम्भं स्रवतेऽसौ महामणिः॥२३॥

शुचिष्मता सदा धार्यं रत्नमेतन्महोत्तमम्।

सत्राजित क्षणेनैतदशुचिं हन्ति मानवम्।

इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवस्तेजोराशिर्दिवाकरः॥२४॥

तत्कण्ठरत्नज्वलमानरूपी

पुरीं स कृष्णस्य विवेश सत्वरम्।

दृष्ट्वा तु लोका मनसा दिवाकरं

सञ्चिन्तयन्तो हि विमुष्टदृष्टयः॥२५॥

समागतोऽयं हरिदश्वदीधिति-

र्जनार्दनं द्रष्टुमसंशयेन।

नायं सहस्रांशुरितीह लोकाः

सत्राजितोऽयं मणिकण्ठभास्वान्॥२६॥

स्यमन्तकं महारत्नं दृष्ट्वा तत्कण्ठमण्डले।

स्पृहां चक्रे जगन्नाथो न जहार मणिं तु सः॥२७॥

सत्राजितो जातभयो याचयिष्यति मां हरिः।

प्रसेनाय ददौ भ्रात्रे धार्योऽयं शुचिना त्वया॥२८॥

एकदा कण्ठदेशेऽसौ क्षिप्त्वा तं मणिमुत्तमम्।
मृगया क्रीडनार्थाय ययौ कृष्णेन संयुतः॥२९॥

अश्वारूढोऽशुचिश्चासौ हतः सिंहेन तत्क्षणात्।
रत्नमादाय सिंहोऽपि गच्छन् जाम्बवता हतः॥३०॥

नीत्वा स विवरे रत्नं ददौ पुत्राय जाम्बवान्।
पुरीं विवेश कृष्णोऽपि स्वकैः सर्वैः समावृतः॥३१॥

प्रसेनोऽद्यापि नाऽऽयाति हतः कृष्णेन निश्चितम्।
मणिलोभेन हा कष्टं बान्धवः पापिना हतः॥३२॥

द्वारकावासिनः सर्वे जना ऊचुः परस्परम्।
वृथापवादसन्तप्तः कृष्णोऽपि निरगाच्छनैः॥३३॥

सहैव तैर्गतोऽरण्यं दृष्ट्वा सिंहेन पातितम्।
प्रसेनं वाहनयुतं तत्पदानुचरः शनैः॥३४॥

ऋक्षेण निहतं दृष्ट्वा कृष्णश्चर्क्षबिलं गतः।
विवेश योजनशतमन्धकारं स्वतेजसा॥३५॥

निवारयन् ददर्शाग्रे प्रासादं बद्धभूमिकम्।
तं कुमारं जाम्बवतो दोलायाममितद्युतिम्॥३६॥

माणिक्यं लम्बमानं च ददर्श भगवान् हरिः।
रूपयौवनसम्पन्नां कन्यां जाम्बवतीं पुनः॥३७॥

दोलां दोलयमानां च ददर्श कमलेक्षणः।
महान्तं विस्मयं चक्रे दृष्ट्वा तां चारुहासिनीम्।
दोलां दोलयमाना सा जगौ गीतमिदं मुहुः॥३८॥

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥३९॥

मदनज्वरदाहार्ता दृष्ट्वा तं कमलेक्षणम्।
उवाच ललितं बाला गम्यतां गम्यतामिति॥४०॥

रत्नं गृहीत्वा वेगेन यावच्छेते तु जाम्बवान्।
इत्याकर्ण्य वचः शौरिः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्॥४१॥

आकर्ण्य सहसोत्थाय युयुधे ऋक्षराट् ततः।
तयोर्युद्धमभूद्धोरं हरिजाम्बवतोस्तदा॥४२॥

द्वारकावासिनः सर्वे गतास्ते सप्तमे दिने।
मृतः कृष्णो भक्षितो वा निःसन्दिग्धं विचार्य च॥४३॥

परलोकक्रियां चक्रुः परेतस्य तु ते तदा।
एकविंशदिनं यावद् बाहुप्रहरणो विभुः॥४४॥

युयुधे तेन ऋक्षेण युद्धकर्मणि तोषितः।
जाम्बवान् प्राक्तनं स्मृत्वा दृष्ट्वा देवबलं महत्॥४५॥

जाम्बवानुवाच

अजेयोऽहं सुरैः सर्वैर्यक्षराक्षसदानवैः।
त्वया जितोऽहं देवेश देवस्त्वमसि निश्चितम्॥४६॥

जाने त्वां वैष्णवं तेजो नान्यथा बलमीदृशम्।
इति प्रसाद्य देवेशं ददौ माणिक्यमुत्तमम्॥४७॥

सुतां जाम्बवतीं नाम भार्यार्थं वरवर्णिनीम्।
पाणिं वै ग्राहयामास देवदेवं च जाम्बवान्॥४८॥

मणिमादाय देवोऽपि जाम्बवत्याऽपि संयुतः।
तद्वृत्तान्तं समाचष्टे द्वारकावासिनां स्वयम्॥४९॥

सत्राजितस्य माणिक्यं दत्तवान् संसदि स्थितः।
मिथ्यापवादसंशुद्धिं प्राप्तवान् मधुसूदनः॥५०॥

सत्राजितोऽपि सत्रस्तः कृष्णाय प्रददौ सुताम्।
सत्यभामां महाबुद्धिस्तदा सर्वगुणान्विताम्॥५१॥

शतधन्वाक्रूरमुखा यादवा दृष्टमानसाः।
सत्राजितेन ते वैरं चक्रू रत्नाभिलाषिणः॥५२॥

दुरात्मा शतधन्वाऽपि गते कृष्णे च कुत्रचित्।
सत्राजितं निहत्याशु मणिं जग्राह पापधीः॥५३॥

कृष्णस्य पुरतः सत्या समाचष्टे विचेष्टितम्।
अन्तर्हृष्टो बहिःकोपी कृष्णः कपटनायकः॥५४॥

बलदेवपुरो वाक्यमुवाच धरणीधरः।
हत्वा सत्राजितं दुष्टो मणिमादाय गच्छति॥५५॥

निहत्य शतधन्वानं गृहीमो रत्नमावयोः।
मम भोग्यं च तद् रत्नं भविष्यति सुनिश्चितम्॥५६॥

एतच्छ्रुत्वा भयत्रस्तः शतधन्वाऽपि यादवः।
आहूयाक्रूरनामानं माणिक्यं प्रददौ च सः॥५७॥

आरुह्य वडवां वेगान्निर्गतो दक्षिणां दिशम्।
रथस्थावनुगच्छेतां तदा रामजनार्दनौ॥५८॥

शतयोजनमात्रेण ममार वडवा तदा।
पलायमानो निहतः पदातिस्तु पदातिना॥५९॥

रथस्थे बलदेवे तु हरिणा रत्नलोभतः।
न दृष्टं तत्र तद्रत्नं बलदेवपुरोऽवदत्॥६०॥

तदाकर्ण्य महारोषादुवाच वचनं बली।
कपटी त्वं सदा कृष्ण लोभी पापी सुनिश्चितम्॥६१॥

अर्थाय स्वजनं हंसि कस्त्वां बन्धुः समाश्रयेत्।
अनेकशपथैः कृष्णो बलदेवं प्रसादयत्॥६२॥

सोऽपि धिक् कष्टमित्युक्त्वा ययौ वैदर्भमण्डलम्।
कृष्णोऽपि रथमारुह्य द्वारकां प्रययौ पुनः॥६३॥

तथैवोचूर्जनाः सर्वे न साधीयानयं हरिः।
निष्कासितो रत्नलोभाज्ज्येष्ठो भ्राता बलो बली॥६४॥

तच्छ्रुत्वा दीनवदनः पापीयानिव संस्थितः।
वृथाभिशपात् सन्तप्तो बभूव स जगत्पतिः॥६५॥

अक्रूरोऽपि विनिष्क्रम्य तीर्थयात्रानिमित्ततः।
काशीं गत्वा सुखेनासौ यजन् यज्ञपतिं प्रभुम्॥६६॥

तोषमुत्पादयामास तेन द्रव्येण बुद्धिमान्।
सुरालयगृहैश्चित्रैर्नगरं समकल्पयत्॥६७॥

न दुर्मिक्षं न वै रोग ईतयो न च विद्वरम्।
शुचिना धार्यते यत्र मणिः सूर्यस्य निश्चितम्॥६८॥

जानन्नपि हि तत् सर्वं मानुषं भावमाश्रितः।
लोकाचारं तथा मायामज्ञानं च समाश्रितः॥६९॥

बन्धुवैरं समुत्पन्नं लाञ्छनं समुपस्थितम्।
वृथापवादबहुलं जायमानं कथं सहे॥७०॥

इति चिन्तातुरं कृष्णं नारदः समुपस्थितः।
गृहीत्वा तत्कृतां पूजां सुखासीनस्ततोऽब्रवीत्॥७१॥

नारद उवाच

किमर्थं खिद्यसे देव किं वा ते शोककारणम्।
यथावृत्तं समाचष्टे नारदाय च केशवः॥७२॥

नारद उवाच

जानामि कारणं देव यदर्थं लाञ्छनं तव।
त्वया भाद्रपदे शुक्लचतुर्थ्या चन्द्रदर्शनम्॥७३॥

कृतं तेन समुत्पन्नं लाञ्छनं तु वृथैव हि।

श्रीकृष्ण उवाच

वद नारद मे शीघ्रं को दोषश्चन्द्रदर्शने॥७४॥
किमर्थं तु द्वितीयायां तस्य कुर्वन्ति दर्शनम्।

नारद उवाच

गणनाथेन संशतश्चन्द्रमा रूपगर्वतः॥७५॥
त्वद्दर्शने नराणां हि वृथानिन्दा भविष्यति।

श्रीकृष्ण उवाच

किमर्थं गणनाथेन शतश्चन्द्रः सुधामयः॥७६॥
इदमाख्यानकं श्रेष्ठं यथावद् वक्तुमर्हसि।

नारद उवाच

गणानामाधिपत्ये च रुद्रेण विहितः पुरा॥७७॥
अणिमा महिमा चैव लघिमा गरिमा तथा।
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः॥७८॥
भार्यार्थं प्रददौ देवो गणेशस्य प्रजापतिः।
पूजयित्वा गणाध्यक्षं स्तुतिं कर्तुं प्रचक्रमे॥७९॥

ब्रह्मोवाच

गजवक्त्र गणाध्यक्ष लम्बोदर वरप्रद।
विघ्नाधीश्वर देवेश सृष्टिसंहारकारक॥८०॥
यः पूजयेद् गणाध्यक्षं मोदकाद्यैः प्रयत्नतः।
तस्य प्रजायते सिद्धिर्निविघ्नेन न संशयः॥८१॥
असम्पूज्य गणाध्यक्षं ये वाञ्छन्ति सुरासुराः।
न तेषां जायते सिद्धिः कल्पकोटिशतैरपि॥८२॥

त्वद्भक्त्या तु गणाध्यक्ष विष्णुः पालयते सदा।
रुद्रोऽपि संहरत्याशु त्वद्भक्त्यैव करोम्यहम्॥८३॥

इत्थं संस्तूयमानोऽसौ देवदेवो गजाननः।
उवाच परमप्रीतो ब्रह्माणं जगतां पतिम्॥८४॥

श्रीगणेश उवाच

वरं ब्रूहि प्रदास्यामि यत् ते मनसि वर्तते।

ब्रह्मोवाच

क्रियमाणस्य मे सृष्टिर्निविघ्नं जायतां प्रभो॥८५॥

एवमस्त्विति देवोऽसौ गृहीत्वा मोदकान् करे।
सत्यलोकात् समागच्छन् स्वेच्छया गगने शनैः॥८६॥

चन्द्रलोकं समासाद्य चलितो गणनायकः।
उपहासं तदा चक्रे सोमो रूपमदान्वितः॥८७॥

तं दृष्ट्वा कोपताम्राक्षो गणनाथः शशाप ह।
दर्शनीयः सुरूपोऽहं सुन्दरश्चाहमित्यथ॥८८॥

गर्वितोऽसि शशाङ्क त्वं फलं प्राप्स्यसि सत्वरम्।
अद्यप्रभृति लोकास्त्वां न हि पश्यन्ति पापिनम्॥८९॥

ये पश्यन्ति प्रमादेन त्वां नरा मृगलाञ्छनम्।
मिथ्याभिशापसंयुक्ता भविष्यन्तीह ते ध्रुवम्॥९०॥

हाहाकारो महाञ्जातः श्रुत्वा शापं च भीषणम्।
अत्यन्तं म्लानवदनश्चन्द्रो जलमथाविशत्॥९१॥

कुमुदं कौमुदीनाथः स्थितस्तत्र कृतालयः।
ततो देवर्षिगन्धर्वा निराशा दीनमानसाः॥९२॥

तुरासाहं पुरोधाय जग्मुस्ते तं पितामहम्।
देवं शशसुश्चन्द्रस्य गणेशस्य च चेष्टितम्॥९३॥

दत्तः शापो गणेशेन कथयामासुरादरात्।
विचार्य भगवान् ब्रह्मा तान् सुरानिदमब्रवीत्॥१४॥

गणेशशापो देवेन्द्र शक्यते केन वाऽन्यथा।
कर्तुं रुद्रेण न मया विष्णुना चापि निश्चितम्॥१५॥

तमेव देवदेवेशं ब्रजध्वं शरणं सुराः।
स एव शापमोक्षं च करिष्यति न संशयः॥१६॥

देवा ऊचुः

केनोपायेन वरदो गजवक्रो गणेश्वरः।
पितामह महाप्राज्ञ तदस्माकं वद प्रभो॥१७॥

पितामह उवाच

चतुर्थ्यां देवदेवोऽसौ पूजनीयः प्रयत्नतः।
कृष्णपक्षे विशेषेण नक्तं कुर्याच्च तद् व्रतम्॥१८॥

अपूपैर्घृतसंयुक्तैर्मोदकैः परितोषयेत्।
मधुरान्नं हविष्यं च स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः॥१९॥

स्वर्णरूपं गणेशस्य दातव्यं द्विजसत्तम।
शक्त्या च दक्षिणां दद्याद् वित्तशाठ्यं न कारयेत्॥१००॥

एवं श्रुत्वा च तैः सर्वैर्गीष्पतिः प्रेषितस्तदा।
स गत्वा कथयामास चन्द्राय ब्रह्मणोदितम्॥१०१॥

व्रतं चक्रे ततश्चन्द्रो यथोक्तं ब्रह्मणा पुरा।
आविर्बभूव भगवान् गणेशो व्रततोषितः॥१०२॥

तं क्रीडमानं गणनायकं च
तुष्टाव दृष्ट्वा तु कलानिधानः।
त्वं कारणं कारणकारणानां
वेत्तासि वेद्यं च विभो प्रसीद॥१०३॥

प्रसीद देवेश जगन्निवास
 गणेश लम्बोदर वक्रतुण्ड।
 विरिञ्चिनारायणपूज्यमान
 क्षमस्व मे गर्वकृतं च हास्यम्॥१०४॥

ये त्वामसम्पूज्य गणेश नूनं
 वाच्छन्ति मूढाः स्वकृतार्थसिद्धिम्।
 ते दैवदृष्टा निभृतं च लोके
 ज्ञातो मया ते सकलः प्रभावः॥१०५॥

ये चाप्युदासीनतरास्तु पापाः
 ते यान्ति वासं नरके सदैव।
 हेरम्ब लम्बोदर मे क्षमस्व
 दुश्चेष्टितं तत् करुणासमुद्र॥१०६॥

एवं संस्तूयमानोऽसौ चन्द्रेणाह गजाननः।
 तुष्टोऽहं तव दास्यामि वरं ब्रूहि निशाकर॥१०७॥

चन्द्र उवाच

लोकानां दर्शनीयोऽहं भवामि पुनरेव हि।
 विशापोऽहं भविष्यामि त्वत्प्रसादाद् गणेश्वर॥१०८॥

गणेश उवाच

वरमन्यं प्रदास्यामि नैतद् देयं मया तव।
 ततो ब्रह्मादयः सर्वे समाजग्मुर्भयार्दिताः॥१०९॥

विशापं कुरु देवेश प्रार्थयामो वयं तव।
 विशापमकरोच्चन्द्रं कमलासनगौरवात्॥११०॥

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु ये पश्यन्ति सदैव हि।
 मिथ्यापवादमावर्ष प्राप्स्यन्तीह न संशयः॥१११॥

मासादौ पूर्वमेव त्वां ये पश्यन्ति सदा जनाः।
 भद्रायां शुक्लपक्षस्य तेषां दोषो न जायते॥११२॥

तदाप्रभृति लोकोऽयं द्वितीयायां कृतादरः।
 पुनरेव तु पप्रच्छ कलावान् गणनायकम्॥११३॥
 केनोपायेन देवेश तुष्टो भवसि तद्वद।

गणेश उवाच

यश्च कृष्णचतुर्थ्यां तु मोदकाद्यैः प्रपूज्य माम्॥११४॥
 रोहिण्या सहितं त्वां च समभ्यर्च्यार्घ्यदानतः।
 यथाशक्त्या च मद्रूपं स्वर्णेन परिकल्पितम्॥११५॥
 दत्त्वा द्विजाय भुञ्जीत कथां श्रुत्वा विधानतः।
 सदा तस्य करिष्यामि सङ्कष्टस्य निवारणम्॥११६॥
 भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु मृन्मयी प्रतिमा शुभा।
 हेमाभावे तु कर्तव्या नानापुष्पैः प्रपूज्य माम्॥११७॥
 ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाज्जागरं च विशेषतः।
 स्थापयेदव्रणं कुम्भं धान्यस्योपरि शोभितम्॥११८॥
 यथाशक्त्या च मद्रूपं शातकुम्भेन निर्मितम्।
 वस्त्रद्वयसमाच्छन्नं मोदकाद्यैः प्रपूज्य माम्॥११९॥
 रक्ताम्बरधरो मर्त्यो ब्रह्मचर्यव्रतः शुचिः।
 रोहिणीसहितं त्वां च पूजयेत् स्थाप्य मत्पुरः॥१२०॥
 रजतस्य तु रूपं ते कृत्वा शक्त्या विनिर्मितम्।
 वस्त्रं शिवप्रियायेति उपवस्त्रं गणाधिपे॥१२१॥
 गन्धं लम्बोदरायेति पुष्पं सिद्धिप्रदायके।
 धूपं गजमुखायेति दीपं मूषकवाहने॥१२२॥
 विघ्ननाथाय नैवेद्यं फलं सर्वार्थसिद्धिदे।
 ताम्बूलं कामरूपाय दक्षिणां धनदाय च॥१२३॥

इक्षुदण्डैर्मोदकैश्च होमं कुर्याच्च नामभिः।
विसर्जनं ततः कुर्यात् सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥१२४॥

एवं सम्पूज्य विघ्नेशं कथां श्रुत्वा विधानतः।
मन्त्रेणानेन तत् सर्वं ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥१२५॥

दानेनानेन देवेश प्रीतो भव गणेश्वर।
सर्वत्र सर्वदा देव निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥१२६॥

मानोन्नतिं च राज्यं च पुत्रपौत्रान् प्रदेहि मे।
गाश्च धान्यं च वासांसि दद्यात् सर्वं स्वशक्तितः॥१२७॥

दत्त्वा तु ब्राह्मणे सर्वं स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः।
मोदकापूपमधुरं लवणक्षारवर्जितम्॥१२८॥

एवं करोति यश्चन्द्र तस्याहं सर्वदा जयम्।
सिद्धिं च धनधान्ये च दादामि विपुलां प्रजाम्॥१२९॥

इत्युक्तान्तर्दधे देवो विघ्नराजो विनायकः।
तद् व्रतं कुरु कृष्ण त्वं ततः सिद्धिमवाप्स्यसि॥१३०॥

नारदेनैवमुक्तस्तु व्रतं चक्रे हरिः स्वयम्।
मिथ्यापवादं निर्मृज्य ततः कृष्णोऽभवच्छुचिः॥१३१॥

ये शृण्वन्ति तवाख्यानं स्यमन्तकमणीयकम्।
चन्द्रस्य चरितं सर्वं तेषां दोषो न जायते॥१३२॥

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु क्वचिच्चन्द्रस्य दर्शनम्।
जातं तत्परिहारार्थं श्रोतव्यं सर्वमेव हि॥१३३॥

यदा यदा मनःकष्टं सन्देह उपजायते।
तदा तदा च श्रोतव्यमाख्यानं कष्टनाशनम्।
एवमुक्त्वा गतो देवो गणेशः कृष्णतोषितः॥१३४॥

यदा यदा पश्यति कार्यमुत्थितं
 नारी नरश्चाथ करोति तद् व्रतम्।
 सिध्यन्ति कार्याणि मनेप्सितानि
 किं दुर्लभं विघ्नहरे प्रसन्ने॥१३५॥

॥इति श्रीस्कन्दपुराणे नन्दिकेश्वरसनत्कुमारसंवादे स्यमन्तकोपाख्यानं
 सम्पूर्णम्॥

॥श्री-धन्वन्तरिपूजा॥

॥पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां॑ त्वा गुणपति॑ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
 ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत॑ आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पादं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
 स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।
 यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
 दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
 गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
 पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — धन्वन्तरिपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे शकाब्दे
अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^{१८} नाम
संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शुभतिथौ
(इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{१९} नक्षत्र
()^{२०} नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम्
त्रयोदश्यां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय
आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं श्रीधन्वन्तरि-देवता-प्रीत्यर्थं श्री धन्वन्तरि-देवता-प्रीति-पूर्वकम्

^{१८}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^{१९}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{२०}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

आयुष्य-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्ध्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार
धन्वन्तरि-पूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।
ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ३. ॐ आदिकूर्माय नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ४. ॐ आदिवराहाय नमः |

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

चतुर्भुजं पीतवस्त्रं सर्वालङ्कारशोभितम्।
ध्याये धन्वन्तरिं देवं सुरासुरनमस्कृतम्॥

युवानं पुण्डरीकाक्षं सर्वाभरणभूषितम्।
दधानममृतस्यैव कमण्डलुं श्रिया युतम्॥

यज्ञ-भोग-भुजं देवं सुरासुरनमस्कृतम्।
ध्याये धन्वन्तरिं देवं श्वेताम्बरधरं शुभम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री धन्वन्तरिं ध्यायामि।

सहस्रं शीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री धन्वन्तरिम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥

आसनं समर्पयामि।

ए॒तावा॑नस्य म॒हिमा॑। अतो॒ ज्या॒याऽश्च॑ पू॒रुषः॑।
पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑। त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑ दि॒वि॥

पाद्यं समर्पयामि।

त्रि॒पाद॑र्ध्व उदै॒त्पुरु॑षः। पादो॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑।
ततो॒ विश्व॑ङ्म॒क्रामत्॑। सा॒श॒ना॒न॒शने॑ अ॒भि॥
अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्मा॑द्वि॒राड॑जायत। वि॒राजो॒ अधि॑ पू॒रुषः॑।
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत। प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॑॥

आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पु॑रु॒षेण॑ ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑त॒न्वत॑।
व॒स॒न्तो अ॑स्याऽऽसी॒दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॑विः॥
मधु॑पर्कं समर्पयामि।

स॒प्तास्याऽऽस॑न् परि॒धयः॑। त्रिः स॒प्त स॑मिधः॒ कृताः॑।
दे॒वा यद्य॑ज्ञं त॒न्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पु॒रुषं॑ प॒शुम्॥
शुद्धो॑दकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन्। पु॒रुषं॑ जा॒तम॑ग्रतः।
तेन॑ दे॒वा अ॑र्यजन्त। सा॒ध्या ऋषे॑यश्च॒ ये॥
वस्त्रं समर्पयामि।

तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। स॒मभू॑तं पृषदा॒ज्यम्।
प॒शूँस्ताँश्च॑क्रे वा॒य॒व्यान्। आ॒र॒ण्यान्प्रा॒म्याश्च॒ ये॥

यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।
अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः।
गार्वो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥
पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

- | | | |
|-----|----------------------|-------------------|
| १. | ॐ वराहाय नमः | — पादौ पूजयामि |
| २. | सङ्कर्षणाय नमः | — गुल्फौ पूजयामि |
| ३. | कालात्मने नमः | — जानुनी पूजयामि |
| ४. | विश्वरूपाय नमः | — जङ्घे पूजयामि |
| ५. | क्रोढाय नमः | — ऊरू पूजयामि |
| ६. | भोक्त्रे नमः | — कटिं पूजयामि |
| ७. | विष्णवे नमः | — मेढ्रं पूजयामि |
| ८. | हिरण्यगर्भाय नमः | — नाभिं पूजयामि |
| ९. | श्रीवत्सधारिणे नमः | — कुक्षिं पूजयामि |
| १०. | परमात्मने नमः | — हृदयं पूजयामि |
| ११. | सर्वास्त्रधारिणे नमः | — वक्षः पूजयामि |
| १२. | वनमालिने नमः | — कण्ठं पूजयामि |
| १३. | सर्वात्मने नमः | — मुखं पूजयामि |

१४. सहस्राक्षाय नमः — नेत्राणि पूजयामि
 १५. सुप्रभाय नमः — ललाटं पूजयामि
 १६. चम्पकनासिकाय नमः — नासिकां पूजयामि
 १७. सर्वेशाय नमः — कर्णौ पूजयामि
 १८. सहस्रशिरसे नमः — शिरः पूजयामि
 १९. नीलमेघनिभाय नमः — केशान् पूजयामि
 २०. महापुरुषाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ धन्वन्तरये नमः
 ॐ सुधापूर्णकलशाढ्यकराय नमः

ॐ हरये नमः
 ॐ जरामृतित्रस्तदेवप्रार्थना-

साधकाय नमः

ॐ प्रभवे नमः

ॐ निर्विकल्पाय नमः

ॐ निस्समानाय नमः

ॐ मन्दस्मितमुखाम्बुजाय नमः

ॐ आज्ञनेयप्रापिताद्रये नमः

ॐ पार्श्वस्थविनतासुताय नमः १०

ॐ निमग्नमन्दरधराय नमः

ॐ कूर्मरूपिणे नमः

ॐ बृहत्तनवे नमः

ॐ नीलकुञ्चितकेशान्ताय नमः

ॐ परमाद्भुतरूपधृते नमः

ॐ

कटाक्षवीक्षणाश्वस्तवासुकिने नमः

ॐ सिंहविक्रमाय नमः

ॐ स्मर्तृहृद्रोगहरणाय नमः

ॐ महाविष्णवंशसम्भवाय नमः

ॐ प्रेक्षणीयोत्पलश्यामाय नमः २०

ॐ आयुर्वेदाधिदैवताय नमः

ॐ भेषजग्रहणानेहस्स्मरणीय-

पदाम्बुजाय नमः

ॐ नवयौवनसम्पन्नाय नमः

ॐ किरीटान्वितमस्तकाय नमः

ॐ नक्रकुण्डलसंशोभि-

श्रवणद्वयशङ्कुलये नमः

ॐ दीर्घपीवरदोर्दण्डाय नमः

ॐ कम्बुग्रीवाय नमः

ॐ अम्बुजेक्षणाय नमः

ॐ चतुर्भुजाय नमः

ॐ शङ्खधराय नमः ३०

ॐ चक्रहस्ताय नमः

ॐ वरप्रदाय नमः

ॐ सुधापात्रोपरिलसदाम्रपत्र-

लसत्कराय नमः

ॐ शतपद्माढ्यहस्ताय नमः

ॐ कस्तूरीतिलकाञ्चिताय नमः

ॐ सुकपोलाय नमः

ॐ सुनासाय नमः

ॐ सुन्दरभ्रूलताञ्चिताय नमः

ॐ स्वङ्गुलीतलशोभाढ्याय नमः

ॐ गूढजत्रवे नमः ४०

ॐ महाहनवे नमः

ॐ दिव्याङ्गदलसद्वाहवे नमः

ॐ केयूरपरिशोभिताय नमः

ॐ विचित्ररत्नखचितवलयद्वय-

शोभिताय नमः

ॐ समोल्लसत्सुजातांसाय नमः

ॐ अङ्गुलीयविभूषिताय नमः

ॐ सुधागन्धरसास्वादमिलद्भृङ्ग-

मनोहराय नमः

ॐ लक्ष्मीसमर्पितोत्फुल्ल-

कञ्जमालालसद्गलाय नमः

ॐ लक्ष्मीशोभितवक्षस्काय नमः

ॐ वनमालाविराजिताय नमः ५०

ॐ नवरत्नमणीकूटहारशोभित-
 कन्धराय नमः
 ॐ हीरनक्षत्रमालादिशोभारञ्जित-
 दिङ्मुखाय नमः
 ॐ विरजाय नमः
 ॐ अम्बरसंवीताय नमः
 ॐ विशालोरवे नमः
 ॐ पृथुश्रवसे नमः
 ॐ निम्ननाभये नमः
 ॐ सूक्ष्ममध्याय नमः
 ॐ स्थूलजङ्घाय नमः
 ॐ निरञ्जनाय नमः ६०
 ॐ सुलक्षणपदाङ्गुष्ठाय नमः
 ॐ सर्वसामुद्रिकान्विताय नमः
 ॐ अलक्तकारक्तपादाय नमः
 ॐ मूर्तिमते नमः
 ॐ वार्धिपूजिताय नमः
 ॐ सुधार्थान्योन्यसंयुध्यद्देवदैतेय-
 सान्त्वनाय नमः
 ॐ कोटिमन्मथसङ्काशाय नमः
 ॐ सर्वावयवसुन्दराय नमः
 ॐ अमृतास्वादनोद्युक्तदेवसङ्घ-
 परिष्टुताय नमः
 ॐ पुष्पवर्षणसंयुक्तगन्धर्वकुल-
 सेविताय नमः ७०
 ॐ शङ्खतूर्यमृदङ्गादि-
 सुवादित्राप्सरोवृताय नमः

ॐ विष्वक्सेनादियुक्पार्श्वाय नमः
 ॐ सनकादिमुनिस्तुताय नमः
 ॐ साश्चर्यसस्मितचतुर्मुखनेत्र-
 समीक्षिताय नमः
 ॐ साशङ्कसम्भ्रमदितिदनुवंश्य-
 समीडिताय नमः
 ॐ नमनोन्मुखदेवादिमौलीरत्न-
 लसत्पदाय नमः
 ॐ दिव्यतेजसे नमः
 ॐ पुञ्जरूपाय नमः
 ॐ सर्वदेवहितोत्सुकाय नमः
 ॐ स्वनिर्गमक्षुब्धदुग्धवाराशये नमः ८०
 ॐ दुन्दुभिस्वनाय नमः
 ॐ गन्धर्वगीतापदानश्रवणोत्क-
 महामनसे नमः
 ॐ निष्किञ्चनजनप्रीताय नमः
 ॐ भवसम्प्राप्तरोगहृते नमः
 ॐ अन्तर्हितसुधापात्राय नमः
 ॐ महात्मने नमः
 ॐ मायिकाग्रण्ये नमः
 ॐ क्षणार्धमोहिनीरूपाय नमः
 ॐ सर्वस्त्रीशुभलक्षणाय नमः
 ॐ मदमत्तेभगमनाय नमः ९०
 ॐ सर्वलोकविमोहनाय नमः
 ॐ संसन्नीवीग्रन्थिबन्धासक्त-
 दिव्यकराङ्गुलिने नमः

ॐ रत्नदर्वीलसद्धस्ताय नमः
 ॐ देवदैत्यविभागकृते नमः
 ॐ सङ्ख्यातदेवतान्यासाय नमः
 ॐ दैत्यदानववञ्चकाय नमः
 ॐ देवामृतप्रदात्रे नमः
 ॐ परिवेषणहृष्टधिये नमः
 ॐ उन्मुखोन्मुखदैत्येन्द्रदन्त-
 पङ्क्तिविभाजकाय नमः
 ॐ
 पुष्पवत्सुविनिर्दिष्टराहुरक्षःशिरोहराय
 नमः १००
 ॐ राहुकेतुग्रहस्थानपश्चाद्गति-
 विधायकाय नमः

ॐ अमृतालाभनिर्विण्णयुध्यद्देवारि-
 सूदनाय नमः
 ॐ गरुत्मद्वाहनारूढाय नमः
 ॐ सर्वेशस्तोत्रसंयुताय नमः
 ॐ स्वस्वाधिकारसन्तुष्ट-
 शक्रवह्न्यादिपूजिताय नमः
 ॐ मोहिनीदर्शनायात-
 स्थाणुचित्तविमोहकाय नमः
 ॐ शचीस्वाहादिदिक्पालपत्नी-
 मण्डलसन्नुताय नमः
 ॐ वेदान्तवेद्यमहिम्ने नमः
 ॐ सर्वलोकैकरक्षकाय नमः
 ॐ राजराजप्रपूज्याङ्घ्रये नमः ११०
 ॐ चिन्तितार्थप्रदायकाय नमः

॥ इति श्री धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कृतिधा व्यकल्पयन्।
 मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं सुगन्धं सुमनोहरम्।
 धूपं गृहाण देवेश सर्वभूत मनोहर॥

श्री धन्वन्तरये नमः धूपमाग्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
 ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

पशूँश्च मह्यमावह जीवन् च दिशो दिश॥

मा नो हिँसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।

अबिभ्रदग्र आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री धन्वन्तरये नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

- श्री धन्वन्तरये नमः () निवेदयामि,

अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पृथ्वा भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाँ अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री धन्वन्तरये नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।

सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

श्री धन्वन्तरये नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।

तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तत्सत्यम्।

ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व५ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

श्री धन्वन्तरये नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।

स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥ - स्वर्णपुष्पं समर्पयामि

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।

मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।

साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

- अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानं सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥

- छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

धन्वन्तरिजयन्ती-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण धन्वन्तरिपूजायां
यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं श्री धन्वन्त्रिप्रीतिम् कामयमानः

मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया श्री

धन्वन्तरिः प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजा क्रियादिषु।
 न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
 इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
 न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥
 अस्मात् बिम्बात् श्री धन्वन्तरिं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
 (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)
 अनया पूजया श्री धन्वन्तरिः प्रीयताम्।

॥ धन्वन्तरि स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) ॥

क्षीरोदमोतं दिव्य-गन्धानुलेपनम्।
 सुधा-कलश-हस्तं तं वन्दे धन्वन्तरिं हरिम्॥

देव-दानवा ऊचुः

नमो लोक-त्र्याध्यक्ष तेजसा जित-भास्कर।
 नमो विष्णो नमो जिष्णो नमस्ते कैटभार्दन॥१॥

नमः सर्ग-क्रिया-कर्त्रे जगत् पालयते नमः।
 नमः स्मृतार्ति-नाशाय नमः पुष्कर मालिने॥२॥

दिव्यौषधि-स्वरूपाय सुधा-कलश-पाणये।
 शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धारिणे वनमालिने॥३॥

देवेन्द्रादि-सुरेड्याय नमः क्षीराब्धि-जन्मने।
 निर्गुणाय विशेषाय हरये ब्रह्म-रूपिणे॥४॥

जगत् प्रतिष्ठितं यत्र जगतां यो न दृश्यते।
 नमः सूक्ष्मातिसूक्ष्माय तस्मै देवाय शङ्खिने॥५॥

यं न पश्यन्ति पश्यन्तं जगदप्यखिलं नराः।
अपश्यद्विर्जगद् यश्च दृश्यते हृदि संस्थितः॥६॥

यस्मिन् वनानि पर्वता नद्यश्चैवाखिलं जगत्।
तस्मै नमोऽस्तु जगताम् आधाराय नमो नमः॥७॥

आद्य-प्रजापतिर्यश्च यः पितॄणां परः पतिः।
पतिः सुराणां यस्तस्मै नमः कृष्णाय वेधसे॥८॥

यः प्रवृत्तौ निवृत्तौ च इज्यते कर्मभिः स्वकैः।
स्वर्गापवर्ग-फल-दो नमस्तस्मै गदा-भृते॥९॥

यश्चिन्त्यमानो मनसा सद्यः पापं व्यपोहति।
नमस्तस्मै विशुद्धाय पराय हरि-मेधसे॥१०॥

यं बुद्ध्वा सर्वभूतानि देव-देवेशमव्ययम्।
न पुनर्जन्म-मरणे प्राप्नुवन्ति नमामि तम्॥११॥

यो यज्ञे यज्ञ-परमैरिज्यते यज्ञ-संज्ञितः।
तं यज्ञ-पुरुषं विष्णुं नमामि प्रभुमीश्वरम्॥१२॥

गीयते सर्व-वेदेषु वेद-विद्विर्विदां गतिः।
यस्तस्मै वेद-वेद्याय विष्णवे जिष्णवे नमः॥१३॥

यो विश्वं समुत्पन्नं यस्मिंश्च लयमेष्यति।
विश्वोद्भव-प्रतिष्ठाय नमस्तस्मै महात्मने॥१४॥

ब्रह्मादि-स्तम्ब-पर्यन्तं येन विश्वमिदं ततम्।
माया जालं समुत्तर्त्तं तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥१५॥

विषाद-तोष-रोषाद्यैर्योऽजस्रं सुख-दुःखजम्।
नृत्यत्यखिल-भूत-स्थस्तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥१६॥

यमाराध्य विशुद्धेन कर्मणा मनसा गिरा।
तरन्त्यविद्याम् अखिलाम् आदि-वैद्यं नमाम्यहम्॥१७॥

यः स्थितो विश्व-रूपेण बिभर्ति ह्यखिलौषधीः।
तं रत्न-कलशोद्भासि-हस्तं धन्वन्तरिं नुमः॥१८॥

विश्वं विश्व-पतिं विष्णुं तं नमामि प्रजापतिम्।
मूर्त्या चासुरमय्या तु तद्विधान् विनिहन्ति यः॥१९॥

रात्रि-रूपं सूर्य-रूपं भजेत्तं सान्ध्य-रूपिणम्।
हन्ति विद्या-प्रदानेन यो वा अज्ञान-जं तमः॥२०॥

यस्तु भेषज-रूपेण जगदाप्याययेत् सदा।
यस्याक्षिणी चन्द्र-सूर्यौ सर्व-लोक-शुभङ्करः।
पश्यतः कर्म सततं तं च धन्वन्तरिं नुमः॥२१॥

यस्मिन् सर्वेश्वरे वश्यं जगत् स्थावर-जङ्गमम्।
आभाति तमजं विष्णुं नमामि प्रभुमव्ययम्॥२२॥
॥इति मत्स्य-पुराणान्तर्गतं धन्वन्तरि-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥
ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥

॥ श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
 ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सौद सादनम्॥
 अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।
 पादयोः पादं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।
 आचमनीयं समर्पयामि।
 ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
 स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।
 यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
 दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
 गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
 पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥
 धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।
 नैवेद्यम्।
 ताम्बूलं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
 अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
 प्रार्थनाः समर्पयामि।
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
 अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
 कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
 शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
 ()^{२१} नाम संवत्सरे दक्षिनायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे
 अमावास्यायां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /

^{२१}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{२२} नक्षत्र ()^{२३} नाम योग (चतुष्पात्/नागव)
 करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् अमावास्यायां
 शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
 ऐश्वर्याभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
 वृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
 सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
 प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं
 श्रीमहालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं श्रीमहालक्ष्मी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं मातृगणपूजां
 नवग्रहपूजां लोकपाल-पूजां च करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।
 श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय
 च।
 (गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
 त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
 ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
 नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

^{२२}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{२३}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ मातृगणपूजा ॥

- | | |
|---------------------|-----------------------------|
| १. ॐ गौर्यै नमः | ९. ॐ स्वधायै नमः |
| २. ॐ पद्मायै नमः | १०. ॐ स्वाहायै नमः |
| ३. ॐ शक्त्यै नमः | ११. ॐ मातृभ्यो नमः |
| ४. ॐ मेधायै नमः | १२. ॐ लोकमातृभ्यो नमः |
| ५. ॐ सावित्र्यै नमः | १३. ॐ धृत्यै नमः |
| ६. ॐ विजयायै नमः | १४. ॐ पुष्ट्यै नमः |
| ७. ॐ जयायै नमः | १५. ॐ तुष्ट्यै नमः |
| ८. ॐ देवसेनायै नमः | १६. ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः |

षोडश-मातृभ्यो नमः ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। पाद्यं
 समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः।
 शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
 स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।
 आभरणार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।
 दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
 गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
 पुष्पमालिकां समर्पयामि। धूपदीपार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

नैवेद्यम्। (कदलीफलानि)
 कर्पूरताम्बूलं कर्पूरनीराजनार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
 प्रार्थनाः समर्पयामि।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
 निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
 देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
 गणेशेनाधिका ह्येता वरदाभयपाणयः॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ नवग्रहपूजा ॥

(चित्रे दर्शितया रीत्या मण्डलानि प्रतिष्ठाप्य आरभेत।)

| | | |
|---|--|---|
| ५. बुधः हरितवस्त्रम् मुद्र-मण्डलम् | ३. शुक्रः श्वेतवस्त्रम् राजमाष-मण्डलम् | ४. सोमः श्वेतवस्त्रम् तण्डुल-मण्डलम् |
| ६. बृहस्पतिः पीतवस्त्रम् चणक-मण्डलम् | १. आदित्यः रक्तवस्त्रम् गोधूम-मण्डलम् | २. अङ्गारकः रक्तवस्त्रम् आढकी-मण्डलम् |
| ९. केतुः कृष्णवस्त्रम् कुलत्थ-मण्डलम् | ७. शनैश्चरः कृष्णवस्त्रम् तिल-मण्डलम् | ८. राहुः कृष्णवस्त्रम् माष-मण्डलम् |

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥१॥

आ स॒त्येन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो निवेशय॑न्नमृतं॒ मर्त्यं॑ च। हिर॒ण्यये॑न सवि॒ता
रथे॒नाऽदे॒वो या॑ति॒ भुव॑ना विपश्यन्। अ॒ग्निं द॒तुं वृ॑णीमहे॒ होत॑रं वि॒श्ववे॑दसम्।
अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म्॥ येषा॒मीशे॑ पशु॒पतिः॑ पशूनां चतु॑ष्पदामु॒त च॑ द्विपदा॑म्।
निष्क्री॑तोऽयं य॒ज्ञियं॑ भा॒गमे॑तु रा॒यस्पोषा॑ यज॑मानस्य सन्तु॥ अधिदे॒वता
प्रत्यधिदे॒वता स॑हिताय आदित्याय॒ नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं आदित्य-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥२॥

अ॒ग्निर्मूर्द्धा॑ दि॒वः क॒कुत्प॑तिः पृथि॒व्या अ॒यम्। अ॒पा॒ रेता॑सि जिन्वति।
स्यो॒ना पृ॑थिवि॒ भवा॑ऽनृक्षरा निवेश॑नी। यच्छा॑नः शर्म स॒प्रथाः॑। क्षेत्र॑स्य पति॑ना

वयं हिते नैव जयामसि। गामश्च पोषयित्वा स नो मृडातीदृशे॥ अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं अङ्गारक-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥३॥

प्रवः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्रये सुपूतम्॥ यो दैव्यानि
मानुषा जनूष्यन्तर्विश्वानि विद्म न जिगाति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु
सुपत्नीमहमश्रवम्। न ह्यस्या अपरश्चन जरसा मरते पतिः॥ इन्द्र
वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः॥ अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं शुक्र-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदारणवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥४॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णियम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥
अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशम्भुवमापश्च
विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा
चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्। अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं सोम-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥५॥

उद्धृध्यस्वाग्ने॒ प्रति॑जागृह्येनमिष्टापूर्ते॑ स॒ः सृ॑जेथाम॒यं च॑। पुनः॑ कृ॒ण्व॑ऽस्त्वा
पि॒तरं॑ युवा॒नम॒न्वाता॑ऽसी॒त्वयि॑ तन्तुमे॒तम्॥ इ॒दं वि॒ष्णुर्विच॑क्रमे त्रेधा निदधे
प॒दम्। समू॑ढमस्यपा॒ः सुरे॑॥ वि॒ष्णो र॒राट॑मसि॒ विष्णोः॑ पृ॒ष्ठम॑सि॒ विष्णोः॑
श्र॒त्रे॑स्थो वि॒ष्णोः॑ स्यूर॑सि॒ विष्णो॑र्ध्रुवम॑सि॒ वैष्ण॒वम॑सि॒ विष्ण॑वे त्वा। अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय बुधाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं बुध-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥६॥

बृह॑स्पते॒ अति॑य॒दर्यो॑ अ॒र्हो॑द्वि॒मद्वि॑भाति॒ क्रतु॑म॒ञ्जने॑षु। यद्दी॒दय॑च्छ॒वस॑र्त॒प्रजा॑त॒
तद॑स्मा॒सु द्रवि॑णं धेहि चि॒त्रम्॥ इन्द्र॑म॒रुत्व॑ इ॒ह पा॑हि॒ सोमं॑ यथा॒ शार्या॑ते
अपि॑बः सु॒तस्य॑। तव॒ प्रणी॑ती॒ तव॑ शूर॒शर्म॑न्नावि॒वास॑न्ति क॒वयः॑ सुय॒ज्ञाः॥
ब्रह्म॑ज॒ज्ञानं॑ प्र॒थमं॑ पु॒रस्ता॒द्विसी॑म॒तः सुरु॑चो॒ वेन॑ आ॒वः। स॒बुध्नि॑या॒ उप॒मा
अ॒स्य वि॒ष्टाः स॒तश्च॑ योनि॒मस॑तश्च॒ विवः॑॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय
बृहस्पतये नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं बृहस्पति-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥७॥

शं नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शंयो॒रभि॑स्र॒वन्तु॑ नः॥ प्र॒जाप॑ते॒ न
त्वदे॒तान्य॒न्यो वि॒श्वा जा॒तानि॑ परि॒ता ब॑भूव। यत्का॑मास्ते जुहुमस्तन्नो॑ अस्तु
व॒यः॑ स्या॒म प॑त॒यो र॒यीणा॑म्। इ॒मं य॑मप्र॒स्तर॑माहि सी॒दाऽङ्गि॑रोभिः पि॒तृभिः॑
संवि॑दानः। आ॒त्वा म॒न्त्राः क॑वि॒शस्ता॑ व॒हन्त्वे॒ना रा॑जन् ह॒विषा॑ मादयस्व॥
अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं शनैश्चर-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥८॥

कया॑ नश्चि॒त्र आ॒भुव॑दू॒ती सु॒दावृ॑धः सखी॑। कया॑ शचि॑ष्ठया वृ॒ता। आ॒ऽयङ्गौः
पृ॒श्निर॑क्री॒दस॑नन्मा॒तरं पुनः॑। पि॒तरं॑ च प्र॒यन्त्सु॑वः। यत्ते॑ दे॒वी नि॒र्ऋ॑तिराब॒बन्ध॑
दामं॑ ग्री॒वास्व॑विच॒त्यम्। इ॒दं ते॑ तद्वि॒ष्या॒म्यायु॑षो न म॒ध्या॒दथा॑जी॒वः पि॒तुम॑द्धि
प्रमु॑क्तः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं राहु-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥९॥

के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या॑ अपे॒शसे॑। समु॑षद्वि॒रजा॑यथाः॥ ब्र॒ह्मा
दे॒वानां॑ पद॒वीः क॑वी॒नामृ॑षि॒र्विप्रा॑णां म॒हिषो॑ मृ॒गाणा॑म्। श्ये॒नो गृ॑ध्राणा॒ऽः
स्व॒धि॒ति॒र्वना॑ना॒ः सोमः॑ प॒वित्र॑म॒त्येति॑ रेभन्। (ऋक्) सचि॑त्र चि॒त्रं
चि॒तयन्॑ तम॒स्मे चि॒त्रक्ष॑त्र चि॒त्रत॑मं वयो॒धाम्। च॒न्द्रं र॒यिं पु॑रु॒वीरं॑ बृ॒हन्तं॑
च॒न्द्रं च॒न्द्राभि॑र्गृण॒ते यु॑वस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥
अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं केतु-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि।
अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम्
अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

१. ॐ आदित्याय नमः

२. ॐ अङ्गारकाय नमः

३. ॐ शुक्राय नमः

४. ॐ सोमाय नमः

५. ॐ बुधाय नमः

६. ॐ बृहस्पतये नमः

७. ॐ शनैश्चराय नमः

८. ॐ राहवे नमः

९. ॐ केतवे नमः

नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय च।

॥ लोकपालपूजा ॥

प्राणान् आयम्य। ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् अद्य-पूर्वोक्त एवं गुण-विशेषेण विशिष्टायाम् अस्यां अमावास्यायां शुभतिथौ श्रीमहालक्ष्मी-पूजाङ्गभूतां ब्रह्म-विष्णु-त्र्यम्बक-क्षेत्रपाल-पूजां करिष्ये।

अस्मिन् कूर्चे ब्रह्मादीन् ध्यायामि। ब्रह्मन् सरस्वत्या सह इह आगच्छ
आगच्छ। सरस्वती-सहित-ब्रह्माणम् आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

लक्ष्मी-विष्णुभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

दुर्गा-त्र्यम्बकाभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

क्षेत्रपाल-भूमिभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं
समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं
समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान्
समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं
समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं
क्षेमाय पुनरागमनाय च।

॥ प्रार्थना ॥

विघ्नराजं नमस्कृत्य नमस्कृत्य विधिं परम्।
विष्णुं रुद्रं श्रियं दुर्गा वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥

क्षेत्राधिपं नमस्कृत्य दिवानाथं निशाकरम्।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥

दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।
राहुकेतू नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥

शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्च प्रणमाम्यहम्।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥

वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं भृगोः सुतम्।
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य आचार्याश्च तपोधनान्॥

सर्वान् तान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग-पद्मपाणिर्जनार्दनः ॥

सर्वासु दिक्षु रक्षेन्मां यावत् पूजावसानकम्।

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
करकमलधृतेष्टाऽभीतियुग्माम्बुजा च।
मणिमकुटविचित्रालङ्कृता कल्पजातैः

भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥

हिरण्यवर्णां हिरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म् आवह॥१॥

अस्मिन् बिम्बे श्रीमहालक्ष्मीं ध्यायामि।

आवाहये महालक्ष्मि चैतन्यस्तन्यदायिनि।
विष्णुपत्नि जगन्मातः पूजां गृह्णीष्व ते नमः॥

श्रीमहालक्ष्मीम् आवाहयामि।

तां म् आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानुहम्॥२॥

तप्तकाञ्चनवर्णाभं मुक्तामणिविराजितम्।
अमलं कमलं दिव्यम् आसनं प्रतिगृह्यताम्॥

आसनं समर्पयामि।

अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीमादेवीर्जुषताम्॥३॥

गङ्गातीर्थ-समुद्भूतं गन्ध-पुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥

पाद्यं समर्पयामि।

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां
पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥४॥

एलागन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रे प्रपूरितम्।
अर्घ्यं गृहाण मदत्तं प्रसीद त्वं महेश्वरि॥

अर्घ्यं समर्पयामि।

चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं
शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

सर्वलोकस्य या शक्तिः ब्रह्मरुद्रादिभिः स्तुता।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्॥

आचमनीयं समर्पयामि।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि
तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥

घृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

पयसा स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।
 दध्ना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।
 मधुना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।
 पञ्चामृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

(कलशजलेन श्री-सूक्तं जप्य) शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम्
 आचमनीयं समर्पयामि।

उपैतु मां देवसुखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्
 कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥

दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कञ्चुकं च मनोहरम्।
 महालक्ष्मि महादेवि गृहाणदं मयाऽर्पितम्॥
 वस्त्रं समर्पयामि।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृद्धिं च सर्वा
 निर्णुद मे गृहात्॥८॥

माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ताविद्रुमसंयुतम्।
 दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥
 कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नकङ्कणवैडूर्य-मुक्ताहारादिकानि च।
 सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि त्वं गृहाण मे॥
 आभरणानि समर्पयामि।

गन्धद्वारां दुराधरूपां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये
 श्रियम्॥९॥

सिन्दूरारुणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया।
 अतो दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

तिलकं समर्पयामि।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः
श्रेयतां यशः॥१०॥

मन्दार-पारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा।
माकन्दं कुरवं चैव गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥
पुष्पमालां धारयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

१. ॐ चपलायै नमः — पादौ पूजयामि
२. चञ्चलायै नमः — जानुनी पूजयामि
३. कमलायै नमः — कटिं पूजयामि
४. कात्यायन्यै नमः — नाभिं पूजयामि
५. जगन्मात्रे नमः — जठरं पूजयामि
६. विश्ववल्लभायै नमः — वक्षःस्थलं पूजयामि
७. कमलवासिन्यै नमः — हस्तौ पूजयामि
८. पद्माननायै नमः — मुखं पूजयामि
९. कमलपत्राक्ष्यै नमः — नेत्रत्रयं पूजयामि
१०. श्रियै नमः — शिरः पूजयामि
११. महालक्ष्म्यै नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ अष्टलक्ष्मी-अर्चना ॥

(प्राच्याम् आरभ्य अष्टदिक्षु प्रदक्षिणेन)

- | | |
|---------------------------|------------------------|
| १. ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः | ५. ॐ कामलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ योगलक्ष्म्यै नमः |

आद्यादिलक्ष्मीनां षोडशोपचारपूजार्थं पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

- | | | |
|-------------------------|-----------------------|----|
| ॐ प्रकृत्यै नमः | ॐ नित्यपुष्टायै नमः | |
| ॐ विकृत्यै नमः | ॐ विभावयै नमः | २० |
| ॐ विद्यायै नमः | ॐ अदित्यै नमः | |
| ॐ सर्वभूतहितप्रदायै नमः | ॐ दित्यै नमः | |
| ॐ श्रद्धायै नमः | ॐ दीप्तायै नमः | |
| ॐ विभूत्यै नमः | ॐ वसुधायै नमः | |
| ॐ सुरभ्यै नमः | ॐ वसुधारिण्यै नमः | |
| ॐ परमात्मिकायै नमः | ॐ कमलायै नमः | |
| ॐ वाचे नमः | ॐ कान्तायै नमः | |
| ॐ पद्मालयायै नमः | ॐ क्षमायै नमः | |
| ॐ पद्मायै नमः | ॐ क्षीरोदसम्भवायै नमः | |
| ॐ शुचये नमः | ॐ अनुग्रहपदायै नमः | ३० |
| ॐ स्वाहायै नमः | ॐ बुद्धये नमः | |
| ॐ स्वधायै नमः | ॐ अनघायै नमः | |
| ॐ सुधायै नमः | ॐ हरिवल्लभायै नमः | |
| ॐ धन्यायै नमः | ॐ अशोकायै नमः | |
| ॐ हिरण्मय्यै नमः | ॐ अमृतायै नमः | |
| ॐ लक्ष्म्यै नमः | ॐ दीप्तायै नमः | |

ॐ लोकशोकविनाशिन्यै नमः
 ॐ धर्मनिलयायै नमः
 ॐ करुणायै नमः
 ॐ लोकमात्रे नमः ४०
 ॐ पद्मप्रियायै नमः
 ॐ पद्महस्तायै नमः
 ॐ पद्माक्ष्यै नमः
 ॐ पद्मसुन्दर्यै नमः
 ॐ पद्मोद्भवायै नमः
 ॐ पद्ममुख्यै नमः
 ॐ पद्मनाभप्रियायै नमः
 ॐ रमायै नमः
 ॐ पद्ममालाधरायै नमः
 ॐ देव्यै नमः ५०
 ॐ पद्मिन्यै नमः
 ॐ पद्मगन्धिन्यै नमः
 ॐ पुण्यगन्धायै नमः
 ॐ सुप्रसन्नायै नमः
 ॐ प्रसादाभिमुख्यै नमः
 ॐ प्रभायै नमः
 ॐ चन्द्रवदनायै नमः
 ॐ चन्द्रायै नमः
 ॐ चन्द्रसहोदर्यै नमः
 ॐ चतुर्भुजायै नमः ६०
 ॐ चन्द्ररूपायै नमः
 ॐ इन्दिरायै नमः
 ॐ इन्दुशीतलायै नमः

ॐ आह्लादजनन्यै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ शिवायै नमः
 ॐ शिवकर्यै नमः
 ॐ सत्यै नमः
 ॐ विमलायै नमः
 ॐ विश्वजनन्यै नमः ७०
 ॐ तुष्ट्यै नमः
 ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
 ॐ प्रीतिपुष्करिण्यै नमः
 ॐ शान्तायै नमः
 ॐ शुक्लमाल्याम्बरायै नमः
 ॐ श्रियै नमः
 ॐ भास्कर्यै नमः
 ॐ बिल्वनिलयायै नमः
 ॐ वरारोहायै नमः
 ॐ यशस्विन्यै नमः ८०
 ॐ वसुन्धरायै नमः
 ॐ उदाराङ्गायै नमः
 ॐ हरिण्यै नमः
 ॐ हेममालिन्यै नमः
 ॐ धनधान्यकर्यै नमः
 ॐ सिद्ध्यै नमः
 ॐ स्रैणसौम्यायै नमः
 ॐ शुभप्रदायै नमः
 ॐ नृपवेश्मगतानन्दायै नमः
 ॐ वरलक्ष्म्यै नमः ९०

ॐ वसुप्रदायै नमः
 ॐ शुभायै नमः
 ॐ हिरण्यप्राकारायै नमः
 ॐ समुद्रतनयायै नमः
 ॐ जयायै नमः
 ॐ मङ्गलायै देव्यै नमः
 ॐ विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः
 ॐ विष्णुपत्न्यै नमः
 ॐ प्रसन्नाक्ष्यै नमः

ॐ नारायणसमाश्रितायै नमः १००
 ॐ दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः
 ॐ देव्यै नमः
 ॐ सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः
 ॐ नवदुर्गायै नमः
 ॐ महाकाल्यै नमः
 ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः
 ॐ त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः
 ॐ भुवनेश्वर्यै नमः

॥ इति श्री लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्गपूजा ॥

कुर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कुर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं
 पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥

वनस्पति-रसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
 आग्नेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिकीत वंस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं
 वासयं मे कुले ॥ १२ ॥

कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।
 तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि ॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हैममालिनीम्। सूर्या हिरण्मयीं लक्ष्मीं
जातवेदो म आवह॥१३॥

नैवेद्यं गृह्यतां लक्ष्मि भक्ष्य-भोज्य-समन्वितम्।
षड्रसैरर्चितं दिव्यं लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते॥

नैवेद्यम्

- श्री महालक्ष्म्यै नमः () निवेदयामि,

अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

श्री महालक्ष्म्यै नमः समस्त अपराध क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

य एव वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तत्सत्यम्।

ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व५ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

श्री महालक्ष्म्यै नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि

॥ ईशानादि पूजा ॥

- ॐ ईशानाय नमः
 ॐ शचिने नमः
 ॐ मरुद्भ्यो नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
 ॐ अमरराजाय नमः
 ॐ सूर्याय नमः
 ॐ विश्वकर्मणे नमः
 ॐ गुरवे नमः
 ॐ अथर्वाङ्गिरोभ्यां नमः
 ॐ अश्विभ्यां नमः
 ॐ मित्रावरुणाभ्यां नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ ईशानादिभ्यो नमः

षोडशोपचार-पूजार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ कुबेर पूजा ॥

धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माय ते नमः।
 भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यानि सम्पदः॥

कुबेरं पुष्पकगतं निधिभिर्नवभिर्युतम्।
 सुवर्णवर्णं पिङ्गाक्षं मनसा भावयाम्यहम्॥

नरवाहन यक्षेश सर्वपुण्यजनेश्वर।

कुबेराय नमः, षोडशोपचारपूजां करिष्ये। कुबेराय नमः, आवाहयामि।

कुबेराय नमः, आसनं समर्पयामि। कुबेराय नमः, पाद्यं समर्पयामि। कुबेराय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि। कुबेराय नमः, आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, वस्त्रं समर्पयामि। कुबेराय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। कुबेराय नमः, अक्षतान् समर्पयामि। कुबेराय नमः, पुष्पैः पूजयामि। कुबेराय नमः, धूपमाघ्रापयामि। कुबेराय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। कुबेराय नमः, कदलीफलानि निवेदयामि,
 कुबेराय नमः, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय नमः, समस्तोपचारान् समर्पयामि।

मनुजबाह्यविमानवरस्तुतम्
 गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।
 शिवसखं मुकुटादिविभूषितम्
 वररुचिं तमहमुपास्महे सदा॥

अगस्त्य देवदेवेश मर्त्यलोकहितेच्छया।
 पूजयामि विधानेन प्रसन्नसुमुखो भव॥

॥ कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ कुबेराय नमः

ॐ धनदाय नमः

ॐ श्रीमते नमः

ॐ यक्षेशाय नमः

ॐ गुह्यकेश्वराय नमः

ॐ निधीशाय नमः

ॐ शङ्करसखाय नमः

ॐ महालक्ष्मीनिवासभुवे नमः

ॐ महापद्मनिधीशाय नमः

ॐ पूर्णाय नमः

ॐ पद्मनिधीश्वराय नमः

ॐ शङ्खाख्यनिधिनाथाय नमः

ॐ मकराख्यनिधिप्रियाय नमः
 ॐ सुकच्छपाख्यनिधीशाय नमः
 ॐ मुकुन्दनिधिनायकाय नमः
 ॐ कुन्दाख्यनिधिनाथाय नमः
 ॐ नीलनित्याधिपाय नमः
 ॐ महते नमः
 ॐ वरनिधिदीपाय नमः
 ॐ पूज्याय नमः २०
 ॐ लक्ष्मीसाम्राज्यदायकाय नमः
 ॐ इलपिलापत्याय नमः
 ॐ कोशाधीशाय नमः
 ॐ कुलोचिताय नमः
 ॐ अश्वारूढाय नमः
 ॐ विश्ववन्द्याय नमः
 ॐ विशेषज्ञाय नमः
 ॐ विशारदाय नमः
 ॐ नलकूबरनाथाय नमः
 ॐ मणिग्रीवपित्रे नमः ३०
 ॐ गूढमन्त्राय नमः
 ॐ वैश्रवणाय नमः
 ॐ चित्रलेखामनःप्रियाय नमः
 ॐ एकपिनाकाय नमः
 ॐ अलकाधीशाय नमः
 ॐ पौलस्त्याय नमः
 ॐ नरवाहनाय नमः
 ॐ कैलासशैलनिलयाय नमः
 ॐ राज्यदाय नमः

ॐ रावणाग्रजाय नमः ४०
 ॐ चित्रचैत्ररथाय नमः
 ॐ उद्यानविहाराय नमः
 ॐ विहारसुकुतूहलाय नमः
 ॐ महोत्सहाय नमः
 ॐ महाप्राज्ञाय नमः
 ॐ सदापुष्पकवाहनाय नमः
 ॐ सार्वभौमाय नमः
 ॐ अङ्गनाथाय नमः
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ सौम्यादिकेश्वराय नमः ५०
 ॐ पुण्यात्मने नमः
 ॐ पुरुहुतश्रियै नमः
 ॐ सर्वपुण्यजनेश्वराय नमः
 ॐ नित्यकीर्तये नमः
 ॐ निधिवेत्रे नमः
 ॐ लङ्काप्राक्तननायकाय नमः
 ॐ यक्षिणीवृताय नमः
 ॐ यक्षाय नमः
 ॐ परमशान्तात्मने नमः
 ॐ यक्षराजे नमः ६०
 ॐ यक्षिणीहृदयाय नमः
 ॐ किन्नरेश्वराय नमः
 ॐ किम्पुरुषनाथाय नमः
 ॐ खड्गायुधाय नमः
 ॐ वशिने नमः
 ॐ ईशानदक्षपार्श्वस्थाय नमः

ॐ वायुवामसमाश्रयाय नमः
 ॐ धर्ममार्गनिरताय नमः
 ॐ धर्मसम्मुखसंस्थिताय नमः
 ॐ नित्येश्वराय नमः ७०
 ॐ धनाध्यक्षाय नमः
 ॐ अष्टलक्ष्म्याश्रितालयाय नमः
 ॐ मनुष्यधर्मिणे नमः
 ॐ सुकृतिने नमः
 ॐ कोषलक्ष्मीसमाश्रिताय नमः
 ॐ धनलक्ष्मीनित्यवासाय नमः
 ॐ धान्यलक्ष्मीनिवासभुवे नमः
 ॐ अष्टलक्ष्मीसदावासाय नमः
 ॐ गजलक्ष्मीस्थिरालयाय नमः
 ॐ राज्यलक्ष्मीजन्मगेहाय नमः ८०
 ॐ धैर्यलक्ष्मीकृपाश्रयाय नमः
 ॐ अखण्डैश्वर्यसंयुक्ताय नमः
 ॐ नित्यानन्दाय नमः
 ॐ सुखाश्रयाय नमः
 ॐ नित्यतृप्ताय नमः
 ॐ निराशाय नमः
 ॐ निरुपद्रवाय नमः
 ॐ नित्यकामाय नमः

ॐ निराकाङ्क्षाय नमः
 ॐ निरूपाधिकवासभुवे नमः ९०
 ॐ शान्ताय नमः
 ॐ सर्वगुणोपेताय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ सर्वसम्मताय नमः
 ॐ सर्वाणिकरुणापात्राय नमः
 ॐ सदानन्दकृपालयाय नमः
 ॐ गन्धर्वकुलसंसेव्याय नमः
 ॐ सौगन्धिककुसुमप्रियाय नमः
 ॐ स्वर्णनगरीवासाय नमः
 ॐ निधिपीठसमाश्रयाय नमः १००
 ॐ महामेरूत्तरस्थाय नमः
 ॐ महर्षिगणसंस्तुताय नमः
 ॐ तुष्टाय नमः
 ॐ शूर्पणखाज्येष्ठाय नमः
 ॐ शिवपूजारताय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ राजयोगसमायुक्ताय नमः
 ॐ राजशेखरपूज्याय नमः
 ॐ राजराजाय नमः

॥ इति श्री-कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ नमस्कारः ॥

नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
 नमस्तेऽस्तु जगन्मातः नमस्ते केशवप्रिये॥

महालक्ष्म्यै नमः, नमस्करोमि॥

॥ प्रार्थना ॥

दामोदरि नमस्तेऽस्तु नमस्त्रैलोक्यमातृके।
नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वरि॥

सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानायापि च भुक्तये।
धनधान्यं धरां हर्षं कीर्तिम् आयुश्च देहि मे॥

यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु।
न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटं मे निवारय॥

॥ अपराध-क्षमापनम् ॥

न्यूनं वाऽप्यगुणं वाऽपि यन्मया मोहितं कृतम्।
सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

लक्ष्मि त्वत्कृपया नित्यं कृता पूजा तवाऽऽज्ञया।
स्थिरा भव गृहे ह्यस्मिन् मम सन्तानकर्मणि॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

आश्वयुज-अमावास्या-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण श्रीमहालक्ष्मी-
पूजायां यद्वेद्यमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं श्री महालक्ष्मीप्रीतिं
कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया
श्री महालक्ष्मीः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ श्री-स्कन्द-षष्ठी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^{२४}
नाम संवत्सरे दक्षिनायने शरद्-ऋतौ तुला/वृश्चिक-मासे कार्तिक-शुक्लपक्षे
षष्ठ्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु)
वासरयुक्तायाम् ()^{२५} नक्षत्र ()^{२६} नाम योग (कौलव/तैतिल) करण
युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां षष्ठ्यां शुभतिथौ

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं प्रसाद-सिद्ध्यर्थम् अस्माकं
सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणाम् अभिवृद्ध्यर्थं
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्ट-
काम्यार्थसिद्ध्यर्थं मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां
ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां
सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं गो-भू-धन-धान्य-
पुत्र-पौत्रादि अनविच्छिन्न-सन्तति स्थिर-लक्ष्मी-कीर्ति-लाभ शत्रु-पराजयादि
सदभीष्ट-सिद्ध्यर्थं दिव्यज्ञान-सिद्ध्यर्थं

यावच्छक्ति-ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैः कल्पोक्त-प्रकारेण श्री-वल्ली-
देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-पूजाराधनं करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

^{२४}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^{२५}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{२६}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः, यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
कुरु घण्टारवं तत्र देवताऽऽह्वानलाञ्छनम्॥

॥ कलशपूजा ॥

(कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अभ्यर्च्य)

गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। गोदावर्यै नमः। सरस्वत्यै नमः। नर्मदायै नमः।
सिन्धवे नमः। कावेर्यै नमः।
सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्।)

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

॥ मण्टप-पूजा ॥

ॐ ह्रीं श्रीं मण्डूकादि-परतत्त्वात्म-पर्यन्त-पीठ-शक्ति-देवताभ्यो नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं शं शकुन्यै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं रं रेवत्यै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं पूं पूताय नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं मं महापूतायै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं निं निशीथिन्यै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं मां मालिन्यै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं शीं शीतलायै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं शुं शुद्धायै नमः।
 ॐ ह्रीं श्रीं विं विश्वतोमुख्यै नमः।

षोडशोपचारपूजा

सिन्धूरारुणमिन्दुकान्तिवदनं केयूरहारादिभिः
 दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गादिसौख्यप्रदम्।
 अम्भोजाभयशक्तिकुक्कुटधरं रक्ताङ्गराकोज्ज्वलं
 सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं
 श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् ध्यायामि।

षड्वक्त्रं शिखिवाहनं त्रिनयनं चित्राम्बरालङ्कृतम्
 वज्रं शक्तिमसिं त्रिशूलमभयं खेटं धनुश्चक्रकम्।
 पाशं कुक्कुटमङ्कुशं च वरदं दोर्भिर्दधानं सदा
 ध्यायेदीप्सितसिद्धिदं शिवसुतं स्कन्दं सुराराधितम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं
 श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् आवाहयामि।

आवाहिता भव। संस्थापिता भव।
 सन्निहिता भव। सन्निरुद्धा भव।
 अवकुण्ठिता भव। सुप्रीता भव।
 सुप्रसन्ना भव। वरदा भव।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्।
 तावत् त्वं प्रीतिभावेन दीपेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते।
 आसनं दिव्यमीशान दास्येयं परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः आसनं समर्पयामि।

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दविग्रह।
 तस्मै ते शरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः पाद्यं समर्पयामि।

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।
 तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

वेदानामपि वेद्याय देवानां देवतात्मने।
 आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः आचमनीयं समर्पयामि।

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
 तेजःपुष्टिकरं दिव्यं प्रतिगृह्णीष्व देवेश॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-स्सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
 पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः पञ्चामृत-स्नानं समर्पयामि।

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः क्षीरस्नानं समर्पयामि।

भागीरथी यमुना चैव गौतमी च सरस्वती।
तासां सुसलिलमादाय करोमि त्वामभिषेचनम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः स्नानं समर्पयामि।

स्नानान्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः वस्त्रं समर्पयामि।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतात्मकम्।
उपवीतं प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

मुक्ता-माणिक्य-वैडूर्य-रत्न-हेमादि-निर्मितम्।
नानाभरणं दास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः नवमणि-मकुटादि
नानाभरणम् समर्पयामि।

चन्दनागरुकर्पूरकस्तूरीकुङ्कुमान्वितम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः गन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ता सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृह्यतां परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः अक्षतान् समर्पयामि।

मन्दार-पारिजाताब्ज-केतक्युत्पल-पाटलैः ।

मल्लिका-जाति-वकुलैः पुष्पैस्त्वां पूजयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः मल्लिकादि-सर्वर्तु-पुष्पमालाः
समर्पयामि।

॥ अङ्गपूजा ॥

- | | |
|----------------------------------|-----------------------|
| १. शरवणोद्धृताय नमः | — पादौ पूजयामि। |
| २. रौद्रेयाय नमः | — जङ्घे पूजयामि। |
| ३. सहस्रपदे नमः | — जानुनी पूजयामि। |
| ४. भयनाशनाय नमः | — ऊरू पूजयामि। |
| ५. बालग्रहाच्छाटनाय नमः | — मेढ्रं पूजयामि। |
| ६. भक्तपालनाय नमः | — गुह्यं पूजयामि। |
| ७. गुणनिधये नमः | — कटिं पूजयामि। |
| ८. महनीयाय नमः | — नाभिं पूजयामि। |
| ९. सर्वाभीष्टप्रदाय नमः | — हृदयं पूजयामि। |
| १०. विशालवक्षसे नमः | — वक्षस्थलं पूजयामि। |
| ११. शक्तिधराय नमः | — हस्तान् पूजयामि। |
| १२. अभयप्रदानाय नमः | — बाहून् पूजयामि। |
| १३. नीलकण्ठ-तनयाय नमः | — कण्ठान् पूजयामि। |
| १४. पतित-पावनाय नमः | — चुबुकानि पूजयामि। |
| १५. पुरुष-श्रेष्ठाय नमः | — नासिकानि पूजयामि। |
| १६. कमललोचनाय नमः | — लोचनानि पूजयामि। |
| १७. पुण्यमूर्तये नमः | — श्रोत्राणि पूजयामि। |
| १८. कस्तूरी-तिलकाञ्चित-फालाय नमः | — ललाटानि पूजयामि। |
| १९. षडाननाय नमः | — मुखानि पूजयामि। |
| २०. त्रिलोकगुरवे नमः | — ओष्ठानि पूजयामि। |

२२. सहस्रशीर्ष्णे नमः — शिरांसि पूजयामि।
 २३. भस्मोद्धूलित-विग्रहाय नमः — सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि।

॥ षोडश-नामपूजा ॥

- | | |
|----------------------------|-------------------------|
| १. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः | ९. ॐ षण्मुखाय नमः |
| २. ॐ स्कन्दाय नमः | १०. ॐ कुक्कुटध्वजाय नमः |
| ३. ॐ अग्निभुवे नमः | ११. ॐ शक्तिधराय नमः |
| ४. ॐ बाहुलेयाय नमः | १२. ॐ गुहाय नमः |
| ५. ॐ गाङ्गेयाय नमः | १३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः |
| ६. ॐ शरवणोद्धवाय नमः | १४. ॐ षण्मातुराय नमः |
| ७. ॐ कार्तिकेयाय नमः | १५. ॐ क्रौञ्चभिन्ने नमः |
| ८. ॐ कुमाराय नमः | १६. ॐ शिखिवाहनाय नमः |

॥ सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

- | | |
|----------------------|-------------------------|
| ॐ स्कन्दाय नमः | ॐ पिशिताशप्रभञ्जनाय नमः |
| ॐ गुहाय नमः | ॐ तारकासुरसंहारिणे नमः |
| ॐ षण्मुखाय नमः | ॐ रक्षोबलविमर्दनाय नमः |
| ॐ फालनेत्रसुताय नमः | ॐ मत्ताय नमः |
| ॐ प्रभवे नमः | ॐ प्रमत्ताय नमः |
| ॐ पिङ्गलाय नमः | ॐ उन्मत्ताय नमः |
| ॐ कृत्तिकासूनवे नमः | ॐ सुरसैन्यसुरक्षकाय नमः |
| ॐ शिखिवाहाय नमः | ॐ देवसेनापतये नमः |
| ॐ द्विषड्भुजाय नमः | ॐ प्राज्ञाय नमः |
| ॐ द्विषण्णेत्राय नमः | ॐ कृपालवे नमः |
| ॐ शक्तिधराय नमः | ॐ भक्तवत्सलाय नमः |

| | | | |
|---------------------------|----|--------------------|----|
| ॐ उमासुताय नमः | | ॐ चतुर्वर्णाय नमः | ५० |
| ॐ शक्तिधराय नमः | | ॐ पञ्चवर्णाय नमः | |
| ॐ कुमाराय नमः | | ॐ प्रजापतये नमः | |
| ॐ क्रौञ्चदारणाय नमः | | ॐ अहस्पतये नमः | |
| ॐ सेनानिने नमः | | ॐ अग्निगर्भाय नमः | |
| ॐ अग्निजन्मने नमः | | ॐ शमीगर्भाय नमः | |
| ॐ विशाखाय नमः | | ॐ विश्वरेतसे नमः | |
| ॐ शङ्करात्मजाय नमः | ३० | ॐ सुरारिघ्ने नमः | |
| ॐ शिवस्वामिने नमः | | ॐ हरिद्वर्णाय नमः | |
| ॐ गणस्वामिने नमः | | ॐ शुभकराय नमः | |
| ॐ सर्वस्वामिने नमः | | ॐ वटवे नमः | ६० |
| ॐ सनातनाय नमः | | ॐ पटुवेषभृते नमः | |
| ॐ अनन्तमूर्तये नमः | | ॐ पूष्णे नमः | |
| ॐ अक्षोभ्याय नमः | | ॐ गभस्तये नमः | |
| ॐ पार्वतीप्रियनन्दनाय नमः | | ॐ गहनाय नमः | |
| ॐ गङ्गासुताय नमः | | ॐ चन्द्रवर्णाय नमः | |
| ॐ शरोद्भूताय नमः | | ॐ कलाधराय नमः | |
| ॐ आहूताय नमः | ४० | ॐ मायाधराय नमः | |
| ॐ पावकात्मजाय नमः | | ॐ महामायिने नमः | |
| ॐ जृम्भाय नमः | | ॐ कैवल्याय नमः | |
| ॐ प्रजृम्भाय नमः | | ॐ शङ्करात्मजाय नमः | ७० |
| ॐ उज्जृम्भाय नमः | | ॐ विश्वयोनये नमः | |
| ॐ कमलासनसंस्तुताय नमः | | ॐ अमेयात्मने नमः | |
| ॐ एकवर्णाय नमः | | ॐ तेजोयोनये नमः | |
| ॐ द्विवर्णाय नमः | | ॐ अनामयाय नमः | |
| ॐ त्रिवर्णाय नमः | | ॐ परमेष्ठिने नमः | |
| ॐ सुमनोहराय नमः | | ॐ परब्रह्मणे नमः | |

ॐ वेदगर्भाय नमः
 ॐ विराट्पुताय नमः
 ॐ पुलिन्दकन्याभर्त्रे नमः
 ॐ महासारस्वतावृताय नमः ८०
 ॐ आश्रिताखिलदात्रे नमः
 ॐ चोरघ्नाय नमः
 ॐ रोगनाशनाय नमः
 ॐ अनन्तमूर्तये नमः
 ॐ आनन्दाय नमः
 ॐ शिखण्डिने नमः
 ॐ कृतकेतनाय नमः
 ॐ डम्भाय नमः
 ॐ परमडम्भाय नमः
 ॐ महाडम्भाय नमः ९०
 ॐ वृषाकपये नमः
 ॐ कारणोत्पत्ति-देहाय नमः

ॐ कारणातीत-विग्रहाय नमः
 ॐ अनीश्वराय नमः
 ॐ अमृताय नमः
 ॐ प्राणाय नमः
 ॐ प्राणायामपरायणाय नमः
 ॐ विरुद्धहन्त्रे नमः
 ॐ वीरघ्नाय नमः
 ॐ रक्तश्यामगलाय नमः १००
 ॐ सुब्रह्मण्याय नमः
 ॐ गुहाय नमः
 ॐ प्रीताय नमः
 ॐ ब्रह्मण्याय नमः
 ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः
 ॐ वंशवृद्धिकराय नमः
 ॐ वेदवेद्याय नमः
 ॐ अक्षयफलप्रदाय नमः

॥इति श्री सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ वल्ली अष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ महावल्लभे नमः
 ॐ वन्द्यायै नमः
 ॐ वनवासायै नमः
 ॐ वरलक्ष्म्यै नमः
 ॐ वरप्रदायै नमः
 ॐ वाणीस्तुतायै नमः

ॐ वीतमोहायै नमः
 ॐ वामदेवसुतप्रियायै नमः
 ॐ वैकुण्ठतनयायै नमः
 ॐ वर्यायै नमः १०
 ॐ वनेचरसमादृतायै नमः
 ॐ दयापूर्णायै नमः

ॐ दिव्यरूपायै नमः
 ॐ दारिद्र्यभयनाशिन्यै नमः
 ॐ देवस्तुतायै नमः
 ॐ दैत्यहृत्र्यै नमः
 ॐ दोषहीनायै नमः
 ॐ दयाम्बुधये नमः
 ॐ दुःखहृत्र्यै नमः
 ॐ दुष्टदूरायै नमः २०
 ॐ दुरितघ्न्यै नमः
 ॐ दुरासदायै नमः
 ॐ नाशहीनायै नमः
 ॐ नागनुतायै नमः
 ॐ नारदस्तुतवैभवायै नमः
 ॐ लवलीकुञ्जसम्भूतायै नमः
 ॐ ललितायै नमः
 ॐ ललनोत्तमायै नमः
 ॐ शान्तदोषायै नमः
 ॐ शर्मदात्र्यै नमः ३०
 ॐ शरजन्मकुटुम्बिन्यै नमः
 ॐ पद्मिन्यै नमः
 ॐ पद्मवदनायै नमः
 ॐ पद्मनाभसुतायै नमः
 ॐ परायै नमः
 ॐ पूर्णरूपायै नमः
 ॐ पुण्यशीलायै नमः
 ॐ प्रियङ्गुवनपालिन्यै नमः
 ॐ सुन्दर्यै नमः

ॐ सुरसंस्तुतायै नमः ४०
 ॐ सुब्रह्मण्यकुटुम्बिन्यै नमः
 ॐ मान्यायै नमः
 ॐ मनोहरायै नमः
 ॐ मायायै नमः
 ॐ महेश्वरसुतप्रियायै नमः
 ॐ कुमार्यै नमः
 ॐ करुणापूर्णायै नमः
 ॐ कार्तिकेयमनोहरायै नमः
 ॐ पद्मनेत्रायै नमः
 ॐ परानन्दायै नमः ५०
 ॐ पार्वतीसुतवल्लभायै नमः
 ॐ महादेव्यै नमः
 ॐ महामायायै नमः
 ॐ मल्लिकाकुसुमप्रियायै नमः
 ॐ चन्द्रवक्त्रायै नमः
 ॐ चारुरूपायै नमः
 ॐ चाम्पेयकुसुमप्रियायै नमः
 ॐ गिरिवासायै नमः
 ॐ गुणनिधये नमः
 ॐ गतावन्यायै नमः ६०
 ॐ गुहप्रियायै नमः
 ॐ कलिहीनायै नमः
 ॐ कलारूपायै नमः
 ॐ कृत्तिकासुतकामिन्यै नमः
 ॐ गतदोषायै नमः
 ॐ गीतगुणायै नमः

ॐ गङ्गाधरसुतप्रियायै नमः
 ॐ भद्ररूपायै नमः
 ॐ भगवत्यै नमः
 ॐ भाग्यदायै नमः ७०
 ॐ भवहारिण्यै नमः
 ॐ भवहीनायै नमः
 ॐ भव्यदेहायै नमः
 ॐ भवात्मजमनोहरायै नमः
 ॐ सौम्यायै नमः
 ॐ सर्वेश्वर्यै नमः
 ॐ सत्यायै नमः
 ॐ साध्व्यै नमः
 ॐ सिद्धसमर्चितायै नमः
 ॐ हानिहीनायै नमः ८०
 ॐ हरिसुतायै नमः
 ॐ हरसूनुमनःप्रियायै नमः
 ॐ कल्याण्यै नमः
 ॐ कमलायै नमः
 ॐ कल्यायै नमः
 ॐ कुमारसुमनोहरायै नमः
 ॐ जन्महीनायै नमः

ॐ जन्महृत्र्यै नमः
 ॐ जनार्दनसुतायै नमः
 ॐ जयायै नमः ९०
 ॐ रमायै नमः
 ॐ रामायै नमः
 ॐ रम्यरूपायै नमः
 ॐ राज्ञ्यै नमः
 ॐ राजवरादृतायै नमः
 ॐ नीतिज्ञायै नमः
 ॐ निर्मलायै नमः
 ॐ नित्यायै नमः
 ॐ नीलकण्ठसुतप्रियायै नमः
 ॐ शिवरूपायै नमः १००
 ॐ सुधाकारायै नमः
 ॐ शिखिवाहनवल्लभायै नमः
 ॐ व्याधात्मजायै नमः
 ॐ व्याधिहृत्र्यै नमः
 ॐ विविधागमसंस्तुतायै नमः
 ॐ हर्षदात्र्यै नमः
 ॐ हरिभवायै नमः
 ॐ हरसूनुप्रियङ्गनायै नमः

॥ इति श्री वल्लभष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ देवसेना अष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ देवसेनायै नमः
 ॐ देवलोकजनन्यै नमः
 ॐ दिव्यसुन्दर्यै नमः
 ॐ देवपूज्यायै नमः
 ॐ दयारूपायै नमः
 ॐ दिव्याभरणभूषितायै नमः
 ॐ दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
 ॐ देव्यै नमः
 ॐ दिव्यपङ्कजधारिण्यै नमः
 ॐ दुःस्वप्ननाशिन्यै नमः
 ॐ दुष्टशमन्यै नमः
 ॐ दोषवर्जितायै नमः
 ॐ पीताम्बरायै नमः
 ॐ पद्मवासायै नमः
 ॐ परानन्दायै नमः
 ॐ परात्परायै नमः
 ॐ पूर्णायै नमः
 ॐ परमकल्याण्यै नमः
 ॐ प्रकटायै नमः
 ॐ पापनाशिन्यै नमः
 ॐ प्राणेश्वर्यै नमः
 ॐ परायै शक्त्यै नमः
 ॐ परमायै नमः
 ॐ परमेश्वर्यै नमः
 ॐ महावीर्यायै नमः
 ॐ महाभोगायै नमः
 ॐ महापूज्यायै नमः

१०

२०

ॐ महाबलायै नमः
 ॐ माहेन्द्र्यै नमः
 ॐ महत्यै नमः
 ॐ मायायै नमः
 ॐ मुक्ताहारविभूषितायै नमः
 ॐ ब्रह्मानन्दायै नमः
 ॐ ब्रह्मरूपायै नमः
 ॐ ब्रह्माण्यै नमः
 ॐ ब्रह्मपूजितायै नमः
 ॐ कार्तिकेयप्रियायै नमः
 ॐ कान्तायै नमः
 ॐ कामरूपायै नमः
 ॐ कलाधरायै नमः
 ॐ विष्णुपूज्यायै नमः
 ॐ विश्ववेद्यायै नमः
 ॐ वेदवेद्यायै नमः
 ॐ वज्रिजातायै नमः
 ॐ वरप्रदायै नमः
 ॐ विशाखकान्तायै नमः
 ॐ विमलायै नमः
 ॐ विशालाक्ष्यै नमः
 ॐ सत्यसन्धायै नमः
 ॐ सत्प्रभावायै नमः
 ॐ सिद्धिदायै नमः
 ॐ स्कन्दवल्लभायै नमः
 ॐ सुरेश्वर्यै नमः
 ॐ सर्ववन्द्यायै नमः

३०

४०

५०

| | | | |
|-----------------------|----|----------------------------|-----|
| ॐ सुन्दर्यै नमः | | ॐ शर्मदायै नमः | |
| ॐ साम्यवर्जितायै नमः | | ॐ शक्रतनयायै नमः | |
| ॐ हतदैत्यायै नमः | | ॐ शङ्करात्मजवल्लभायै नमः | |
| ॐ हानिहीनायै नमः | | ॐ शुभायै नमः | |
| ॐ हर्षदात्र्यै नमः | | ॐ शुभप्रदायै नमः | |
| ॐ हतासुरायै नमः | ६० | ॐ शुद्धायै नमः | |
| ॐ हितकर्त्र्यै नमः | | ॐ शरणागतवत्सलायै नमः | |
| ॐ हीनदोषायै नमः | | ॐ मयूरवाहनदयितायै नमः | |
| ॐ हेमाभायै नमः | | ॐ महामहिमशालिन्यै नमः | ९० |
| ॐ हेमभूषणायै नमः | | ॐ मदहीनायै नमः | |
| ॐ लयहीनायै नमः | | ॐ मातृपूज्यायै नमः | |
| ॐ लोकवन्द्यायै नमः | | ॐ मन्मथारिसुतप्रियायै नमः | |
| ॐ ललितायै नमः | | ॐ गुणपूर्णायै नमः | |
| ॐ ललनोत्तमायै नमः | | ॐ गणाराध्यायै नमः | |
| ॐ लम्बवामकरायै नमः | | ॐ गौरीसुतमनःप्रियायै नमः | |
| ॐ लभ्यायै नमः | ७० | ॐ गतदोषायै नमः | |
| ॐ लज्जाढ्यायै नमः | | ॐ गतावद्यायै नमः | |
| ॐ लाभदायिन्यै नमः | | ॐ गङ्गाजातकुटुम्बिन्यै नमः | |
| ॐ अचिन्त्यशक्त्यै नमः | | ॐ चतुरायै नमः | १०० |
| ॐ अचलायै नमः | | ॐ चन्द्रवदनायै नमः | |
| ॐ अचिन्त्यरूपायै नमः | | ॐ चन्द्रचूडभवप्रियायै नमः | |
| ॐ अक्षरायै नमः | | ॐ रम्यरूपायै नमः | |
| ॐ अभयायै नमः | | ॐ रमावन्द्यायै नमः | |
| ॐ अम्बुजाक्ष्यै नमः | | ॐ रुद्रसूनुमनःप्रियायै नमः | |
| ॐ अमराराध्यायै नमः | | ॐ मङ्गलायै नमः | |
| ॐ अभयदायै नमः | ८० | ॐ मधुरालापायै नमः | |
| ॐ असुरभीतिदायै नमः | | ॐ महेशतनयप्रियायै नमः | |

॥इति श्री देवसेना अष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः
नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

दशाङ्गं च पटीरं च एला-कुङ्कुम-संयुतम्।
धूपं गृहाण देवेश सुब्रह्मण्य नमोऽस्तु ते॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः धूपम् आघ्रापयामि।

इन्द्रर्कवहिनेत्राय देवसेनापतये नमः।
घृतवर्तिसुसंयुक्तं दीपोऽयम् अवलोक्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः दीपं दर्शयामि।
धूप-दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेक-भक्षणम्।
निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत्॥१॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः () महानैवेद्यं निवेदयामि।
मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं
समर्पयामि। पुनः हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। पाद-प्रक्षालनं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं देवदेव सूर्यकोटि-समप्रभ।
अहं भक्त्या प्रदास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि।
पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि।

सर्व-पापौघ-विध्वंस साक्षाद्धर्मस्वरूपक।
पुष्पाञ्जलिं प्रदास्यामि गृहाण भुवनेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

षण्मुखं पार्वतीपुत्रं क्रौञ्चशैलविमर्दनम्।
देवसेनापतिं देवं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

तारकासुर-हन्तारं मयूरोपरि संस्थितम्।
शक्तिपाणिं च देवेशं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः प्रदक्षिण-नमस्कारान्
समर्पयामि।

नमः केकिने शक्तये चापि तुभ्यम्
नमश्छाग तुभ्यं नमः कुक्कुटाय।
नमः सिन्धवे सिन्धुदेशाय तुभ्यम्
पुनः स्कन्दमूर्ते नमस्ते नमोऽस्तु॥

जयाऽऽनन्दभूमन् जयापारधामन्
जयामोघकीर्ते जयाऽऽनन्दमूर्ते।
जयाऽऽनन्दसिन्धो जयाशेषबन्धो
जय त्वं सदा मुक्तिदानेशसूनो॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः छत्रं समर्पयामि।
चामरयुगलं वीजयामि।

दर्पणं दर्शयामि। गीतं श्रावयामि।

नृत्यं दर्शयामि। आन्दोलिकाम् आरोहयामि।

गजम् आरोहयामि। अश्वम् आरोहयामि।

रथम् आरोहयामि। समस्त-राजोपचार-देवोपचार-पूजाः समर्पयामि।

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् स्कन्दषष्ठी-पुण्यकाले
श्री-सुब्रह्मण्य-पूजान्ते अर्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

दत्त्वाऽर्घ्यं कार्तिकेयाय स्थित्वा वै दक्षिणामुखः।
दध्ना घृतोदकैः पुष्पैर्मन्त्रेणानेन सुव्रत॥

सप्तर्षिदारज स्कन्द स्वाहापतिसमुद्भवा।
रुद्रार्यमाग्निज विभो गङ्गागर्भ नमोऽस्तु ते।
प्रीयतां देवसेनानीः सम्पादयतु हृद्गतम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः,
इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

दत्त्वा विप्राय चाऽऽत्मानं यच्चान्यदपि विद्यते।
पश्चाद्भुङ्क्ते त्वसौ रात्रौ भूमिं कृत्वा तु भाजनम्॥

[श्रीभविष्ये महापुराणे शतार्धसाहस्र्यां संहितायां ब्राह्मेपर्वणि पञ्चमीकल्पे
षष्ठीकल्पवर्णनं नाम एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः॥]

अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः
श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीयन्ताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

स्कन्दषष्ठी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
श्री-सुब्रह्मण्यपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्यायाम्नार्थं हिरण्यं
श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीतिं कामयमानः
मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीयन्ताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥
 ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ बृन्दावनपूजा (तुलसी-विष्णु-पूजा) ॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
 ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सोद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।
 दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
 गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
 पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

शुक्लाम्बरधरं + शान्तये + श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे + तिथौ तुलसी
महाविष्णु प्रसादसिद्धयर्थं तुलसी महाविष्णुपूजां करिष्ये। इति संकल्प्य
विघ्नेशमुद्वास्य कलशपूजां कृत्वा, तुलसी विष्णुं च ध्यायेत्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य
ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
शार्वरि-नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ वृश्चिक-मासे कृष्ण-पक्षे

द्वादश्यां शुभतिथौ गुरु-वासरयुक्तायां स्वाती-नक्षत्रयुक्तायाम्
सिद्धि(►०७:३०)/ व्यतीपात-योगयुक्तायां बव-करणयुक्तायाम्
एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्यां द्वादश्यां शुभतिथौ

अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्धयर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा
सकल-पापक्षयार्थं श्रीमहाविष्णु-तुलसी-प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि
षोडशोपचार-श्रीमहाविष्णु-तुलसी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च
करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।
ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायामि तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम्।
प्रसन्नवदनाम्भोजां वरदामभयप्रदाम्॥

तुलसीं ध्यायामि

ध्यायामि विष्णुं वरदं तुलसीप्रियवल्लभम्।
पीताम्बरं पद्मनेत्रं वासुदेवं वरप्रदम्॥

महाविष्णुं ध्यायामि।

वासुदेव प्रिये देवि सर्वदेव स्वरूपिणि।
आगच्छ पूजाभवने सदा सन्निहिता भव॥

आगच्छागच्छ देवेश तेजोराशे जगत्पते।
क्रियमाणां मया पूजां वासुदेव गृहाण भोः॥

-तुलसीविष्णू आवाहयामि

नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्।
आसनं कृपया विष्णो तुलसि प्रतिगृह्यताम्॥
तुलसी विष्णुभ्यां नमः - आसनं समर्पयामि।

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो वासुदेव मया हतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्श पादार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

नानानदीसमानीतं सुवर्णकलशस्थितम्।
पाद्यं गृहाण तुलसि पापं मे विनिवारय॥

(पाद्यं)

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते कमलापते।
नमस्ते सर्वविनुत गृहाणायै नमोऽस्तु ते॥

अयं गृहाण देवि त्वं अच्युतप्रियवल्लभे।
अक्षतादिसमायुक्तं अक्षय्यफलदायिनि॥

(अर्घ्यं)

कर्पूरवासितं तोयं गङ्गादिभ्यः समाहृतम्।
 आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं च भक्तितः॥
 गृहाणाचमनार्थाय विष्णुवक्षः स्थलालये।
 स्वच्छं तोयमिदं देवि सर्वपापविनाशिनि ॥

(आचमनीयम्)

दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्।
 गृहाण विष्णो वरद लक्ष्मोकान्त नमोऽस्तु ते॥
 मधुपर्कं गृहाणेमं मधूसूदनवल्लभे।
 मधुदध्याज्यं संयुक्तं महापापविनाशिनि ॥

(मधुपर्कं)

मध्वाज्यशर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितम्।
 पश्चामृतं गृहाणेदं भक्तानामिष्टदायक॥
 पश्चामृतं गृहाणेदं पञ्चपातकनाशिनि ।
 दधिक्षीरसमायुक्तं दामोदरकुटुम्बिनि॥

(पश्चामृतम्)

गङ्गा कृष्णा च यमुना नर्मदा च सरस्वती।
 तुङ्गा गोदावरी वेणी क्षिप्रा सिन्धुर्यटप्रभा॥
 तापी पयोष्णी सरयूस्ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्।
 तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानीयं गृह्यतां हरे ॥
 गङ्गागोदावरीकृष्णातुङ्गादिभ्यः समाहृतम्।
 सलिलं देवि तुलसि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

(स्नानं)

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
वाससी प्रतिगृह्णातु लक्ष्मीजानिरधोक्षजः॥

पीताम्बरमिदं दिव्यं पातकव्रजनाशिनि।
पीताम्बरप्रिये देवि परिधत्स्व परात्परे॥

(वस्त्रम्)

भूषणानि वराहाणि गृहीतं तुलसीश्वर।
किरीटहारकेयूरकटकानि हरेऽमृते॥

(आभरणानि)

चन्दनागरुकर्पूरकस्तूरीकुङ्कुमान्वितम्।
गन्ध स्वीकुरुतं देवौ रमेशहरिवल्लभे॥

(गन्धान्)

मल्लिकाकुन्दमन्दारजाजीवकुल चम्पकैः।
शतपत्रैश्च कल्हारैः अर्चये तुलसीहरी॥

(पुष्पाणि)

॥ अङ्गपूजा ॥

| | | |
|------------------|--------------------|---------------------------|
| बृन्दायै | अच्युताय नमः | - पादौ पूजयामि। |
| तुलस्यै | अनन्ताय नमः | - गुल्फौ पूजयामि। |
| जनार्दनप्रियायै | तुलसीकान्ताय नमः | - जङ्घे पूजयामि। |
| जन्मनाशिन्यै | गङ्गाधरपदाय नमः | - जानुनी पूजयामि। |
| उत्तमायै | उत्तमाय नमः | - ऊरू पूजयामि। |
| कमलाक्ष्यै | कमलाक्षाय नमः | - कटिं पूजयामि। |
| नारायण्यै | नारायणाय नमः | - नाभिं पूजयामि। |
| उन्नतायै | उन्नताय नमः | - उदरं पूजयामि। |
| वरदायै | वरदाय नमः | - वक्षः पूजयामि। |
| स्तव्यायै | स्तव्याय नमः | - स्तनौ कौस्तुभं पूजयामि। |
| चतुर्भुजायै | चतुर्भुजाय नमः | - भुजान् पूजयामि। |
| कम्बुकण्ठ्यै | वनमालिने नमः | - कण्ठं पूजयामि। |
| कल्मषघ्न्यै | कल्मषघ्नाय नमः | - कर्णौ पूजयामि। |
| मुनिप्रियायै | मुनिप्रियाय नमः | - नेत्रे पूजयामि। |
| शुभप्रदायै | शुभप्रदाय नमः | - शिरः पूजयामि। |
| सर्वार्थदायिन्यै | सर्वार्थदायिने नमः | - सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि। |

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|----------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | ८. ॐ वामनाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | ९. ॐ श्रीधराय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १०. ॐ हृषीकेशाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | ११. ॐ पद्मनाभाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १२. ॐ दामोदराय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |

१५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः

१६. ॐ अनिरुद्धाय नमः

१७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

१८. ॐ अधोक्षजाय नमः

१९. ॐ नृसिंहाय नमः

२०. ॐ अच्युताय नमः

२१. ॐ जनार्दनाय नमः

२२. ॐ उपेन्द्राय नमः

२३. ॐ हरये नमः

२४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

॥ तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ तुलस्यै नमः

ॐ पावन्यै नमः

ॐ पूज्यायै नमः

ॐ वृन्दावननिवासिन्यै नमः

ॐ ज्ञानदात्र्यै नमः

ॐ ज्ञानमय्यै नमः

ॐ निर्मलायै नमः

ॐ सर्वपूजितायै नमः

ॐ सत्यै नमः

ॐ पतिव्रतायै नमः

ॐ वृन्दायै नमः

ॐ क्षीराब्धिमथनोद्भवायै नमः

ॐ कृष्णवर्णायै नमः

ॐ रोगहन्त्र्यै नमः

ॐ त्रिवर्णायै नमः

ॐ सर्वकामदायै नमः

ॐ लक्ष्मीसख्यै नमः

ॐ नित्यशुद्धायै नमः

ॐ सुदत्यै नमः

ॐ भूमिपावन्यै नमः

ॐ हरिद्रान्नैकनिरतायै नमः

ॐ हरिपादकृतालयायै नमः

ॐ पवित्ररूपिण्यै नमः

ॐ धन्यायै नमः

ॐ सुगन्धिन्यै नमः

ॐ अमृतोद्भवायै नमः

ॐ सुरूपायै आरोग्यदायै नमः

ॐ तुष्टायै नमः

ॐ शक्तित्रितयरूपिण्यै नमः

ॐ देव्यै नमः

ॐ देवर्षिसंस्तुत्यायै नमः

ॐ कान्तायै नमः

ॐ विष्णुमनःप्रियायै नमः

ॐ भूतवेतालभीतिघ्न्यै नमः

ॐ महापातकनाशिन्यै नमः

ॐ मनोरथप्रदायै नमः

ॐ मेधायै नमः

ॐ कान्त्यै नमः

२०

१०

३०

ॐ विजयदायिन्यै नमः
 ॐ शङ्खचक्रगदापद्मधारिण्यै नमः
 ४०
 ॐ कामरूपिण्यै नमः
 ॐ अपवर्गप्रदायै नमः
 ॐ श्यामायै नमः
 ॐ कृशमध्यायै नमः
 ॐ सुकेशिन्यै नमः
 ॐ वैकुण्ठवासिन्यै नमः
 ॐ नन्दायै नमः
 ॐ बिम्बोष्ठ्यै नमः
 ॐ कोकिलस्वरायै नमः
 ॐ कपिलायै नमः
 ॐ निम्नगाजन्मभूम्यै नमः
 ॐ आयुष्यदायिन्यै नमः
 ॐ वनरूपायै नमः
 ॐ दुःखनाशिन्यै नमः
 ॐ अविकारायै नमः
 ॐ चतुर्भुजायै नमः
 ॐ गरुत्मद्वाहनायै नमः
 ॐ शान्तायै नमः
 ॐ दान्तायै नमः
 ॐ विघ्ननिवारिण्यै नमः
 ॐ श्रीविष्णुमूलिकायै नमः
 ॐ पुष्ट्यै नमः
 ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः
 ॐ महाशक्त्यै नमः

५०

६०

ॐ महामायायै नमः
 ॐ लक्ष्मीवाणीसुपूजितायै नमः
 ॐ सुमङ्गल्यर्चनप्रीतायै नमः
 ॐ सौमङ्गल्यविवर्धिन्यै नमः
 ॐ चातुर्मास्योत्सवाराध्यायै नमः
 ॐ विष्णुसान्निध्यदायिन्यै नमः ७०
 ॐ उत्थानद्वादशीपूज्यायै नमः
 ॐ सर्वदेवप्रपूजितायै नमः
 ॐ गोपीरतिप्रदायै नमः
 ॐ नित्यायै नमः
 ॐ निर्गुणायै नमः
 ॐ पार्वतीप्रियायै नमः
 ॐ अपमृत्युहरायै नमः
 ॐ राधाप्रियायै नमः
 ॐ मृगविलोचनायै नमः
 ॐ अम्लानायै नमः ८०
 ॐ हंसगमनायै नमः
 ॐ कमलासनवन्दितायै नमः
 ॐ भूलोकवासिन्यै नमः
 ॐ शुद्धायै नमः
 ॐ रामकृष्णादिपूजितायै नमः
 ॐ सीतापूज्यायै नमः
 ॐ राममनःप्रियायै नमः
 ॐ नन्दनसंस्थितायै नमः
 ॐ सर्वतीर्थमय्यै नमः
 ॐ मुक्तायै नमः ९०
 ॐ लोकसृष्टिविधायिन्यै नमः

ॐ प्रातर्दृश्यायै नमः
 ॐ ग्लानिहृत्र्यै नमः
 ॐ वैष्णव्यै नमः
 ॐ सर्वसिद्धिदायै नमः
 ॐ नारायण्यै नमः
 ॐ सन्ततिदायै नमः
 ॐ मूलमृद्धारिपावन्यै नमः
 ॐ अशोकवनिकासंस्थायै नमः
 ॐ सीताध्यातायै नमः १००

ॐ निराश्रयायै नमः
 ॐ गोमतीसरयूतीररोपितायै नमः
 ॐ कुटिलालकायै नमः
 ॐ अपात्रभक्ष्यपापघ्न्यै नमः
 ॐ दानतोयविशुद्धिदायै नमः
 ॐ श्रुतिधारणसुप्रीतायै नमः
 ॐ शुभायै नमः
 ॐ सर्वेष्टदायिन्यै नमः १०८

॥इति श्री तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

श्री तुलसी-विष्णुभ्यां नमः नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

धूपं गृहाण वरदे दशाङ्गेन सुवासितम्।
 तुलस्यमृतसम्भूते धूतपापे नमोऽस्तु ते॥

दशाङ्गो गुग्गुलूपेतः सुगन्धः सुमनोहरः।
 श्रीवत्साङ्ग हृषीकेश धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः धूपम् आघ्रापयामि।

वर्तित्रययुतं दीपं गोघृतेन समन्वितम्।
 दीपं देवि गृहाणेमं दैत्यारिहृदयस्थिते॥

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं दीपं देव जनार्दन।
 गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरं हर॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः दीपं दर्शयामि।

नानाभक्ष्यैश्च भोज्यैश्च फलैः क्षीरघृतादिभिः।
 नैवेद्यं गृह्यतां युक्तं नारायणमनःप्रिये॥

भोज्यं चतुर्विधं चोष्यभक्ष्यसूपफलैर्युतम्।
दधिमध्वाज्यसंयुक्तं गृह्यतामम्बुजेक्षण॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः महानैवेद्यं निवेदयामि।

कर्पूरचूर्णताम्बूलवल्लीपूगफलैर्युतम् ।
जगतः पितरावेतन्ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं गृहाणेदं कर्पूरैः कलितं मया।
तुलस्यमृतसम्भूते गृहाण हरिवल्लभे॥

चन्द्रादित्यौ च नक्षत्रं विद्युदग्निस्त्वमेव च।
त्वमेव सर्वज्योतींषि कुर्या नीराजनं हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि।

प्रकृष्टपापनाशाय प्रकृष्टफलसिद्धये।
युवां प्रदक्षिणी कुर्वे तुलसीशौ प्रसीदतम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः प्रदक्षिणं समर्पयामि।

नमोऽस्तु पीयूषसमुद्भवायै
नमोऽस्तु पद्माक्षमनः प्रियायै।
नमोऽस्तु जन्माप्यय-भीतिहृत्र्यै
नमस्तुलस्यै जगतां जनन्यै॥

शङ्खचक्रगदापाणे द्वारकानिलयाच्युत।
गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागत(ता)म्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेदं पङ्कजाक्षस्य वल्लभे।
नमस्ते देवि तुलसि नताभीष्टफलप्रदे॥

मन्दारनीलोत्पलकुन्दजाती पुन्नागमल्लीकरवीरपद्मैः।
पुष्पाञ्जलिं ते जगदेकबन्धो हरे त्वदङ्घ्रौ विनिवेशयामि॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

आयुरारेग्यमतुलमैश्वर्यं पुत्रसम्पदः।
देहि मे सकलान्कामान् तुलस्यमृतसम्भवे॥

नमो नमः सुखवरपूजिताङ्घ्रये
नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये
नमो नमः परमदयानिधे हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।

नमस्ते देवि तुलसि नमस्ते मोक्षदायिनि।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥

लक्ष्मीपते नमस्तुभ्यं तुलसीदामभूषण।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गरुडध्वज॥

श्री तुलस्यै महाविष्णवे च नमः - इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

नमस्ते देवि तुलसि माधवेन समन्विता।
प्रयच्छ सकलान्कामान् द्वादश्यां पूजिता मया॥
अनेन पूजनेन श्री-तुलसी-विष्णू प्रीयेताम्।

तुलसीविवाहविधिः

(इक्षुदण्डनिर्मिते पुष्पाद्यलङ्किते मण्टपे विवाहः।

तुलसी हरिद्राचन्दनकुङ्कुमपुष्पाद्यालङ्कृता स्वीयवेद्यां प्रथमं पूज्यते।

शुक्लाम्बरधरं + परमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते + शुभतिथौ तुलस्याः
विष्णुना सह विवाहोत्सवमाचरिष्ये।

(अप उपस्पृश्य)

विष्णुं विवाहार्थे वरार्ह-वस्त्रालङ्करण-पुष्पमालादिभिः अलङ्कृत्य
वाद्यघोषगीतपुरस्सरं विवाहमण्टपमानीय कर्ता
नारिकेल-कदलीफलताम्बूलादिभिः उपसृत्य मण्टपे आसने प्रतिष्ठाप्य
प्रार्थयेत्।

आगच्छ भगवन् देव अर्हयिष्यामि केशव।
तुभ्यं ददामि तुलसीं प्रतीच्छन् कामदो भव॥
आसनमिदं, अलङ्कियताम्। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि।
हरिद्रालेप-मङ्गलविधिं समर्पयामि। तैलाभ्यङ्गपूर्वकं मङ्गलस्नानं समर्पयामि।
वस्त्रालङ्करणपुष्पमालाः समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। गन्धोपरि
हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।
(वधूवरौ परस्परमभिमुखौ स्थापयित्वा)

... गोत्रोद्धवां ... शर्मणः प्रपौत्रीं, ... शर्मणः पौत्रीं, ... शर्मणः पुत्रीं
तुलसीनाम्नीम् इमां कन्यकां अजाय परब्रह्मणे श्री विष्णवे वराय
प्रतिपादयामि। (त्रिः उक्त्वा)

अनादिमध्यनिधन त्रैलोक्यप्रतिपालक।
इमां गृहाण तुलसीं विवाहविधिनेश्वर॥

पार्वती-बीजसम्भूतां बृन्दाभस्मनि संस्थिताम्।
अनादिमध्यनिधनां वल्लभां ते ददाम्यहम्॥

पयोधृतैश्च सेवाभिः कन्यावद्वर्षितां मया।
त्वत्प्रियां तुलसीं तुभ्यं ददामि त्वं गृहाण भोः॥

वाद्यघोष-वेदस्वस्तिवाचन-मङ्गलाशीर्भिः उभौ मेलयित्वा गीतादिभिः
सन्तोषयेत्।

सायमपि पुनः पूजां कृत्वा स्त्रीधनं यथाशक्तिं दद्यात्।

विवाहोत्सवपूर्ते—

वैकुण्ठं गच्छ भगवन् तुलस्या सहितः प्रभो।
मत्कृतं पूजनं गृह्य सन्तुष्टो भव सर्वदा॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ जनार्दन॥

इति उभौ अभ्यनुज्ञापयेत् मङ्गलारार्तिकेन सह। तुलसीं यथापूर्वं रक्षेत्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।



॥ शिवरत्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा ॥

आचम्य।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ व्रत-सङ्कल्पः ॥

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धं श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे

शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
 ()^{२७} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
 त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
 भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{२८} नक्षत्र ()^{२९} नाम योग () करण युक्तायां
 च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ
 अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
 ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
 पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
 जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
 रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल
 पापक्षयार्थं श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शिवरात्रि-व्रतं करिष्ये।

शिवरात्रिव्रतं ह्येतत्करिष्येऽहं महाफलम्।
 निर्विघ्नमस्तु मे चात्र त्वत्प्रसादाञ्जगत्पते॥

चतुर्दश्यां निराहारो भूत्वा शम्भो परेऽहनि।
 भोक्ष्येऽहं भुक्तिमुक्त्यर्थं शरणं मे भवेश्वर॥

॥ पूर्वाङ्गविघ्नेश्वरपूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्तसमस्त दुरितक्षयद्वारा

^{२७}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^{२८}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{२९}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः
निर्विघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।
 अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।
 नैवेद्यम्।
 ताम्बूलं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।
 कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।
 वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
 अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
 प्रार्थनाः समर्पयामि।
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
 अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
 कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
 शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
 ()^{३०} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
 त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
 भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{३१} नक्षत्र ()^{३२} नाम योग () करण युक्तायां
 च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ

^{३०}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^{३१}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{३२}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
 ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
 पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
 जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
 रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल
 पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रथम-यामपूजां करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(गणपति प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
 त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चाऽऽसनं कुरु॥

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलशपूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
 नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
 आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
 ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
 ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|---------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ३. ॐ आदिकूर्माय नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ४. ॐ आदिवराहाय नमः |

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो
रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
समर्पयामि॥ २॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥ ३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
 पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्धवाय नमः॥ अर्घ्यं
 समर्पयामि॥ ४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः
 सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं
 समर्पयामि॥ ५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्यसर्वाश्च
 यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥ ६॥
 असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु
 श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः।
 स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥ ७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
 ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
 ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
 ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
 रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
 भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उत्तैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः।
 उत्तैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय

नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं
तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि
समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्रियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो
वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्वः सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः
सुमना भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः। पुष्पैः
पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ शिवाय नमः

ॐ महेश्वराय नमः

ॐ शम्भवे नमः

ॐ पिनाकिने नमः

ॐ शशिशेखराय नमः

ॐ वामदेवाय नमः

ॐ विरूपाक्षाय नमः

ॐ कपर्दिने नमः

| | | | |
|-----------------------|----|----------------------------|----|
| ॐ नीललोहिताय नमः | | ॐ कवचिने नमः | |
| ॐ शङ्कराय नमः | १० | ॐ कठोराय नमः | |
| ॐ शूलपाणिने नमः | | ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः | |
| ॐ खट्वाङ्गिने नमः | | ॐ वृषाङ्गाय नमः | |
| ॐ विष्णुवल्लभाय नमः | | ॐ वृषभारूढाय नमः | ४० |
| ॐ शिपिविष्टाय नमः | | ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| ॐ अम्बिकानाथाय नमः | | ॐ सामप्रियाय नमः | |
| ॐ श्रीकण्ठाय नमः | | ॐ स्वरमयाय नमः | |
| ॐ भक्तवत्सलाय नमः | | ॐ त्रयीमूर्तये नमः | |
| ॐ भवाय नमः | | ॐ अनीश्वराय नमः | |
| ॐ शर्वाय नमः | | ॐ सर्वज्ञाय नमः | |
| ॐ त्रिलोकेशाय नमः | २० | ॐ परमात्मने नमः | |
| ॐ शितिकण्ठाय नमः | | ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| ॐ शिवाप्रियाय नमः | | ॐ हविषे नमः | |
| ॐ उग्राय नमः | | ॐ यज्ञमयाय नमः | ५० |
| ॐ कपालिने नमः | | ॐ सोमाय नमः | |
| ॐ कामारये नमः | | ॐ पञ्चवक्त्राय नमः | |
| ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः | | ॐ सदाशिवाय नमः | |
| ॐ गङ्गाधराय नमः | | ॐ विश्वेश्वराय नमः | |
| ॐ ललाटाक्षाय नमः | | ॐ वीरभद्राय नमः | |
| ॐ कालकालाय नमः | | ॐ गणनाथाय नमः | |
| ॐ कृपानिधये नमः | ३० | ॐ प्रजापतये नमः | |
| ॐ भीमाय नमः | | ॐ हिरण्यरेतसे नमः | |
| ॐ परशुहस्ताय नमः | | ॐ दुर्धर्षाय नमः | |
| ॐ मृगपाणये नमः | | ॐ गिरीशाय नमः | ६० |
| ॐ जटाधराय नमः | | ॐ गिरिशाय नमः | |
| ॐ कैलासवासिने नमः | | ॐ अनघाय नमः | |

| | | | |
|--------------------|----|---------------------|-----|
| ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः | | ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | |
| ॐ भर्गाय नमः | | ॐ शाश्वताय नमः | |
| ॐ गिरिधन्वने नमः | | ॐ खण्डपरशवे नमः | |
| ॐ गिरिप्रियाय नमः | | ॐ अजाय नमः | |
| ॐ कृत्तिवाससे नमः | | ॐ पाशविमोचकाय नमः | १० |
| ॐ पुरारातये नमः | | ॐ मृडाय नमः | |
| ॐ भगवते नमः | | ॐ पशुपतये नमः | |
| ॐ प्रमथाधिपाय नमः | ७० | ॐ देवाय नमः | |
| ॐ मृत्युञ्जयाय नमः | | ॐ महादेवाय नमः | |
| ॐ सूक्ष्मतनवे नमः | | ॐ अव्ययाय नमः | |
| ॐ जगद्ध्यापिने नमः | | ॐ हरये नमः | |
| ॐ जगद्गुरवे नमः | | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ व्योमकेशाय नमः | | ॐ अव्यग्राय नमः | |
| ॐ महासेनजनकाय नमः | | ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | |
| ॐ चारुविक्रमाय नमः | | ॐ हराय नमः | १०० |
| ॐ रुद्राय नमः | | ॐ भगनेत्रभिदे नमः | |
| ॐ भूतपतये नमः | | ॐ अव्यक्ताय नमः | |
| ॐ स्थाणवे नमः | ८० | ॐ सहस्राक्षाय नमः | |
| ॐ अहये बुध्याय नमः | | ॐ सहस्रपदे नमः | |
| ॐ दिगम्बराय नमः | | ॐ अपवर्गप्रदाय नमः | |
| ॐ अष्टमूर्तये नमः | | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ अनेकात्मने नमः | | ॐ तारकाय नमः | |
| ॐ सात्त्विकाय नमः | | ॐ परमेश्वराय नमः | |

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशाल्यो बाणवा ५ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मादुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्रिकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय
नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय
नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति
द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
प्रथम-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

नमः शिवाय शान्ताय सर्वपापहराय च।
शिवरात्रौ मया दत्तं गृहाणार्घ्यं मम प्रभो॥१॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

नमो यज्ञजगन्नाथ नमस्त्रिभुवनेश्वर।
पूजां गृहाण मे दत्तां महेश प्रथमे पदे॥१॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (द्वितीय-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धं श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
()^{३३} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{३४} नक्षत्र ()^{३५} नाम योग () करण युक्तायां
च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ
अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्धयर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं द्वितीय-यामपूजां करिष्ये।

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्ति वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

^{३३}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^{३४}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{३५}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषंवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो
रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
समर्पयामि॥ २॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥ ३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं
समर्पयामि॥ ४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः
सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं
समर्पयामि॥ ५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥ ६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु
श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः।
स्नानं समर्पयामि।

॥ महान्यासः ॥

॥ पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् ॥

ओङ्कारमन्त्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।

कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शर्व्या या तव
तया नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय
नमः।

महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्।

महापापहरं वन्दे मकाराय नमो नमः॥२॥

अपैतु मृत्युरमृतं न आगन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं
वनस्पतेरिवाभिनिः शीयतां रयिः स च तान्नः शचीपतिः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय।
दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्।

शिवमेकं परं वन्दे शिकाराय नमो नमः॥३॥

ॐ। निधनपतये नमः। निधनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः।
ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिङ्गाय नमः। सुवर्णाय नमः।
सुवर्णलिङ्गाय नमः। दिव्याय नमः। दिव्यलिङ्गाय नमः। भवाय नमः।
भवलिङ्गाय नमः। शर्वाय नमः। शर्वलिङ्गाय नमः। शिवाय नमः।
शिवलिङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। ज्वललिङ्गाय नमः। आत्माय नमः।

आत्मलिङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमलिङ्गाय नमः। एतत्सोमस्य सूर्यस्य
सर्वलिङ्गं स्थापयति पाणिमन्त्रं पवित्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय
नमः।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै
रुद्राय नमो अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय
नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्।
यलिङ्गं पूजयेन्नित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्तेनाप्यायस्व॥ नमो रुद्राय
विष्णवे मृत्युर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय
नमः।



॥ पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् ॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

संवर्ताग्नि-तटित्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम्
 गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्।
 अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम्
 वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥
 ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
 सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
 कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणम्
 कर्णोद्भासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्विन्नदंष्ट्राङ्कुरम्।
 सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम्
 वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चार्थवर्नादौदयम्॥
 ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
 भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्धवाय नमः॥
 प्रालेयाचलमिन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम्
 भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् ।
 विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादौदयम्
 वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥
 ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय
 नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय
 नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

गौरं कुङ्कुमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम्
 भ्रुविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्।
 स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम्
 वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्त्रं हरस्योत्तरम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
 मे अस्तु सदाशिवोम्॥

व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षट्त्रिंशतत्त्वाधिकम्
 तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरमिति ध्येयं सदा योगिभिः।
 ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम्
 वन्दे पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः ॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपांपकाशिनी।
 तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचां कशीहि॥
 शिखायै नमः॥ (TUFT)

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भुवा अधि।
 तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
 शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
 तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
 ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)

ह्रस्वः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।

नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदृजा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥
भ्रुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥
नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च
सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशन्ताय च।
कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते॥
नासिकायै^{३६} नमः॥ (NOSE)

अवतत्य धनुस्त्वः सहस्राक्ष शतैषुधे॥
निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव।
मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवः रुद्रा उपश्रिताः।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥

बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या ते हेतिर्मादुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥
उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परि णो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः।
अव स्थिरा मघवद्व्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय॥
मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS)

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्धवाय नमः॥
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः
कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः
सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥
तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥
अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय
उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ (RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT AND BACK)

नमो वः किरिकेभ्यो देवानां हृदयेभ्यः॥
हृदयाय नमः॥ (HEART)

नमो गुणेभ्यो गुणपतिभ्यश्च वो नमः॥
पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नमस्तक्ष्भ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः॥
कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्यै दिशां च पतये नमः॥
पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवा उत।
अनेशनस्येषव आभुरस्य निषङ्गथिः॥
जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकं आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
नाभ्यै नमः॥ (NAVEL)

मीढुष्टम् शिवतम शिवो नः सुमना भव।
प्रमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चर पिनाकं बिभ्रदा गंहि॥
कट्यै नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।

तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

गुह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अत्रैषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबन्तो जनान्।

तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शिरा जातवेदा अक्षरं परमं पदम्।

वेदानां शिरसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥

अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।

मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥

ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

एष तै रुद्रभागस्तं जुषस्व तेनावसेन परो मूजवतोऽतीह्यवन्ततधन्वा

पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः॥

जानुभ्यां नमः॥ (KNEES)

सः सृष्टिजिह्वामपा बाहुशध्यूर्ध्वधन्वा प्रतिहिताभिरस्तां।

बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्रा अपबाधमानः॥

जङ्घाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES)

विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्।

सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये पथां पथिरक्षय ऐलबृदा यव्युधैः।

तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

पादाभ्यां नमः॥ (FEET)

अध्यवोचदधिवृक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहीँश्च सर्वाङ्गम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यः॥

कवचाय हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS TOUCHING SHOULDERS)

नमो बिल्मिने च कवचिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च॥
उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषै।
अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥
नेत्रत्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERS ACROSS THE THREE EYES)

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्णियोज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥
अस्त्राय फट्॥ (SLAP INDEX AND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON LEFT PALM)

य एतावन्तश्च भूयांसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND SELF)



॥ मूर्धादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः ॥

ॐ मूर्ध्ने नमः। नं नासिकाय^{३७} नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय
नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। ते दक्षिणहस्ताय नमः। रुं
वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्यै नमः। यं पादाभ्यां नमः।

॥ पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः ॥

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नार्ति भवे भवस्व माम्। भवोद्धवाय नमः॥
पादाभ्यां नमः॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः
कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः
सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥
ऊरुभ्यां नमः॥

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
हृदयाय नमः॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥
मुखाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥
हंस हंस मूर्ध्ने नमः॥



॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री
छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥
परमहंस-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं मध्यमाभ्यां नमः। हंसै
 अनामिकाभ्यां नमः। हंसौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां
 नमः। हंसां हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखायै वषट्। हंसै
 कवचाय हुम्। हंसौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोम्
 इति दिग्बन्धः॥

॥ध्यानम्॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्।
 पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥

हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥

हंसु हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि।

तन्नो हंसः प्रचोदयात्॥

(एवं त्रिः)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः।
 एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥



॥दिक् सम्पुटन्यासः॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[ॐ]लं। त्रातारमिन्द्रंमवितारमिन्द्रं हवैहवे सुहवः शूरमिन्द्रम्।

हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवां धात्विन्द्रः॥

[ॐ]लं भूर्भुवः सुवः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय ऐरावतवाहनाय
 साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
 उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥

[इन्द्रः संरक्षतु॥]

॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[नं]रं। त्वन्नो अग्रे वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं यासिसीष्टाः।

यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥

[नं]रं भूर्भुवः सुवः। अग्रये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्रये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षतु॥] ॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[मो]हं। सुगं नः पन्थामभयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षत्रे यम एति राजा।

यस्मिन्नेनमभ्यषिञ्चन्त देवाः। तदस्य चित्रं हविषा यजाम॥

[मो]हं भूर्भुवः सुवः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥] ॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[भं]षं। असुन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां तस्करस्यान्वैषि।

अन्यमस्मदिच्छ सा तं इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

[भं]षं भूर्भुवः सुवः। निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥] ॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[गं]वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः॥

[गं]वं भूर्भुवः सुवः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय

साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥
[वरुणः संरक्षतु॥] ॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[वं]यं। आ नो न्युद्धिः शतिनीभिरध्वरम्। सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।

वायो अस्मिन् हविषि मादयस्व। यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

[वं]यं भूर्भुवः सुवः। वायवे साङ्कुशध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय

साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने^{३८} यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो
भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥] ॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[ते]सं। वयं सोम व्रते तव। मनस्तनूषु बिभ्रतः।

प्रजावन्तो अशीमहि॥

[ते]सं भूर्भुवः सुवः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये
अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥
[सोमः संरक्षतु॥] ॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं]शं। (ऋक्) तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिम्। धियं जिन्वमवसे हूमहे
वयम्।

पूषा नो यथा वेदसामसंद्धौ रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

^{३८} नासिकयोः स्थाने

[रुं]शं भूर्भुवः सुवः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय
साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ईशानदिग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥
[ईशानः संरक्षतु॥] ॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां]खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरंहूतौ सजोषाः ।

यः शंसते स्तुवते धारिं पञ्च इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥

[द्रां]खं भूर्भुवः सुवः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय
सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।
ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्ध्निस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥
[ब्रह्मा संरक्षतु॥] ॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[यं]हीं। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी।

यच्छानः शर्म सप्रथाः॥

[यं]हीं भूर्भुवः सुवः। विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय
साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥
[विष्णुः संरक्षतु॥] ॥१०॥



॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् ॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ अं। विभूरसि प्रवाहणो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ आं। वह्निरसि हव्यवाहनो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ आं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ इं। श्वात्रौऽसि प्रचेता रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ इं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मूर्ध्निस्थाने रुद्राय नमः॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ईं। तुथौऽसि विश्ववेदा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ ईं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ उं। उशिरसि कवी रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ उं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नेत्रयोः^{३९} स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ऊं। अङ्गारिरसि बम्भारी रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्रे पिपृहि मा मा मां

हिंसीः॥ ॐ [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कुराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ऋं। अवस्युरसि दुवस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कुराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ऋं। शुन्ध्यूरसि मार्जालीयो रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्रे पिपृहि मा मा मां
मां हिंसीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कुराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ लं। सम्राडसि कृशानू रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ लं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कुराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ लृं। परिषद्योऽसि पवमानो रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्रे पिपृहि मा मा मां
मां हिंसीः॥ लृं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कुराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ एं। प्रतक्वाऽसि नभस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्रे पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ एं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कुराय

च नमः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ ऐं। असंमृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा
मां हिंसीः॥ ऐं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ ॐ। ऋतधामाऽसि सुवर्ज्योती रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा
मा मां हिंसीः॥ ॐ [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ औं। ब्रह्मज्योतिरसि सुवर्धामा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा
मा मां हिंसीः॥ औं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ अं। अजोऽस्येकपाद्रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जङ्घास्थाने रुद्राय नमः॥१५॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवायं च शिवतराय च॥

ॐ अः। अहिरसि बुध्रियो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ अः [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति।

ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-डाकिनी-सर्प-श्वापद-
वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु।

यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥



॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः ॥

मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं यज्ञं समिमं दधातु।
या इष्टा उषसो निम्रुचंश्च ताः सन्दधामि हविषा घृतेन॥ गुह्याय नमः॥१॥

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवाऽऽयतीमुषासम्।
यद्वा इव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छं॥ नाभ्यै नमः॥२॥

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपां रेतांसि जिन्वति॥ हृदयाय नमः॥३॥

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृताय जातमग्निम्।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ कण्ठाय
नमः॥४॥

मर्माणि ते वर्मभिश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवंस्ताम्।
उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामनु मदन्तु देवाः॥ मुखाय नमः॥५॥

जातवेदा यदि वा पावकोऽसि। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसि।
शं प्रजाभ्यो यजमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं ददद्भ्याववृथ्स्व॥ शिरसे
नमः॥६॥



॥ आत्मरक्षा ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मात्मन्वदसृजत। तदकामयत। समात्मना पद्येयेति।
आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै दशमं हूतः प्रत्यंशृणोत्। स

दशहूतोऽभवत्। दशहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं दशहूतं सन्तम्।
दशहोतेत्याचक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत्। तस्मै सप्तमं हूतः प्रत्यशृणोत्। स
सप्तहूतोऽभवत्। सप्तहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं सप्तहूतं सन्तम्।
सप्तहोतेत्याचक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत्। तस्मै षष्ठं हूतः प्रत्यशृणोत्। स षड्भूतोऽभवत्।
षड्भूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं षड्भूतं सन्तम्। षड्भूतेत्याचक्षते पुरोक्षेण।
पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत्। तस्मै पञ्चमं हूतः प्रत्यशृणोत्। स
पञ्चहूतोऽभवत्। पञ्चहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पञ्चहूतं सन्तम्।
पञ्चहोतेत्याचक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत्। तस्मै चतुर्थं हूतः प्रत्यशृणोत्। स
चतुर्हूतोऽभवत्। चतुर्हूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं चतुर्हूतं सन्तम्।
चतुर्होतेत्याचक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

तमब्रवीत्। त्वं वै मे नेदिष्ठं हूतः प्रत्यश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार् इति।
तस्मान्नु हैनाश्चतुर्होतार् इत्याचक्षते। तस्माच्छुश्रूषुः पुत्राणां हृद्यतमः।
नेदिष्ठो हृद्यतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मणो भवति। य एवं वेद।
आत्मने नमः॥

॥ शिवसङ्कल्पः ॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१॥

येन कर्माणि प्रचरन्ति धीरा यतो वाचा मनसा चारु यन्ति।
यथ्सम्मिमतमनुसंयन्ति प्राणिनस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२॥

येन कर्माण्युपसौ मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं
यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किं च
न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥४॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं
जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥५॥

यस्मिनृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाः।
यस्मिंश्चित् सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥६॥

यदत्र षष्ठं त्रिशतं सुवीरं यज्ञस्य गुह्यं नवनावमाय्यम्। दशं पञ्च त्रिंशत्
यत्परं च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥७॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति देवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥८॥

येनेदं विश्वं जगतो बभूव ये देवापि महतो जातवेदाः। तदेवाग्निस्तमसो
ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥९॥

येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशश्च। येनेदं जगद्भासं
प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१०॥

ये मनो हृदयं ये च देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरश्मिः। ते श्रोत्रे चक्षुषी
सञ्चरन्तं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥११॥

अचिन्त्यं चाप्रमेयं च व्यक्ताव्यक्तपरं च यत्।
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१२॥

एकां च दश शतं च सहस्रं चायुतं च
नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तंश्च परार्धश्च तन्मे
मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१३॥

ये पञ्च पञ्चादश शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदं च। ते अग्निचित्येष्टकास्तं
शरीरं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१४॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। यस्य योनिं
परिपश्यन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१५॥

यस्येदं धीराः पुनन्ति कवयो ब्रह्माणमेतं त्वा वृणत इन्दुम्। स्थावरं जङ्गमं
द्यौराकाशं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१६॥

परात्परतरं चैव यत्पराच्चैव यत्परम्।
यत्परात्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१७॥

परात्परतरो ब्रह्मा तत्परात्परतो हरिः।
तत्परात्परतोऽधीशस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१८॥

या वेदादिषु गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरी।
ऋग्यजुः सामाथर्वैश्च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१९॥

यो वै देवं महादेवं प्रणवं परमेश्वरम्।
यः सर्वे सर्ववेदैश्च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२०॥

प्रयतः प्रणवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तमम्।
ओङ्कारं प्रणवात्मानं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२१॥

योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज इश्वरः।
अकायो निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२२॥

गोभिर्जुष्टं धनेन ह्यायुषा च बलेन च।
प्रजया पशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२३॥

कैलासशिखरे रम्ये शङ्करस्य शिवालये।
देवतास्तत्र मोदन्ते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२४॥

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां
नमति सम्पतत्रैर्द्यावापृथिवी जनयन्देव एकस्तन्मे मनः
शिवसङ्कल्पमस्तु॥२५॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्तन्मे मनः
शिवसङ्कल्पमस्तु॥२६॥

चतुरो वेदानधीयीत सर्वशास्त्रमयं विदुः।
इतिहासपुराणानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२७॥

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न
उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा
नस्तनुवो रुद्र रीरिषस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२८॥

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो
अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवधीरहविष्मन्तो नमसा विधेम ते
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२९॥

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्।

ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो
नमस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३०॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे।

वो चेम् शन्तम् ५ हृदे। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः
शिवसङ्कल्पमस्तु॥३१॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः।

सबुधिया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च

विवस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३२॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।

य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय

हविषा विधेम तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३३॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।

यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय

हविषा विधेम तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै

रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३५॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करिषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां

तामिहोपह्वये श्रियं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३६॥

य इदं शिवसङ्कल्पं सदा ध्यायन्ति ब्राह्मणाः।

ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥

हृदयाय नमः॥



॥ पुरुषसूक्तम् ॥

ॐ स॒हस्र॑शी॒र्षा पुरु॑षः। स॒हस्रा॑क्षः स॒हस्र॑पात्। स भूमिं॑ वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा।
अत्य॑तिष्ठद्वशाङ्गुलम्॥ पुरु॑ष ए॒वेद॑ः सर्व॑म्। यद्भू॒तं यच्च॑ भव्य॑म्।
उ॒तामृ॑त॒त्वस्ये॑शानः। यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति॥ ए॒तावा॑नस्य म॒हिमा। अतो॑
ज्याया॑ऽश्च पू॒रुषः॑।

पादो॑ऽस्य वि॒श्वा भू॑तानि। त्रि॒पाद॑स्यामृ॒तं दि॒वि॥ त्रि॒पाद॑र्ध्व उदै॒त्पुरु॑षः।
पादो॑ऽस्येहाऽऽभ॒वात्पुनः॑। ततो॑ वि॒श्वङ्म॑क्रामत्। सा॒शना॑न॒शने॑ अ॒भि॥
तस्मा॑द्वि॒राड॑जायत। वि॒राजो॑ अधि पू॒रुषः॑। स जा॒तो अत्य॑रिच्यत।
प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॑॥

यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑तन्वत। व॒सन्तो॑ अ॒स्यासी॑दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म
इ॒ध्मः श॒रद्ध॒विः॥ स॒प्तास्या॑ऽऽसन्परि॒धयः॑। त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः। दे॒वा
यद्य॒ज्ञं त॑न्वा॒नाः। अब॑ध्नन्पुरु॑षं प॒शुम्॥ तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन्। पुरु॑षं
जा॒तम॑ग्रतः।

तेन॑ दे॒वा अय॑जन्त। सा॒ध्या ऋ॑षयश्च॒ ये॥ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। सम्भृ॑तं
पृष॑दाज्यम्। प॒शूः स्ता॑ः श्व॒क्रे वा॒यव्या॑न्। आ॒र॒ण्यान्ग्रा॒म्याश्च॒ ये॥
तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। ऋ॒चः सा॒मा॒नि ज॒ज्ञिरे॑। छन्दा॑ः॒सि ज॒ज्ञिरे॑ तस्मा॑त्।
यजु॑स्तस्मा॑दजायत॥ तस्मा॑दश्वा॑ अजायन्त। ये के॑ चो॒भ्याद॑तः। गावो॑ ह
ज॒ज्ञिरे॑ तस्मा॑त्। तस्मा॑ज्जा॒ता अ॑जा॒वयः॑॥ यत्पुरु॑षं व्य॒दधुः॑। क॒ति॒धा
व्य॑कल्पयन्। मुखं॑ किम॑स्य॒ कौ बा॒हू। का॒वूरू॑ पादा॑वुच्येते॥ ब्रा॒ह्म॒णो॑ऽस्य॒
मुख॑मासीत्। बा॒हू रा॑ज॒न्यः कृ॒तः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पृथ्वा९ शूद्रो अजायत॥ चन्द्रमा मनसो जातः।

चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥ नाभ्या
आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पृथ्वां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा
लोका९ अकल्पयन्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि
विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्तै॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार।
शक्रः प्रविद्वान्प्रदिशश्चतस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था
अयनाय विद्यते॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥

शिरसे स्वाहा॥



॥ उत्तरनारायणम् ॥

अद्भ्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाच्च। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टा
विदधद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्।
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था
विद्यतेयनाय॥ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायमानो बहुधा विजायते।
तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः॥ यो
देवेभ्य आतपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो
रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयन्तः। देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो
विद्यात्। तस्य देवा असन् वशे॥ ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे।
नक्षत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। अमुं मनिषाण। सर्वं

मनिषाण॥

शिखायै वषट्॥



॥ अप्रतिरथम् ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - ४/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - ४)

आशुः शिशानो वृषभो न युध्मो घनाघ्नः क्षोभणश्चरषणीनाम्।

सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शत९ सेना अजयत् साकमिन्द्रः।

सङ्क्रन्दननानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्चवनेन धृष्णुना। तदिन्द्रेण जयत्

तथ्सहध्वं युधौ नर इषुहस्तेन वृष्णा। स इषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशी

स९स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन। स९सृष्टजिथ्सोमपा बाहुशध्यूर्ध्वधन्वा

प्रतिहिताभिरस्ता।

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रा९ अपबाधमानः। प्रभञ्जन्त्सेनाः

प्रमृणो युधा जयन्तस्माकमेध्यविता रथानाम्। गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं

जयन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजसा। इम९ संजाता अनु वीरयध्वमिन्द्र९

सखायोऽनु स९ रभध्वम्। बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी

सहमान उग्रः। अभिवीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ

गोवित्। अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदायो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।

दुश्चवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माक९ सेना अवतु प्र युध्मु। इन्द्र आसां नेता

बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां

मरुतो यन्त्वग्रै। इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुता९ शर्ध

उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्।

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।

अ॒स्माकं वी॒रा उत्त॑रे भवन्त्व॒स्मानु॑ देवा अवता हवेषु। उद्ध॑र्षय
 मघव॑न्नायु॒धान्यु॑त् सत्त्वंनां॑ माम॒कानां॑ महा॑सि। उद्ध॑त्रहन् वा॒जिनां॑
 वा॒जिना॑न्यु॒द्रथानां॑ जय॑तामेतु घोषः। उप॑ प्रेत॒ जय॑ता नरः स्थि॒रा वः सन्तु॑
 बा॒हवः। इन्द्रो॑ वः शर्म॑ यच्छ॒त्त्वनाधृ॑ष्या यथाऽस॑थ। अव॑सृष्टा परा॑ पत॒
 शर॑व्ये ब्रह्म॑संशिता।

गच्छा॑मित्रान् प्रवि॑श॒ मेषां॑ कं च॒नोच्छि॑षः। मर्मा॑णि ते वर्म॑भिश्छादयामि
 सोम॑स्त्वा॒ राजा॑ऽमृते॒नाभि॑वस्ताम्। उ॒रोर्वरी॑यो वरि॑वस्ते अस्तु॒ जय॑न्तं
 त्वाम॑नु॒ मदन्तु॑ देवाः। यत्र॑ बा॒णाः स॒म्पत॑न्ति कुमा॒रा वि॑शि॒खा इ॒वा इन्द्रो॑
 न॒स्तत्र॑ वृ॒त्रहा वि॑श्वा॒हा शर्म॑ यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥



॥ प्रतिपूरुषम् (सं०) ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्र॒ति॒पू॒रुष॑मेक॒कपाला॑न्निर्व॒पत्ये॑क॒मति॑रिक्तं याव॑न्तो गृ॒ह्याः स्म॑स्तेभ्यः कर्म॑करं
 पशू॑नां शर्मा॑सि शर्म॑ यज॑मानस्य शर्म॑ मे य॒च्छैकं॑ ए॒व रु॒द्रो न द्वि॑तीयाय
 तस्थ॑ आ॒खुस्तै॑ रु॒द्र प॑शुस्तं जु॒षस्वैष॑ ते रु॒द्र भा॑गः स॒ह स्व॑स्त्राऽम्बि॑कया॒ तं
 जु॒षस्व॑ भेष॒जं ग॑वेऽश्वा॒य पुरु॑षाय भेष॒जमथो॑ अ॒स्मभ्य॑ भेष॒जं सु॑भेष॒जं
 यथा॑ऽसति। सु॒गं मे॑षाय॒ मे॒ष्या अ॒वा॒म्ब रु॒द्रम॑दिम॒ह्यव॑ दे॒वं त्र्य॑म्बकम्। यथा॑
 नः॒ श्रेय॑सः॒ कर्॒द्यथा॑ नो॒ वस्य॑सः॒ कर्॒द्यथा॑ नः॒ पशु॑मतः॒ कर्॒द्यथा॑ नो
 व्य॒वसा॑यया॑त्। त्र्य॑म्बकं यजामहे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टि॒वर्ध॑नम्। उ॒र्वारु॑कमि॒व
 बन्ध॑नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय॒ माऽमृ॑ता॑त्॥ ए॒ष ते॑ रु॒द्रभा॑गस्तं जु॒षस्व॑ तेना॒वसे॑न॒ परो॑
 मू॒ज॒वतो॑ऽती॒ह्यव॑ततधन्वा॒ पिना॑कहस्तः॒ कृत्ति॑वासाः॥

॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालात्रिर्वपति। जा॒ता ए॒व प्र॒जा रु॒द्रान्नि॒रव॑दयते।
 एक॑मतिरिक्तम्। ज॒नि॒ष्यमा॑णा ए॒व प्र॒जा रु॒द्रान्नि॒रव॑दयते। एकंकपाला
 भव॑न्ति। एक॑धैव रु॒द्रं नि॒रव॑दयते। नाभि॑धारयति। यद॑भिधारयेत्।
 अ॒न्त॒र॒व॒चा॒रिण॑ रु॒द्रं क॑र्यात्। ए॒को॒ल्मु॒केन॑ यन्ति। तद्धि रु॒द्रस्य॑ भा॒ग॒धेय॑म्।
 इ॒मां दि॑शं यन्ति। ए॒षा वै रु॒द्रस्य॑ दिक्। स्वा॒यामे॒व दि॑शि रु॒द्रं नि॒रव॑दयते।
 रु॒द्रो वा अ॑प॒शुका॑या आ॒हुत्यै॑ नातिष्ठत। अ॒सौ ते॑ प॒शुरि॑ति नि॒र्दिशे॑द्यं
 द्वि॒ष्यात्। यमे॒व द्वेष्टि॑। तम॑स्मै प॒शुं नि॒र्दिश॑ति। यदि॑ न द्वि॒ष्यात्। आ॒खुस्ते॑
 प॒शुरि॑ति ब्रूयात्। न ग्रा॒म्यान् प॒शून् हि॑नस्ति। ना॒र॒ण्यान्। च॒तु॒ष्प॒थे जु॑होति।
 ए॒ष वा अ॑ग्नीनां प॒ङ्क्ति॑शो नाम। अ॒ग्नि॒व॒त्येव॑ जुहोति। म॒ध्यमे॑न॒ पर्णे॑न जुहोति।
 सु॒ग॒ध्येषा॑। अथो॒ खलु॑। अ॒न्त॒मे॒नैव॑ होतव्यम्। अ॒न्त॒त ए॒व रु॒द्रं नि॒रव॑दयते।
 ए॒ष ते॑ रु॒द्र भा॒गः स॒ह स्व॒स्त्राऽम्बि॑कयेत्याह। शर॒द्धा अ॒स्याम्बि॑का स्व॒सा।
 तया॒ वा ए॒ष हि॑नस्ति। य॒ः हि॑नस्ति। तयै॒वेन॑ स॒ह शे॑मयति। भे॒ष॒जं ग॒व॒
 इ॒त्याह॑। याव॑न्त ए॒व ग्रा॒म्याः प॒शवः॑। तेभ्यो॑ भे॒ष॒जं क॑रोति। अवा॑म्ब
 रु॒द्रम॑दिम॒हीत्या॑ह। आ॒शिष॑मे॒वैता॑माशास्ते। त्र्य॑म्बकं यजामह॒ इत्या॑ह।
 मृ॒त्योर्मु॑क्षीय माऽमृ॒तादि॑ति वावैतदाह। उ॒त्कि॑रन्ति। भ॒गस्य॑ लीप्सन्ते। मू॒ते
 कृ॒त्वाऽऽस॑जन्ति। यथा॑ ज॒नं य॒तेऽव॑सं क॑रोति। ता॒दृगे॒व तत्। ए॒ष ते॑ रु॒द्र
 भा॒ग इ॒त्याह॑ नि॒रव॑त्यै। अ॒प्र॒तीक्ष॑मायन्ति। अ॒पः परि॑षिञ्चति।
 रु॒द्रस्या॑न्त॒र्हित्यै॑। प्र॒ वा ए॒तेऽस्मा॑ल्लो॒काच्च॑वन्ते। ये त्र्य॑म्बकैश्चरन्ति। आ॒दि॒त्यं
 च॒रुं पु॒नरे॒त्य॒ नि॒र्वप॑ति। इ॒यं वा अ॑दि॒तिः। अ॒स्यामे॒व प्र॒ति॑तिष्ठन्ति।
 नेत्र॑त्रयाय वौषट्॥



॥ शतरुद्रीयम् (सं०) ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - १४)

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व॑ शर्धो॑ मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं
वातैररुणैर्यासि शङ्गयस्त्वं पूषा विधुतः पांसि॑ नु त्मना॑। आ वो
राजानमध्वरस्य॑ रुद्र॑ होतार॑ सत्ययज॑ रोदस्योः। अग्निं पुरा
तनयितोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्। अग्निर्होता नि षसादा
यजीयानुपस्थे मातुः सुरभावं लोके। युवां कविः पुरुनिष्ठ ऋतावां धर्ता
कृष्टीनामुत मध्यं इद्धः।

साध्वीमकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्य॑ जिह्वामविदाम् गुह्याम्। स
आयुराऽगाँत्सुरभिर्वसानो भद्रामकर्देवहूतिं नो अद्य। अक्रन्ददग्निः
स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन्। सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो
अख्यदा रोदसी भानुना॑ भात्यन्तः। त्वे वसूनि॑ पूर्वणीक होतर्दोषा
वस्तोररिरे यज्ञियांसः।

क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्त्स॑ सौभंगानि दधिरे पावके। तुभ्यं ता
अङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथक्। अग्ने कामाय॑ येमिरे। अश्याम् तं
काममग्ने तवोत्यश्याम॑ रयि॑ रयिवः सुवीरम्। अश्याम् वाजमभि
वाजयन्तोऽश्याम॑ द्युम्नमंजराऽजरन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्रे द्युमन्तमा भर।

वसो पुरुस्पृह॑ रयिम्। स श्वितानस्तन्यतू रोचनस्था
अजरैर्भिर्नानदद्विर्यविष्ठः। यः पावकः पुरुतमः पुरुणि पृथून्यग्निरनुयाति
भर्वन्। आयुष्टे विश्वतो दधदयमग्निर्वरण्यः। पुनस्ते प्राण आयति परा
यक्ष्म॑ सुवामि ते। आयुर्दा अग्ने हविषो जुषाणो घृतप्रतीको घृतयोनिरेधि।

घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेवं पुत्रमभिरक्षतादिमम्।

तस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचरषणे। अग्ने जनामि सुष्टुतिम्। दिवस्परि
प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद्वितीयं परि जातवेदाः। तृतीयमप्सु नृमणा
अजस्रमिन्धान एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक वन्द्योऽग्रे बृहद्विरोचसे। त्वं
घृतेभिराहुतः। दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौदुर्मरुमायुः श्रिये रुचानः।

अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयथ्सुरेताः।

आ यदिषे नृपतिं तेज आनद्धुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीकै। अग्निः शर्धमनवद्यं
युवानं स्वाधियं जनयथ्सूदयच्च। स तेजीयसा मनसा त्वोतं उत शिक्ष
स्वपत्यस्य शिक्षोः। अग्रे रायो नृतमस्य प्रभूतौ भूयाम ते सुष्टुतयश्च वस्वः।
अग्रे सहन्तमा भर द्युमस्य प्रासहा रयिम्।

विश्वा यश्चरषणीरभ्यासा वाजेषु सासहत्। तमग्रे पृतना सह रयिं
सहस्व आ भर। त्वं हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः। उक्षान्नाय
वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे। स्तोमैर्विधेमाग्नये। वद्मा हि सूनो अस्यद्वसद्वा
चक्रे अग्निर्जनुषाऽज्माऽन्नम्। स त्वं न ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके
क्षेप्यन्तः।

अग्र आयूषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनाम्। अग्रे
पवंस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधत्पोष रयिं मयि। अग्रे पावक
रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च। स नः पावक
दीदिवोऽग्रे देवा इहाऽऽवह। उप यज्ञं हविश्च नः। अग्निः शुचिं व्रततमः
शुचिर्विप्रः शुचिः कविः। शुची रोचत आहुतः। उदग्रे शुचयस्तव शुक्रा
भ्राजन्त ईरते। तव ज्योतींश्चर्ययः॥

॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं
 वातैररुणैर्यासि शङ्ख्यः। त्वं पूषा विधतः पांसि नु त्मना। देवा देवेषु
 श्रयध्वम्। प्रथमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्।
 तृतीयाश्चतुर्थेषु श्रयध्वम्। चतुर्थाः पञ्चमेषु श्रयध्वम्। पञ्चमाः षष्ठेषु
 श्रयध्वम्॥ षष्ठाः सप्तमेषु श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषु श्रयध्वम्। अष्टमा
 नवमेषु श्रयध्वम्। नवमा दशमेषु श्रयध्वम्। दशमा एकादशेषु श्रयध्वम्।
 एकादशा द्वादशेषु श्रयध्वम्। द्वादशास्त्रयोदशेषु श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चतुर्दशेषु
 श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पञ्चदशेषु श्रयध्वम्। पञ्चदशाः षोडशेषु श्रयध्वम्॥
 षोडशाः सप्तदशेषु श्रयध्वम्। सप्तदशा अष्टादशेषु श्रयध्वम्। अष्टादशा
 ऐकान्नविंशेषु श्रयध्वम्। ऐकान्नविंशा विंशेषु श्रयध्वम्। विंशा
 ऐकविंशेषु श्रयध्वम्। ऐकविंशा द्वाविंशेषु श्रयध्वम्।
 द्वाविंशास्त्रयोविंशेषु श्रयध्वम्। त्रयोविंशाश्चतुर्विंशेषु श्रयध्वम्।
 चतुर्विंशाः पञ्चविंशेषु श्रयध्वम्। पञ्चविंशाः षड्विंशेषु श्रयध्वम्॥
 षड्विंशाः सप्तविंशेषु श्रयध्वम्। सप्तविंशा अष्टाविंशेषु श्रयध्वम्।
 अष्टाविंशा ऐकान्नत्रिंशेषु श्रयध्वम्। ऐकान्नत्रिंशास्त्रिंशेषु श्रयध्वम्।
 त्रिंशा ऐकत्रिंशेषु श्रयध्वम्। ऐकत्रिंशा द्वात्रिंशेषु श्रयध्वम्।
 द्वात्रिंशास्त्रयस्त्रिंशेषु श्रयध्वम्। देवास्त्रिंशेकादशास्त्रिंशेकादशाः। उत्तरे
 भवता उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्त्वानः। यत्काम इदं जुहोमि। तन्मे समृध्यताम्।
 वयं स्याम पतयो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥
 ॐ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥ अस्त्राय फट्॥

॥ पञ्चाङ्गम् ॥

ह॒ः सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥

प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

तत्सवितुर्वृणीमहे। वयं देवस्य भोजनम्।
श्रेष्ठं सर्वधातमम्। तुरं भगस्य धीमहि॥
विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टा रूपाणि पिशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥



॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
[उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
[शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचौ वेन आवः।
सबुध्रिया उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥१॥

[दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

म॒ही द्यौः पृ॒थि॒वी च॑ न इ॒मं य॒ज्ञं मि॑मिक्षताम्। पि॒पृ॒ता॒न्नो भ॑रीमभिः॥
[मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उप॑श्वासय पृथि॒वीमु॒त द्यां पु॑रु॒त्रा तै॑ मनु॒तां वि॑ष्ठि॒तं जग॑त्।
स दु॑न्दु॒भे स॒जूरि॒न्द्रेण॑ दे॒वैर्दू॒राद्वी॒यो अप॑सेधु॒ शत्रू॑न्॥
[वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अ॒ग्ने न॑य॒ सुप॑था॒ रा॒ये अ॒स्मान् वि॒श्वानि॑ दे॒व व॒युना॑नि वि॒द्वान्।
यु॒यो॒ध्य॒स्मञ्जु॑हुराणमे॒नो भू॒यि॑ष्ठां ते नम॑ उ॒क्तिं वि॑धेम॥
[पद्भ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या ते॑ अ॒ग्ने रु॒द्रिया॑ त॒नूस्त॑या॒ नः पा॒हि॒ तस्या॑स्ते॒ स्वाहा॑॥
[कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

इ॒मं य॑मप्र॒स्त॒रमा॑हि सी॒दाऽङ्गि॑रोभिः पि॒तृभिः॑ संवि॒दानः॑। आ॒त्वा म॒न्त्राः
कवि॑शस्ता व॒हन्त्वे॒ना रा॑जन् ह॒विषा॑ मादयस्व॥
[कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥



॥ लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम् ॥

अथाऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री रुद्र रूपं ध्यायेत्॥

शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम्।

गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्।

व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥

कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्।

ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥

वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्।
अमृते नाप्नुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥

दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥

सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥

अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा
उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्लवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य
दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

॥ लघुन्यासे देवता-स्थापनम् ॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु।
बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे
वसवस्तिष्ठन्तु। वक्त्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु।
नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरश्विनौ तिष्ठेताम्। ललाटे
रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरसि महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां
वामदेवस्तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः
शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः
सर्वतोऽग्निर्ज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं
तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अ॒ग्नि॒र्मे वा॒चि श्रि॒तः। वा॒ग्धृ॒दये। हृ॒दयं॑ म॒यि। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॒णि।
(जिह्वा)

वा॒युर्मे प्रा॒णे श्रि॒तः। प्रा॒णो हृ॒दये। हृ॒दयं॑ म॒यि। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॒णि।
(नासिका)

सूर्यो मे चक्षुषि श्रितः। चक्षुरहृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि।
(नेत्रे)

चन्द्रमा मे मनसि श्रितः। मनो हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (वक्षः)

दिशो मे श्रोत्रे श्रिताः। श्रोत्रं हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपो मे रेतसि श्रिताः। रेतो हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (गुह्यम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीरं हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओषधिवनस्पतयो मे लोमसु श्रिताः। लोमानि हृदये। हृदयं मयि।
अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रो मे बले श्रितः। बलं हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि।
(बाहू)

पर्जन्यो मे मूर्ध्नि श्रितः। मूर्धा हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशानो मे मन्यौ श्रितः। मन्युरहृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा मे आत्मनि श्रितः। आत्मा हृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं
ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुनर्म आत्मा पुनरायुरागात्। पुनः प्राणः पुनराकूतमागात्। वैश्वानरो
रश्मिभिर्वावृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य
स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)



॥ आत्मपूजा ॥

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धेर्देवासुरादिभिः।
आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण महेश्वर॥

॥ कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् ॥

ध्यायेन्निरामयं वस्तुं सर्गस्थितिलयादिकम्।
निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनोवाचामगोचरम्॥१॥

गङ्गाधरं शशिधरं जटामकुटशोभितम्।
श्वेतभूतित्रिपुण्ड्रेण विराजितललाटकम्॥२॥

लोचनत्रयसम्पन्नं स्वर्णकुण्डलशोभितम्।
स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितम्॥३॥

अक्षमालां सुधाकुम्भं चिन्मयीं मुद्रिकामपि।
पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिम्॥४॥

श्वेताम्बरधरं श्वेतं रत्नसिंहासनस्थितम्।
सर्वाभीष्टप्रदातारं वटमूलनिवासिनम्॥५॥

वामाङ्कसंस्थितां गौरीं बालार्कायुतसन्निभाम्।
जपाकुसुमसाहस्रसमानश्रियमीश्वरीम् ।
सुवर्णरत्नखचितमकुटेन विराजिताम्॥६॥

ललाटपट्टसंराजत्संलग्नतिलकाञ्चिताम् ।
राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पलदलेक्षणाम्॥७॥

सन्तप्तहेमखचित-ताटङ्काभरणान्विताम्।
ताम्बूलचर्वणरतरक्तजिह्वाविराजिताम् ॥८॥

पताकाभरणोपेतां मुक्ताहारोपशोभिताम्।
स्वर्णकङ्कणसंयुक्तैश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युताम् ॥९॥

सुवर्णरत्नखचित-काञ्चीदामविराजिताम् ।
कदलीललितस्तम्भ-सन्निभोरुयुगान्विताम् ॥१०॥

श्रिया विराजितपदां भक्तत्राणपरायणाम्।
अन्योन्याश्लिष्टहृद्वाहू गौरीशङ्करसंज्ञकम् ॥११॥

सनातनं परं ब्रह्म परमात्मानमव्ययम्।
आवाहयामि जगतामीश्वरं परमेश्वरम् ॥१२॥

मङ्गलायतनं देवं युवानमति सुन्दरम्।
ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले सुखासीनं सहोमया ॥१३॥

आगच्छाऽऽगच्छ भगवन् देवेश परमेश्वर।
सच्चिदानन्द भूतेश पार्वतीश नमोऽस्तु ते ॥१४॥



॥ प्रदक्षिणम् ॥

द्रा॒पे अ॒न्ध॑स॒स्प॒ते द॒रि॒द्र॒न्नी॒ल॒लो॒हि॒त। ए॒षां पु॒रु॒षा॒णा॒मे॒षां प॑शूनां मा भेर्माऽ॒रो
मो ए॒षां किं च॑नाऽऽम॑मत् ॥ या ते॑ रु॒द्र शि॒वा त॒नूः शि॒वा वि॒श्वाह॑भेषजी।
शि॒वा रु॒द्रस्य॑ भेष॒जी तया॑ नो मृ॒ड जी॒वसै॑ ॥ इ॒मां रु॒द्राय॑ त॒वसै॑ क॒पर्दि॑ने
क्ष॒य॒द्वी॒राय॑ प्रभ॑रामहे म॒तिम् ॥ यथा॑ नः श॒मस॑द्वि॒पदे॑ च॒तु॑ष्पदे॒ विश्वं॑ पु॒ष्टं ग्रा॑मे
अ॒स्मिन्न॑ना॒तुर॑म् ॥ मृ॒डा नो॑ रु॒द्रो॒त नो॑ म॒यस्कृ॑धि क्ष॒य॒द्वी॒राय॑ नम॑सा विधेम
ते। यच्छं॑ च॒ योश्च॑ म॒नु॒राय॑जे पि॒ता तद॑श्याम॒ तव॑ रु॒द्र प्र॑णी॒तौ ॥ मा नो॑
म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ उक्षि॒तम्। मा नो॑ व॒धीः
पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॑रिषः ॥ मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा
न॒ आयु॑षि॒ मा नो॑ गो॒षु मा नो॑ अ॒श्वेषु॑ री॒रिषः॑। वी॒रान्मा॑ नो॒ रु॒द्र

भामितोऽवधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते॥ आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने
 क्षयद्वीराय सुम्रमस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूहधा च नः शर्म
 यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपहृत्तुमुग्रम्। मृडा
 जंरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्य
 हेतिवृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरंघायोः। अव स्थिरा मधवञ्चस्तनुष्व
 मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव।
 परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चर पिनाकं बिभ्रदा गंहि॥
 विकिरिद् विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रं
 हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तव हेतयः।
 तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥



॥ नमस्काराः ॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि
 तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१॥

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भूवा अधि। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि
 तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥२॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः। तेषां
 सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥३॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवः रुद्रा उपश्रिताः। तेषां
 सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥४॥

ये वृक्षेषु सस्मिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि
 तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥५॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि
तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥६॥

ये अत्रैषु विविध्यन्ति पात्रैषु पिबन्तो जनान्। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि
तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥७॥

ये पृथां पंथिरक्षय ऐलबृदा यव्युधः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि
तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥८॥

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सूकावन्तो निषङ्गिणः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि
तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥९॥

य एतावन्तश्च भूयांसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषां
सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥

नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश
प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो
द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमो रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश
प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो
द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमो रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वरुणमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश
प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो
द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥

नमस्कारान् कृत्वा॥



॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना ॥

अग्राविष्णू सजोषसेमा वर्धन्तु वां गिरः। द्युमैर्वाजेभिरागतम्॥ वाजंश्च मे
 प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे
 श्लोकश्च मे श्रावश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवश्च मे प्राणश्च मेऽपानश्च मे
 व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च म आधीतं च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे
 श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च म ओजश्च मे सहश्च म आयुश्च मे जरा च म
 आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे
 परूरुषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा
 च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे
 वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे
 त्विषिश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च
 मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे
 सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे
 सुमतिश्च मे॥२॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च
 मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता
 च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च
 मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च म ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च
 मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं
 च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे॥३॥

ऊर्क्क॑ मे॒ सूनृ॑तां च मे॒ पय॑श्च मे॒ रस॑श्च मे॒ घृतं॑ च मे॒ मधु॑ च मे॒ सग्धि॑श्च मे॒
 सपी॑तिश्च मे॒ कृषि॑श्च मे॒ वृष्टि॑श्च मे॒ जैत्रं॑ च म॒ औद्भि॑द्यं च मे॒ रयि॑श्च मे॒
 राय॑श्च मे॒ पुष्टं॑ च मे॒ पुष्टि॑श्च मे॒ वि॒भु च॑ मे॒ प्र॒भु च॑ मे॒ बहु॑ च मे॒ भूय॑श्च मे॒
 पूर्णं॑ च मे॒ पूर्ण॑तरं च मे॒ऽक्षि॑तिश्च मे॒ कूय॑वाश्च मे॒ऽन्नं॑ च मे॒ऽक्षु॑च्च मे॒ व्री॒हय॑श्च
 मे॒ यवा॑श्च मे॒ माषा॑श्च मे॒ तिला॑श्च मे॒ मुद्गा॑श्च मे॒ ख॒ल्वा॑श्च मे॒ गो॒धूमा॑श्च मे॒
 म॒सुरा॑श्च मे॒ प्रि॒यङ्ग॑वश्च मे॒ऽण॑वश्च मे॒ श्या॒माका॑श्च मे॒ नी॒वारा॑श्च मे॥४॥

अश्मा॑ च मे॒ मृत्ति॑का च मे॒ गिर॑यश्च मे॒ पर्व॑ताश्च मे॒ सिक॑ताश्च मे॒
 वन॑स्पतयश्च मे॒ हिर॑ण्यं च मे॒ऽय॑श्च मे॒ सीसं॑ च मे॒ त्रपु॑श्च मे॒ श्या॑मं च मे॒
 लो॒हं च॑ मे॒ऽग्नि॑श्च म॒ आप॑श्च मे॒ वी॒रुध॑श्च म॒ ओष॑धयश्च मे॒ कृ॒ष्टप॑च्यं च॒
 मे॒ऽकृ॒ष्टप॑च्यं च॒ मे॒ ग्राम्या॑श्च मे॒ प॒शव॑ आ॒रण्या॑श्च य॒ज्ञेन॑ कल्पन्तां वि॒त्तं च॑
 मे॒ वि॒त्ति॑श्च मे॒ भूतं॑ च मे॒ भूति॑श्च मे॒ वसु॑ च मे॒ वस॑तिश्च मे॒ कर्म॑ च मे॒
 शक्ति॑श्च मे॒ऽर्थ॑श्च म॒ ए॒मश्च॑ म॒ इति॑श्च मे॒ गति॑श्च मे॥५॥

अ॒ग्निश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सोम॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सवि॑ता च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒
 सर॑स्वती च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ पूषा॑ च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ बृ॒हस्प॑तिश्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒
 मि॒त्रश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ वरु॑णश्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ त्वष्टा॑ च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ धा॒ता च॑
 म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ विष्णु॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ऽश्वि॑नौ च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ म॒रुत॑श्च म॒
 इन्द्र॑श्च मे॒ विश्वे॑ च मे॒ दे॒वा इन्द्र॑श्च मे॒ पृथि॑वी च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ऽन्तरि॑क्षं च म॒
 इन्द्र॑श्च मे॒ द्यौश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ दि॒शश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ मूर्धा॑ च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒
 प्र॒जाप॑तिश्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॥६॥

अ॒शुश्च॑ मे॒ र॒श्मिश्च॑ मे॒ऽदा॑भ्यश्च मे॒ऽधि॑पतिश्च म॒ उपा॑शुश्च मे॒ऽन्तर्या॑मश्च म॒
 ऐ॒न्द्रवा॑यवश्च मे॒ मै॒त्रावरु॑णश्च म॒ आ॒श्विन॑श्च मे॒ प्रति॑प्र॒स्थान॑श्च मे॒ शु॒क्रश्च॑ मे॒
 म॒न्थी च॑ म॒ आग्र॑यणश्च मे॒ वै॒श्वदे॑वश्च मे॒ ध्रु॒वश्च॑ मे॒ वै॒श्वान॑रश्च म॒ ऋ॒तुग्र॑हाश्च

मेऽतिग्राह्यांश्च मे ऐन्द्राग्रंश्च मे वैश्वदेवंश्च मे मरुत्वतीयांश्च मे माहेन्द्रंश्च मे
आदित्यंश्च मे सावित्रंश्च मे सारस्वतंश्च मे पौष्णंश्च मे पात्नीवतंश्च मे
हारियोजनंश्च मे॥७॥

इध्मंश्च मे बर्हिंश्च मे वेदिंश्च मे धिष्णिंश्च मे सुचंश्च मे चमसांश्च मे
ग्रावाणंश्च मे स्वरंश्च मे उपरवांश्च मेऽधिषवणे च मे द्रोणकलशंश्च मे
वायुव्यानि च मे पूतभृच्च मे आधवनीयंश्च मे आग्नीध्रं च मे हविर्धानं च मे
गृहांश्च मे सदंश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचतांश्च मेऽवभृथंश्च मे स्वगाकारंश्च
मे॥८॥

अग्निंश्च मे घर्मंश्च मेऽर्कंश्च मे सूर्यंश्च मे प्राणंश्च मेऽश्वमेधंश्च मे पृथिवी च
मेऽदितिंश्च मे दितिंश्च मे द्यौश्च मे शक्ररीरङ्गुलंश्च मे दिशंश्च मे यज्ञेन
कल्पन्तामृक्कं मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यजुंश्च मे दीक्षा च मे तपंश्च मे
ऋतुंश्च मे व्रतं च मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्॥९॥
गर्भांश्च मे वत्सांश्च मे त्र्यविंश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाच्च मे दित्यौही च मे
पञ्चाविंश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्संश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाच्च मे तुर्यौही
च मे पष्ठवाच्च मे पष्ठौही च मे उक्षा च मे वशा च मे ऋषभंश्च मे वेहंश्च
मेऽनुङ्गां च मे धेनुंश्च मे आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो
यज्ञेन कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन
कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो
यज्ञेन कल्पताम्॥१०॥

एकां च मे तिस्रंश्च मे पञ्चं च मे सप्तं च मे नवं च मे एकादशं च मे
त्रयोदशं च मे पञ्चदशं च मे सप्तदशं च मे नवदशं च मे एकविंशतिंश्च मे
त्रयोविंशतिंश्च मे पञ्चविंशतिंश्च मे सप्तविंशतिंश्च मे नवविंशतिंश्च मे
एकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे चतस्रंश्च मेऽष्टौ च मे द्वादशं च मे षोडशं

च मे वि॑शतिश्च॑ मे चतुर्वि॑शतिश्च मेऽष्टावि॑शतिश्च मे द्वात्रि॑शच्च मे
 षट्त्रि॑शच्च मे चत्वारि॑शच्च मे चतुश्चत्वारि॑शच्च मेऽष्टाचत्वारि॑शच्च मे
 वाज॑श्च प्रसवश्चापिजश्च॑ क्रतु॑श्च सुव॑श्च मूर्धा च व्यश्रि॑यश्चान्त्याय॑नश्चान्त्य॑श्च
 भौव॑नश्च भुव॑नश्चाधिपतिश्च॥११॥

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

इडा॑ देव॒हर्म॑नुर्यज्ञ॒नीर्बृ॑हस्पति॑रुक्थाम॒दानि॑ श॒सिष॑द्वि॒श्वेदे॒वाः सू॑क्तवाचः
 पृथि॑वि मात॒र्मा मां हि॑सीर्मधु॑ मनिष्ये॒ मधु॑ जनिष्ये॒ मधु॑ वक्ष्यामि॒ मधु॑
 वदिष्यामि॒ मधु॑मतीं दे॒वेभ्यो॑ वाच॑मुद्यास॒ शुश्रू॑षेण्या॑ मनुष्ये॑भ्यस्तं मां दे॒वा
 अव॑न्तु शोभायै॑ पि॒तरोऽनु॑मदन्तु॥
 ॥ॐ॑ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑॥



अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घोर॑घोर॒तरे॑भ्यः।
 सर्वे॑भ्यः सर्व॒शर्वे॑भ्यो नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः॥
 तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ महादे॒वाय॑ धीमहि।
 तन्नो॑ रु॒द्रः प्रचो॑दयात्॥

ईशानः॑ सर्व॒विद्या॒नामी॒श्वरः॑ सर्व॒भूता॒नां ब्र॒ह्माधि॑पति॒र्ब्रह्म॒णोऽधि॑पति॒र्ब्रह्मा॑ शि॒वो
 मे॑ अस्तु सदाशि॒वोम्॥

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ महादे॒वाय॑ धीमहि।
 तन्नो॑ रु॒द्रः प्रचो॑दयात्॥ (दशवारं जपेत्॥)

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



॥ प्रार्थना ॥



॥ श्रीरुद्रजपः ॥

अस्य श्री रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्त्रस्य। अघोर ऋषिः।
 अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष
 रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः।
 महादेवायेति कीलकम्।
 श्री साम्बसदाशिवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥
 ॥करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
 दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः।
 चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः।
 निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः।
 ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
 सर्वक्रत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
 ॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः।
 दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा।
 चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्।
 निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं।
 ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।
 सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्।
 भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ ध्यानम् ॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत्
ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णन्दु-वान्तामृतैः।
अस्तोकाप्लुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन्
ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिञ्चेच्छिवम्॥

ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भसित-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गैः
कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शशि-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः।
त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः
रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥
॥ पञ्चपूजा ॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि।
हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि।
यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि।
रं अग्न्यात्मने दीपं दर्शयामि।
वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि।
सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥
ॐ महागणपतये नमः॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च
मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता
च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च
मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च
मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं
च मे शयनं च मे सृषा च मे सुदिनं च मे॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...
अभिषेकः—प्रथमं गन्धतोयं च

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

अग्नाविष्णू सजोषसेमा वर्धन्तु वां गिरः। द्युमैर्वाजेभिरागतम्॥ वाजंश्च मे
प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे
श्लोकश्च मे श्रावश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवश्च मे प्राणश्च मेऽपानश्च मे
व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तं च मे आधीतं च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे
श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे ओजश्च मे सहश्च मे आयुश्च मे जरा च मे
आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे
परूषि च मे शरीराणि च मे॥

यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियो रुद्रो महर्षिः।
हिरण्यगर्भं पश्यत जायमानं स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्तु॥
अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
महादेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—द्वितीयं पञ्चगव्यकम्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा
च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे
वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे
त्विषिश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे
सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथं
च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे॥

यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायोऽस्ति कश्चित्।

वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥

अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

शिवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—पञ्चामृतं तृतीयं स्यात्

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च

मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे यन्ता च मे धर्ता
 च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च
 मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च
 मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं
 च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे॥

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानुशुः।
 परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजदेतद्यतयो विशन्ति॥
 अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। ...
 अभिषेकः—घृतस्नानं चतुर्थकम्॥

...
 त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ऊर्क् मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधुं च मे सग्धिश्च मे
 सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च मे औद्भिद्यं च मे रयिश्च मे
 रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभुं च मे प्रभुं च मे बहुं च मे भूयश्च मे
 पूर्णं च मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूयवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे व्रीहयश्च
 मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे
 मसुराश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे॥

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः सन्त्यास योगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।
 ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे॥
 अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...
 अभिषेकः—पञ्चमं पयसा स्नानं

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अश्मां च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे
 वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे सीसं च मे त्रपुश्च मे श्यामं च मे
 लोहं च मेऽग्निश्च मे आपश्च मे वीरुधश्च मे ओषधयश्च मे कृष्टपच्यं च
 मेऽकृष्टपच्यं च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च
 मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे
 शक्तिश्च मेऽर्थश्च मे एमश्च मे इतिश्च मे गतिश्च मे॥

दहं विपापं परमेऽश्मभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसुस्थम्।
 तत्रापि दहं गगनं विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपासितव्यम्॥
 अनेन पञ्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
नीललोहितः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—दधिस्नानं तु षष्ठकम्।

...

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे
सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे
मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे धाता च
म इन्द्रश्च मे विष्णुश्च म इन्द्रश्च मेऽश्विनौ च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म
इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे पृथिवी च म इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म
इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे मूर्धा च म इन्द्रश्च मे
प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च मे॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।

तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः॥

अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

ईशानः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—सप्तमं मधुना स्नानम्

...

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अ॒श्शु॒श्च मे र॒श्मिश्च मेऽदा॑भ्यश्च मेऽधि॑पतिश्च म उपा॒श्शु॒श्च मेऽन्तर्या॑मश्च म
ऐन्द्र॑वायवश्च मे मै॒त्रावरु॑णश्च म आ॒श्विनश्च मे प्रति॑प्रस्थानश्च मे शु॒क्रश्च मे
म॒न्थी च॑ म आ॒ग्रय॑णश्च मे वै॒श्वदे॑वश्च मे ध्रु॒वश्च मे वै॒श्वान॒रश्च म ऋ॒तुग्रा॑हाश्च
मेऽति॑ग्रा॒ह्याश्च म ऐन्द्रा॑ग्रश्च मे वै॒श्वदे॑वश्च मे मरु॒त्वती॑याश्च मे माहेन्द्र॑श्च म
आदि॒त्यश्च मे सावि॒त्रश्च मे सा॒रस्व॒तश्च मे पौ॒ष्णश्च मे पा॒त्नीव॒तश्च मे
हा॒रियो॒ज॒नश्च मे॥

सद्योजा॒तं प्र॑पद्यामि सद्योजा॒ताय॒ वै नमो॑ नमः।

भ॒वे भ॑वे नाति॑ भवे भवस्व॒ माम्। भ॒वोद्भ॑वाय॒ नमः॥

अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

विजयः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥ ७ ॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। . . .

अभिषेकः—इक्षुसारमथाष्टमम्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

इ॒ध्मश्च॑ मे ब॒र्हिश्च॑ मे वेदि॑श्च मे धि॒ष्णि॒याश्च॑ मे स्रु॒चश्च॑ मे च॒म॒साश्च॑ मे
ग्रा॒वा॒णश्च॑ मे स्वर॑वश्च म उप॒र॒वाश्च॑ मेऽधि॒ष॒व॒णे च॑ मे द्रो॒णक॒ल॒शश्च॑ मे
वा॒य॒व्या॒नि च॑ मे पू॒त॒भृ॒च्च॑ म आ॒ध॒व॒नी॒यश्च॑ म आ॒ग्नी॑ध्रं च मे ह॒वि॒र्धा॒नं च॑ मे

गृहाश्च मे सदश्च मे पुरोडाशाश्च मे पचताश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः
कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः
सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥
अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
भीमः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। ...
अभिषेकः—नवमं फलसारं च

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥
अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च
मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे शक्ररीरङ्गुलयो दिशश्च मे यज्ञेन
कल्पन्तामृक् मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यजुंश्च मे दीक्षा च मे तपश्च म
ऋतुश्च मे व्रतं च मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
देवदेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—दशमं नाळिकेरकम्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

गर्भाश्च मे वृथाश्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाच्च मे दित्यौही च मे
पश्चाविश्च मे पश्चावी च मे त्रिवृथाश्च मे त्रिवृथा च मे तुर्यवाच्च मे तुर्यौही
च मे पष्ठवाच्च मे पष्ठौही च मे उक्षा च मे वृशा च मे ऋषभश्च मे वेहच
मेऽनृङ्गां च मे धेनुश्च मे आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो
यज्ञेन कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन
कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो
यज्ञेन कल्पताम्॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

अनेन दशम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

भवोद्भवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—एकादशं गन्धतोयं द्वादशं तीर्थमुच्यते॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उ॒र्वा॒रु॒कमि॒व॒ बन्ध॑नान्मृत्योर्मु॒क्षी॒य॒ माऽमृ॑ता॒त्॥

यो रु॒द्रो अ॒ग्नौ यो अ॒प्सु य ओष॑धीषु यो रु॒द्रो वि॒श्वा भु॑व॒नाऽऽवि॑वेश॒ तस्मै॑
रु॒द्राय॒ नमो॑ अस्तु॥ तमु॑ष्टुहि॒ यः स्वि॒षुः सु॒धन्वा॒ यो वि॒श्वस्य॑ क्षय॒ति
भे॒षज॑स्य॒।

(ऋक्) यक्ष्वा॑म॒हे सौ॑म॒न॒साय॑ रु॒द्रं नमो॑भिर्दे॒वम॑सुरं दुव॒स्य॥ अ॒यं मे॒ हस्तो॑
भग॑वान॒यं मे॒ भग॑वत्तरः। अ॒यं मे॑ वि॒श्वभे॑षजोऽयं शि॒वाभि॑र्मर्शनः॥

ये ते॑ स॒हस्र॑म॒युतं॒ पाशा॒ मृत्यो॑ म॒र्त्याय॑ हन्त॒वे। तान् य॒ज्ञस्य॑ मा॒यया॒
सर्वा॑न॒वं य॒जाम॑हे। मृत्य॒वे स्वाहा॑ मृत्य॒वे स्वाहा॑॥ ओं नमो॑ भगवते रु॒द्राय॒
वि॒ष्णवे॑ मृत्यु॒र्मे पा॒हि। प्रा॒णानां॑ ग्रन्थि॒रसि॑ रु॒द्रो मां वि॒शान्त॑कः।
तेना॒त्रेना॑प्याय॒स्व॥ नमो॑ रु॒द्राय॒ वि॒ष्णवे॑ मृत्यु॒र्मे पा॒हि॥

एका॑ च मे ति॒स्रश्च॑ मे॒ पञ्च॑ च मे स॒प्त च॑ मे न॒वं च॑ म॒ एका॑दश च मे
त्रयो॑दश च मे पञ्च॒दश॑ च मे स॒प्तद॑श च मे न॒वद॑श च म॒ एक॑वि॒ंशति॑श्च मे
त्रयो॑वि॒ंशति॑श्च मे पञ्च॒वि॒ंशति॑श्च मे स॒प्तवि॑ंशतिश्च मे न॒ववि॑ंशतिश्च म॒
एक॑त्रि॒ंशच्च॑ मे त्रय॑स्त्रि॒ंशच्च॑ मे च॒तस्र॑श्च मेऽष्टौ च॑ मे द्वा॒दश॑ च मे षोड॑श
च मे वि॒ंशति॑श्च मे च॒तुर्वि॑ंशतिश्च मेऽष्टा॒वि॒ंशति॑श्च मे द्वा॒त्रि॒ंशच्च॑ मे
षट्त्रि॑ंशच्च मे च॒त्वारि॑ंशच्च॑ मे च॒तुश्च॑त्वारि॒ंशच्च॑ मेऽष्टा॒च॒त्वारि॑ंशच्च मे
वा॒जश्च॑ प्र॒स॒वश्चा॑पि॒जश्च॑ क्र॒तुश्च॑ सु॒वश्च॑ मूर्धा च॒ व्य॒श्रिय॑श्चान्त्याय॒नश्चान्त्य॑श्च
भौ॒वन॑श्च भु॒व॒न॒श्चाधि॑पतिश्च॥

ई॒शानः॑ सर्व॒विद्या॑ना॒मीश्वरः॑ सर्व॒भूता॑नां ब्रह्माधि॑पतिर्ब्रह्म॒णोऽधि॑पतिर्ब्रह्मा॑ शि॒वो
मे॑ अस्तु सदाशि॒वोम॑॥

अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

आदित्यात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥

[इडा॑ दे॒व॒हूर्म॑नुर्य॒ज्ञनी॑र्बृह॒स्पति॑रु॒क्थाम॑दा॒निं श॑सि॒षद्वि॒श्वेदे॒वाः सू॑क्त॒वाचः॑

पृथिवि मात॒र्मा मां हि॑सी॒र्मधुं॑ म॒निष्ये॒ मधुं॑ ज॒निष्ये॒ मधुं॑ वक्ष्यामि॒ मधुं॑
वदिष्यामि॒ मधुं॑मतीं दे॒वेभ्यो॒ वाच॑मु॒द्यास॑ शुश्रू॒षेण्यां॑ म॒नुष्ये॑भ्य॒स्तं मां दे॒वा
अ॒वन्तु॑ शो॒भायै॑ पि॒तरोऽनु॑मदन्तु॥]

॥ॐ शान्तिः॒ शान्तिः॒ शान्तिः॑॥



स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

अ॒सौ योऽव॑स॒र्पति॑ नील॑ग्री॒वो विलो॑हितः। उ॒तैनं॑ गो॒पा अ॑दृ॒शन्न॑दृ॒शन्नुद॑हार्यः।
उ॒तैनं॑ वि॒श्वा भू॑तानि॒ स दृ॒ष्टो मृ॑डयाति नः॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। रु॒द्राय॑
नमः॑। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो॑ अस्तु नील॑ग्री॒वाय॑ सहस्रा॒क्षाय॑ मी॒ढुषे॑। अथो॒ ये अ॑स्य॒ सत्वा॑नोऽहं
तेभ्यो॑ऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। का॒लाय॑ नमः॑। यज्ञो॒पवी॑ताभरणानि
समर्पयामि॥९॥

प्र मु॑ञ्च॒ धन्वं॑न॒स्त्वमु॑भयो॒रार्ति॑यो॒र्ज्याम्। याश्च॑ ते ह॒स्त इ॒षवः॒ परा॑ ता भ॒गवो॑
वप॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। कल॑विक॒रणा॑य॒ नमः॑। दि॒व्यप॑रि॒मल॑गन्धान्
धारयामि। गन्ध॑स्योपरि अक्ष॑तान् समर्पयामि॥१०॥

अ॒व॒त॒त्य॒ ध॒नु॒स्त्व॑ सह॒स्राक्ष॑ श॒तै॒षु॒धे। नि॒शी॒र्य॑ श॒ल्य॒ानां॑ मु॒खा शि॒वो नः॑
 सु॒म॒ना भ॒व॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। ब॒ल॒वि॒कर॒णाय॑ न॒मः। पु॒ष्पैः
 पू॒ज॒यामि॥११॥

ॐ भ॒वाय॑ दे॒वाय॑ न॒मः। ॐ श॒र्वाय॑ दे॒वाय॑ न॒मः।
 ॐ ई॒शाना॑य दे॒वाय॑ न॒मः। ॐ प॒शु॒प॒तये॑ दे॒वाय॑ न॒मः।
 ॐ रु॒द्राय॑ दे॒वाय॑ न॒मः। ॐ उ॒ग्राय॑ दे॒वाय॑ न॒मः।
 ॐ भी॒माय॑ दे॒वाय॑ न॒मः। ॐ म॒ह॒ते दे॒वाय॑ न॒मः॥
 ॐ भ॒व॒स्य॑ दे॒व॒स्य॑ प॒त्न्यै न॒मः। ॐ श॒र्व॒स्य॑ दे॒व॒स्य॑ प॒त्न्यै न॒मः।
 ॐ ई॒शान॑स्य दे॒व॒स्य॑ प॒त्न्यै न॒मः। ॐ प॒शु॒प॒तेर्दे॒व॒स्य॑ प॒त्न्यै न॒मः।
 ॐ रु॒द्र॒स्य॑ दे॒व॒स्य॑ प॒त्न्यै न॒मः। ॐ उ॒ग्र॒स्य॑ दे॒व॒स्य॑ प॒त्न्यै न॒मः।
 ॐ भी॒म॒स्य॑ दे॒व॒स्य॑ प॒त्न्यै न॒मः। ॐ म॒ह॒तो दे॒व॒स्य॑ प॒त्न्यै न॒मः॥

॥ श्रीरुद्रनाम त्रिशती ॥

न॒मो हि॒र॒ण्य॒बा॒हवे॑ न॒मः। से॒ना॒न्यै न॒मः।
 दि॒शां च॑ प॒तये॑ न॒मः। न॒मो वृ॒क्षे॒भ्यो न॒मः।
 हरि॑केशे॒भ्यो न॒मः। प॒शूनां॑ प॒तये॑ न॒मः।
 न॒मः स॒स्मिञ्ज॑राय॒ न॒मः। त्वि॒षी॒म॒ते न॒मः।
 प॒थी॒नां प॒तये॑ न॒मः। न॒मो ब॒भ्रु॒शाय॑ न॒मः।
 वि॒व्या॒धि॒ने न॒मः। अ॒न्ना॒नां प॒तये॑ न॒मः।
 न॒मो हरि॑केशाय॒ न॒मः। उ॒प॒वी॒ति॒ने न॒मः।
 पु॒ष्टा॒नां प॒तये॑ न॒मः। न॒मो भ॒व॒स्य॑ हे॒त्यै न॒मः।
 जग॑तां प॒तये॑ न॒मः। न॒मो रु॒द्राय॑ न॒मः।
 आ॒त॒ता॒वि॒ने न॒मः। क्षे॒त्रा॒णां प॒तये॑ न॒मः।
 न॒मः सू॒ताय॑ न॒मः। अ॒ह॒न्त्याय॑ न॒मः।

वना॑नां पत॑ये नमः॑। नमो॑ रोहि॑ताय॒ नमः॑।
 स्थ॑पत॑ये नमः॑। वृ॒क्षाणां॑ पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ म॒न्त्रिणे॒ नमः॑। वा॒णि॒जाय॒ नमः॑।
 क॒क्षाणां॑ पत॑ये नमः॑। नमो॑ भुव॑न्तये नमः॑।
 वा॒रि॒व॒स्कृ॒ताय॒ नमः॑। ओष॑धीनां पत॑ये नमः॑।
 नम॑ उ॒च्चैर्घो॑षाय॒ नमः॑। आ॒क्र॒न्दय॑ते नमः॑।
 प॒त्तीनां॑ पत॑ये नमः॑। नमः॑ कृ॒त्स्न॒वी॒ताय॒ नमः॑।
 धाव॑ते नमः॑। सत्त्वं॑नां पत॑ये नमः॑॥
 नमः॑ स॒ह॒मा॒नाय॒ नमः॑। नि॒व्या॒धि॒ने नमः॑।
 आ॒व्या॒धि॒नी॒नां पत॑ये नमः॑। नमः॑ ककु॑भाय॒ नमः॑।
 नि॒ष॒ङ्गि॒णे नमः॑। स्ते॒ना॒नां पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ नि॒ष॒ङ्गि॒णे नमः॑। इ॒षु॒धि॒म॒ते नमः॑।
 तस्के॑राणां पत॑ये नमः॑। नमो॑ व॒श्र॒न्ते नमः॑।
 प॒रि॒व॒श्र॒न्ते नमः॑। स्ता॒यू॒नां पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ नि॒चे॒र॒वे नमः॑। प॒रि॒च॒राय॒ नमः॑।
 अ॒र॒ण्या॒नां पत॑ये नमः॑। नमः॑ सू॒का॒वि॒भ्यो नमः॑।
 जि॒घा॒स॒द्भ्यो नमः॑। मु॒ष्ण॒तां पत॑ये नमः॑।
 नमो॑ऽसि॒म॒द्भ्यो नमः॑। न॒क्तं चर॑द्भ्यो नमः॑।
 प्र॒कृ॒न्ता॒नां पत॑ये नमः॑। नम॑ उ॒ष्णी॒षि॒ने नमः॑।
 गि॒रि॒च॒राय॒ नमः॑। कु॒लु॒ञ्च॒नां पत॑ये नमः॑।
 नम॑ इ॒षु॒म॒द्भ्यो नमः॑। ध॒न्वा॒वि॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ आ॒त॒न्वा॒ने॒भ्यो नमः॑। प्र॒ति॒द॒धा॒ने॒भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ आ॒य॒च्छ॑द्भ्यो नमः॑। वि॒सृ॒ज॒द्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ऽस्य॑द्भ्यो नमः॑। वि॒ध्य॑द्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।

नम॑ आसी॑नेभ्यो॒ नमः॑। शया॑नेभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ स्व॒पद्भ्यो॒ नमः॑। जाग्र॑द्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑स्तिष्ठ॒द्भ्यो॒ नमः॑। धाव॑द्भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ स॒भाभ्यो॒ नमः॑। स॒भाप॑तिभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॒ अश्व॑भ्यो॒ नमः॑। अश्व॑पतिभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑॥
 नम॑ आव्या॒धिनी॑भ्यो॒ नमः॑। वि॒विध्य॑न्तीभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ उ॒गणा॑भ्यो॒ नमः॑। तृ॒हृती॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ गृ॒त्सेभ्यो॒ नमः॑। गृ॒त्सप॑तिभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ ब्रा॒त॑ेभ्यो॒ नमः॑। ब्रा॒तप॑तिभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ ग॒णेभ्यो॒ नमः॑। ग॒णप॑तिभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ वि॒रूपे॑भ्यो॒ नमः॑। वि॒श्वरूपे॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ म॒हद्भ्यो॒ नमः॑। क्षु॒ल्लके॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ र॒थिभ्यो॒ नमः॑। अ॒रथे॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ र॒थेभ्यो॒ नमः॑। र॒थप॑तिभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ से॒नाभ्यो॒ नमः॑। से॒नानि॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ क्ष॒त्तृभ्यो॒ नमः॑। स॒ङ्ग॒हीतृ॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑स्तक्ष॒भ्यो॒ नमः॑। र॒थका॑रेभ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ कु॒लाले॑भ्यो॒ नमः॑। क॒र्मरि॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ पु॒ञ्जिष्टे॑भ्यो॒ नमः॑। नि॒षादे॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ इषु॒कृद्भ्यो॒ नमः॑। ध॒न्व॒कृद्भ्यो॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ मृ॒गयु॑भ्यो॒ नमः॑। श्व॒निभ्यो॒ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ श्व॒भ्यो॒ नमः॑। श्व॒पति॑भ्यश्च॒ नमः॑। वो॒ नमः॑॥
 नमो॑ भ॒वाय॑ च॒ नमः॑। रु॒द्राय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ श॒र्वाय॑ च॒ नमः॑। प॒शुप॑तये च॒ नमः॑।

नमो नील॑ग्रीवाय च॒ नमः॑। शि॒ति॒कण्ठा॑य च॒ नमः॑।
 नमः॑ क॒प॒र्दि॒नै च॒ नमः॑। व्यु॒प्त॒केशा॑य च॒ नमः॑।
 नमः॑ स॒हस्रा॑क्षाय च॒ नमः॑। श॒त॒ध॒न्व॒ने च॒ नमः॑।
 नमो॑ गि॒रि॒शा॒य च॒ नमः॑। शि॒पि॒वि॒ष्टा॑य च॒ नमः॑।
 नमो॑ मी॒दुष्ट॑माय च॒ नमः॑। इ॒षु॒म॒ते च॒ नमः॑।
 नमो॑ ह॒स्वा॒य च॒ नमः॑। वा॒म॒ना॒य च॒ नमः॑।
 नमो॑ बृ॒ह॒ते च॒ नमः॑। वर्षा॑य॒से च॒ नमः॑।
 नमो॑ वृ॒द्धा॒य च॒ नमः॑। सं॒वृ॒ध्व॒ने च॒ नमः॑।
 नमो॑ अ॒ग्नि॒या॒य च॒ नमः॑। प्र॒थ॒मा॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ आ॒श॒वै च॒ नमः॑। अ॒जि॒रा॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ शी॒घ्रि॒या॒य च॒ नमः॑। शी॒भ्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ ऊ॒र्म्या॒य च॒ नमः॑। अ॒व॒स्व॒न्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ स्त्रो॒त॒स्या॒य च॒ नमः॑। द्वी॒प्या॒य च॒ नमः॑॥
 नमो॑ ज्ये॒ष्ठा॒य च॒ नमः॑। क॒नि॒ष्ठा॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ पू॒र्व॒जा॒य च॒ नमः॑। अ॒प॒र॒जा॒य च॒ नमः॑।
 नमो॑ म॒ध्य॒मा॒य च॒ नमः॑। अ॒प॒ग॒ल्भा॒य च॒ नमः॑।
 नमो॑ जघ॒न्या॒य च॒ नमः॑। बु॒ध्नि॒या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ सो॒भ्या॒य च॒ नमः॑। प्र॒ति॒स॒र्या॒य च॒ नमः॑।
 नमो॑ या॒म्या॒य च॒ नमः॑। क्षे॒म्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ उ॒र्व॒र्या॒य च॒ नमः॑। ख॒ल्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ श्लो॒क्या॒य च॒ नमः॑। अ॒व॒सा॒न्या॒य च॒ नमः॑।
 नमो॑ व॒न्या॒य च॒ नमः॑। क॒क्ष्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ श्र॒वा॒य च॒ नमः॑। प्र॒ति॒श्र॒वा॒य च॒ नमः॑।

नमः आशुषेणाय च नमः। आशुरेथाय च नमः।
 नमः शूराय च नमः। अवभिन्दते च नमः।
 नमो वर्मिणे च नमः। वरूथिने च नमः।
 नमो बिल्मिने च नमः। कवचिने च नमः।
 नमः श्रुताय च नमः। श्रुतसेनाय च नमः॥
 नमो दुन्दुभ्याय च नमः। आहनन्याय च नमः।
 नमो धृष्णवे च नमः। प्रमृशाय च नमः।
 नमो दृताय च नमः। प्रहिताय च नमः।
 नमो निषङ्गिणे च नमः। इषुधिमते च नमः।
 नमस्तीक्ष्णेषवे च नमः। आयुधिने च नमः।
 नमः स्वायुधाय च नमः। सुधन्वने च नमः।
 नमः सुत्याय च नमः। पथ्याय च नमः।
 नमः काट्याय च नमः। नीप्याय च नमः।
 नमः सूद्याय च नमः। सरस्याय च नमः।
 नमो नाद्याय च नमः। वैशन्ताय च नमः।
 नमः कूप्याय च नमः। अवट्याय च नमः।
 नमो वर्ष्याय च नमः। अवर्ष्याय च नमः।
 नमो मेघ्याय च नमः। विद्युत्याय च नमः।
 नमः ईध्रियाय च नमः। आतप्याय च नमः।
 नमो वात्याय च नमः। रेष्मियाय च नमः।
 नमो वास्तव्याय च नमः। वास्तुपाय च नमः॥
 नमः सोमाय च नमः। रुद्राय च नमः।
 नमस्ताम्राय च नमः। अरुणाय च नमः।

नमः शङ्गाय च नमः। पशुपतये च नमः।
 नम उग्राय च नमः। भीमाय च नमः।
 नमो अग्रेवधाय च नमः। दूरेवधाय च नमः।
 नमो हृन्ने च नमः। हर्नीयसे च नमः।
 नमो वृक्षेभ्यो नमः। हरिकेशेभ्यो नमः।
 नमस्ताराय नमः। नमः शम्भवे च नमः।
 मयोभवे च नमः। नमः शङ्कराय च नमः।
 मयस्कराय च नमः। नमः शिवाय च नमः।
 शिवतराय च नमः। नमस्तीर्थाय च नमः।
 कूल्याय च नमः। नमः पार्याय च नमः।
 अवार्याय च नमः। नमः प्रतरणाय च नमः।
 उत्तरणाय च नमः। नम आतार्याय च नमः।
 आलाढ्याय च नमः। नमः शष्प्याय च नमः।
 फेन्याय च नमः। नमः सिकत्याय च नमः।
 प्रवाह्याय च नमः॥
 नम इरिण्याय च नमः। प्रपथ्याय च नमः।
 नमः किंशिलाय च नमः। क्षयणाय च नमः।
 नमः कपर्दिने च नमः। पुलस्तये च नमः।
 नमो गोष्ठ्याय च नमः। गृह्याय च नमः।
 नमस्तल्प्याय च नमः। गेह्याय च नमः।
 नमः काट्याय च नमः। गह्वरेष्ठाय च नमः।
 नमो हृदय्याय च नमः। निवेष्ट्याय च नमः।
 नमः पांसव्याय च नमः। रजस्याय च नमः।

नमः शुष्क्याय च नमः। हरित्याय च नमः।
 नमो लोप्याय च नमः। उलप्याय च नमः।
 नम ऊर्व्याय च नमः। सूर्याय च नमः।
 नमः पुण्याय च नमः। पूर्णशद्याय च नमः।
 नमोऽपगुरमाणाय च नमः। अभिघ्नते च नमः।
 नम आख्विदते च नमः। प्रख्विदते च नमः। नमो वो नमः।
 किरिकेभ्यो नमः। देवानां हृदयेभ्यो नमः।
 नमो विक्षीणकेभ्यो नमः। नमो विचिन्वत्केभ्यो नमः।
 नम अनिरुहतेभ्यो नमः। नम आमीवत्केभ्यो नमः।
 ॥इति श्री श्रीरुद्रनाम त्रिशती सम्पूर्णा॥



॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ शिवाय नमः
 ॐ महेश्वराय नमः
 ॐ शम्भवे नमः
 ॐ पिनाकिने नमः
 ॐ शशिशेखराय नमः
 ॐ वामदेवाय नमः
 ॐ विरूपाक्षाय नमः
 ॐ कपर्दिने नमः
 ॐ नीललोहिताय नमः
 ॐ शङ्कराय नमः
 ॐ शूलपाणिने नमः
 ॐ खट्वाङ्गिने नमः

१०

ॐ विष्णुवल्लभाय नमः
 ॐ शिपिविष्टाय नमः
 ॐ अम्बिकानाथाय नमः
 ॐ श्रीकण्ठाय नमः
 ॐ भक्तवत्सलाय नमः
 ॐ भवाय नमः
 ॐ शर्वाय नमः
 ॐ त्रिलोकेशाय नमः
 ॐ शितिकण्ठाय नमः
 ॐ शिवाप्रियाय नमः
 ॐ उग्राय नमः
 ॐ कपालिने नमः

२०

ॐ कामारये नमः
 ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः
 ॐ गङ्गाधराय नमः
 ॐ ललाटाक्षाय नमः
 ॐ कालकालाय नमः
 ॐ कृपानिधये नमः ३०
 ॐ भीमाय नमः
 ॐ परशुहस्ताय नमः
 ॐ मृगपाणये नमः
 ॐ जटाधराय नमः
 ॐ कैलासवासिने नमः
 ॐ कवचिने नमः
 ॐ कठोराय नमः
 ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
 ॐ वृषाङ्गाय नमः
 ॐ वृषभारूढाय नमः ४०
 ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
 ॐ सामप्रियाय नमः
 ॐ स्वरमयाय नमः
 ॐ त्रयीमूर्तये नमः
 ॐ अनीश्वराय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ परमात्मने नमः
 ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
 ॐ हविषे नमः
 ॐ यज्ञमयाय नमः ५०
 ॐ सोमाय नमः

ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
 ॐ सदाशिवाय नमः
 ॐ विश्वेश्वराय नमः
 ॐ वीरभद्राय नमः
 ॐ गणनाथाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ हिरण्यरेतसे नमः
 ॐ दुर्धर्षाय नमः
 ॐ गिरीशाय नमः ६०
 ॐ गिरिशाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः
 ॐ भर्गाय नमः
 ॐ गिरिधन्वने नमः
 ॐ गिरिप्रियाय नमः
 ॐ कृत्तिवाससे नमः
 ॐ पुरारातये नमः
 ॐ भगवते नमः
 ॐ प्रमथाधिपाय नमः ७०
 ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
 ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
 ॐ जगद्धापिने नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ व्योमकेशाय नमः
 ॐ महासेनजनकाय नमः
 ॐ चारुविक्रमाय नमः
 ॐ रुद्राय नमः

| | | | |
|---------------------|----|---------------------|-----|
| ॐ भूतपतये नमः | | ॐ महादेवाय नमः | |
| ॐ स्थाणवे नमः | ८० | ॐ अव्ययाय नमः | |
| ॐ अहये बुध्याय नमः | | ॐ हरये नमः | |
| ॐ दिगम्बराय नमः | | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ अष्टमूर्तये नमः | | ॐ अव्यग्राय नमः | |
| ॐ अनेकात्मने नमः | | ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | |
| ॐ सात्त्विकाय नमः | | ॐ हराय नमः | १०० |
| ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | | ॐ भगनेत्रभिदे नमः | |
| ॐ शाश्वताय नमः | | ॐ अव्यक्ताय नमः | |
| ॐ खण्डपरशवे नमः | | ॐ सहस्राक्षाय नमः | |
| ॐ अजाय नमः | | ॐ सहस्रपदे नमः | |
| ॐ पाशविमोचकाय नमः | ९० | ॐ अपवर्गप्रदाय नमः | |
| ॐ मृडाय नमः | | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ पशुपतये नमः | | ॐ तारकाय नमः | |
| ॐ देवाय नमः | | ॐ परमेश्वराय नमः | |

॥ इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
निषङ्गर्थिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥ १२ ॥

या ते हेतिर्मीदुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥ १३ ॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।

सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मुनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्रिकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
 मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
 शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय
 नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय
 नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति
 द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
 द्वितीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
 करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥
 इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

मया कृतान्यनेकानि पापानि हर शङ्कर।
 गृहाणार्घ्यमुमाकान्त शिवरात्रौ प्रसीद मे॥२॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

पूर्वं नन्दि महाकालौ गणभृङ्गी च दक्षिणे।
 वृषस्कन्दौ पश्चिमे ते देशकालौ तथोत्तरे।
 गङ्गा च यमुना पार्श्वे पूजां गृह्ण नमोऽस्तुते॥२॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
 तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ते क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
 शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्द्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
()^{४०} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे

त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{४१} नक्षत्र ()^{४२} नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्र्योदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्य अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं तृतीय-यामपूजां करिष्ये।

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उ॒तो त॒ इष॑वे॒ नमः॑। नमस्ते अस्तु धन्व॑ने बा॒हुभ्या॑मु॒त ते॒
नमः॑॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। स॒द्योजा॑तं प्र॒पद्या॑मि।

या त॒ इषुः॑ शि॒वत॑मा शि॒वं ब॒भूव॑ ते धनुः॑। शि॒वा श॑र॒व्या या तव॑ तया॑ नो
रुद्र मृ॒डय॑॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। स॒द्योजा॑ताय॒ वै नमो॑ नमः॑। आ॒सनं
सम॑र्पयामि॥ २॥

या ते॑ रुद्र शि॒वा त॒नूर॑घो॒राऽपा॑पकाशिनी। तया॑ नस्त॒नुवा॑ शन्त॒मया॑
गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। भवे॑ भवे॑ नाति॑ भवे॑ भवस्व॒
माम्। पा॒दयोः पा॒द्यं सम॑र्पयामि॥ ३॥

^{४१}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{४२}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
 पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं
 समर्पयामि॥ ४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं
 सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं
 समर्पयामि॥ ५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्यसर्वाश्च
 यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥ ६॥
 असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु
 श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः।
 स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥ ७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
 ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
 ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
 ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
 रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
 भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उत्तैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः।
 उत्तैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय

नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं
तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि
समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्रियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो
वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्वः सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः
सुमना भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः। पुष्पैः
पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ शिवाय नमः

ॐ महेश्वराय नमः

ॐ शम्भवे नमः

ॐ पिनाकिने नमः

ॐ शशिशेखराय नमः

ॐ वामदेवाय नमः

ॐ विरूपाक्षाय नमः

ॐ कपर्दिने नमः

| | | | |
|-----------------------|----|----------------------------|----|
| ॐ नीललोहिताय नमः | | ॐ कवचिने नमः | |
| ॐ शङ्कराय नमः | १० | ॐ कठोराय नमः | |
| ॐ शूलपाणिने नमः | | ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः | |
| ॐ खट्वाङ्गिने नमः | | ॐ वृषाङ्गाय नमः | |
| ॐ विष्णुवल्लभाय नमः | | ॐ वृषभारूढाय नमः | ४० |
| ॐ शिपिविष्टाय नमः | | ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| ॐ अम्बिकानाथाय नमः | | ॐ सामप्रियाय नमः | |
| ॐ श्रीकण्ठाय नमः | | ॐ स्वरमयाय नमः | |
| ॐ भक्तवत्सलाय नमः | | ॐ त्रयीमूर्तये नमः | |
| ॐ भवाय नमः | | ॐ अनीश्वराय नमः | |
| ॐ शर्वाय नमः | | ॐ सर्वज्ञाय नमः | |
| ॐ त्रिलोकेशाय नमः | २० | ॐ परमात्मने नमः | |
| ॐ शितिकण्ठाय नमः | | ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| ॐ शिवाप्रियाय नमः | | ॐ हविषे नमः | |
| ॐ उग्राय नमः | | ॐ यज्ञमयाय नमः | ५० |
| ॐ कपालिने नमः | | ॐ सोमाय नमः | |
| ॐ कामारये नमः | | ॐ पञ्चवक्त्राय नमः | |
| ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः | | ॐ सदाशिवाय नमः | |
| ॐ गङ्गाधराय नमः | | ॐ विश्वेश्वराय नमः | |
| ॐ ललाटाक्षाय नमः | | ॐ वीरभद्राय नमः | |
| ॐ कालकालाय नमः | | ॐ गणनाथाय नमः | |
| ॐ कृपानिधये नमः | ३० | ॐ प्रजापतये नमः | |
| ॐ भीमाय नमः | | ॐ हिरण्यरेतसे नमः | |
| ॐ परशुहस्ताय नमः | | ॐ दुर्धर्षाय नमः | |
| ॐ मृगपाणये नमः | | ॐ गिरीशाय नमः | ६० |
| ॐ जटाधराय नमः | | ॐ गिरिशाय नमः | |
| ॐ कैलासवासिने नमः | | ॐ अनघाय नमः | |

| | | | |
|--------------------|----|---------------------|-----|
| ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः | | ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | |
| ॐ भर्गाय नमः | | ॐ शाश्वताय नमः | |
| ॐ गिरिधन्वने नमः | | ॐ खण्डपरशवे नमः | |
| ॐ गिरिप्रियाय नमः | | ॐ अजाय नमः | |
| ॐ कृत्तिवाससे नमः | | ॐ पाशविमोचकाय नमः | १० |
| ॐ पुरारातये नमः | | ॐ मृडाय नमः | |
| ॐ भगवते नमः | | ॐ पशुपतये नमः | |
| ॐ प्रमथाधिपाय नमः | ७० | ॐ देवाय नमः | |
| ॐ मृत्युञ्जयाय नमः | | ॐ महादेवाय नमः | |
| ॐ सूक्ष्मतनवे नमः | | ॐ अव्ययाय नमः | |
| ॐ जगद्ध्यापिने नमः | | ॐ हरये नमः | |
| ॐ जगद्गुरवे नमः | | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ व्योमकेशाय नमः | | ॐ अव्यग्राय नमः | |
| ॐ महासेनजनकाय नमः | | ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | |
| ॐ चारुविक्रमाय नमः | | ॐ हराय नमः | १०० |
| ॐ रुद्राय नमः | | ॐ भगनेत्रभिदे नमः | |
| ॐ भूतपतये नमः | | ॐ अव्यक्ताय नमः | |
| ॐ स्थाणवे नमः | ८० | ॐ सहस्राक्षाय नमः | |
| ॐ अहये बुध्याय नमः | | ॐ सहस्रपदे नमः | |
| ॐ दिगम्बराय नमः | | ॐ अपवर्गप्रदाय नमः | |
| ॐ अष्टमूर्तये नमः | | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ अनेकात्मने नमः | | ॐ तारकाय नमः | |
| ॐ सात्त्विकाय नमः | | ॐ परमेश्वराय नमः | |

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशाल्यो बाणवा ५ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मादुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्रिकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय
नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय
नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति
द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
तृतीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥निशीथे॥

दुःखदारिद्र्यभारैश्च दग्धोऽहं पार्वतीपते।
त्रायस्व मां महादेव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

नमोऽव्यक्ताय सूक्ष्माय नमस्ते त्रिपुरान्तक।
पूजां गृहाण देवेश यथाशक्त्युपपादिताम्॥३॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ प्रधान-पूजा - साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्यब्रह्मणः द्वितीयपराद्धं श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणेपार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
()^{४३} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{४४} नक्षत्र ()^{४५} नाम योग () करण युक्तायां
च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां) शुभतिथौ
अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय आयुरारोग्य
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल
पापक्षयार्थं शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं चतुर्थ-यामपूजां करिष्ये।

^{४३}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^{४४}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{४५}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

॥ षोडशोपचारपूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूवं ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो
रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
समर्पयामि॥ २॥

या तै रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥ ३॥

यामिषु गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवा गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं
समर्पयामि॥ ४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं
सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं
समर्पयामि॥ ५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्यसर्वाश्च
यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥ ६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु

श्रिताः सहस्रशोऽवैषाः हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः।
स्नानं समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलंग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः।
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय
नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं
तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि
समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्त्तियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भंगवो
वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्वः सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः
सुमना भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः। पुष्पैः

पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
 ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
 ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
 ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
 ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
 ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।
 ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
 ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

ॐ शिवाय नमः
 ॐ महेश्वराय नमः
 ॐ शम्भवे नमः
 ॐ पिनाकिने नमः
 ॐ शशिशेखराय नमः
 ॐ वामदेवाय नमः
 ॐ विरूपाक्षाय नमः
 ॐ कपर्दिने नमः
 ॐ नीललोहिताय नमः
 ॐ शङ्कराय नमः
 ॐ शूलपाणिने नमः
 ॐ खट्वाङ्गिने नमः
 ॐ विष्णुवल्लभाय नमः
 ॐ शिपिविष्टाय नमः
 ॐ अम्बिकानाथाय नमः

१०

ॐ श्रीकण्ठाय नमः
 ॐ भक्तवत्सलाय नमः
 ॐ भवाय नमः
 ॐ शर्वाय नमः
 ॐ त्रिलोकेशाय नमः
 ॐ शितिकण्ठाय नमः
 ॐ शिवाप्रियाय नमः
 ॐ उग्राय नमः
 ॐ कपालिने नमः
 ॐ कामारये नमः
 ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः
 ॐ गङ्गाधराय नमः
 ॐ ललाटाक्षाय नमः
 ॐ कालकालाय नमः
 ॐ कृपानिधये नमः

२०

३०

ॐ भीमाय नमः
 ॐ परशुहस्ताय नमः
 ॐ मृगपाणये नमः
 ॐ जटाधराय नमः
 ॐ कैलासवासिने नमः
 ॐ कवचिने नमः
 ॐ कठोराय नमः
 ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः
 ॐ वृषाङ्गाय नमः
 ॐ वृषभारूढाय नमः ४०
 ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
 ॐ सामप्रियाय नमः
 ॐ स्वरमयाय नमः
 ॐ त्रयीमूर्तये नमः
 ॐ अनीश्वराय नमः
 ॐ सर्वज्ञाय नमः
 ॐ परमात्मने नमः
 ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः
 ॐ हविषे नमः
 ॐ यज्ञमयाय नमः ५०
 ॐ सोमाय नमः
 ॐ पञ्चवक्त्राय नमः
 ॐ सदाशिवाय नमः
 ॐ विश्वेश्वराय नमः
 ॐ वीरभद्राय नमः
 ॐ गणनाथाय नमः
 ॐ प्रजापतये नमः

ॐ हिरण्यरेतसे नमः
 ॐ दुर्धर्षाय नमः
 ॐ गिरीशाय नमः ६०
 ॐ गिरिशाय नमः
 ॐ अनघाय नमः
 ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः
 ॐ भर्गाय नमः
 ॐ गिरिधन्वने नमः
 ॐ गिरिप्रियाय नमः
 ॐ कृत्तिवाससे नमः
 ॐ पुरारातये नमः
 ॐ भगवते नमः
 ॐ प्रमथाधिपाय नमः ७०
 ॐ मृत्युञ्जयाय नमः
 ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
 ॐ जगद्धापिने नमः
 ॐ जगद्गुरवे नमः
 ॐ व्योमकेशाय नमः
 ॐ महासेनजनकाय नमः
 ॐ चारुविक्रमाय नमः
 ॐ रुद्राय नमः
 ॐ भूतपतये नमः
 ॐ स्थाणवे नमः ८०
 ॐ अहये बुध्याय नमः
 ॐ दिगम्बराय नमः
 ॐ अष्टमूर्तये नमः
 ॐ अनेकात्मने नमः

| | | |
|---------------------|---------------------|-----|
| ॐ सात्त्विकाय नमः | ॐ पूषदन्तभिदे नमः | |
| ॐ शुद्धविग्रहाय नमः | ॐ अव्यग्राय नमः | |
| ॐ शाश्वताय नमः | ॐ दक्षाध्वरहराय नमः | |
| ॐ खण्डपरशवे नमः | ॐ हराय नमः | १०० |
| ॐ अजाय नमः | ॐ भगनेत्रभिदे नमः | |
| ॐ पाशविमोचकाय नमः | ॐ अव्यक्ताय नमः | १० |
| ॐ मृडाय नमः | ॐ सहस्राक्षाय नमः | |
| ॐ पशुपतये नमः | ॐ सहस्रपदे नमः | |
| ॐ देवाय नमः | ॐ अपवर्गप्रदाय नमः | |
| ॐ महादेवाय नमः | ॐ अनन्ताय नमः | |
| ॐ अव्ययाय नमः | ॐ तारकाय नमः | |
| ॐ हरये नमः | ॐ परमेश्वराय नमः | |

॥ इति शाक्तप्रमोदे श्री शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥ १२॥

या ते हेतिर्मादुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥ १३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवै।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्रिकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो

मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
 शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय
 नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय
 नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति
 द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त समस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ
 चतुर्थ-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
 करोमि विधिवद्वत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

किं न जानासि देवेश त्वयि भक्तिं प्रयच्छ मे।
 स्वपादाग्रतले देव दास्यं देहि जगत्पते॥४॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

बद्धोऽहं विविधैः पाशैः संसारभयबन्धनैः।
 पतितं मोहजाले मां त्वं समुद्धर शङ्कर॥४॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
 तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ते क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
 शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वरा।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥
अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम् ॥

संसारक्लेशदग्धस्य व्रतेनानेन शङ्कर।
प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



॥ सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्या। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।
आचमनम्। शुक्लाम्बरधरं + शान्तये। प्राणायामः।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपतेरङ्घ्रियुगं स्मरामि॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थागतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्।
श्रीरामः स्मरणेनैव व्यपोहति न संशयः॥

श्रीराम राम राम।

तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च।
योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत्॥

श्रीहरे गोविन्द गोविन्द गोविन्द।

ममोपात्तसमस्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्, अद्य -

श्रीभगवतः विष्णोः नारायणस्य अचिन्त्यया अपरिमितया शक्त्या
भ्रियमाणस्य महाजलौघस्य मध्ये परिभ्रमताम् अनेककोटिब्रह्माण्डानाम्
एकतमे पृथिवी-अप्-तेजो-वायु-आकाश-अहङ्कार-महद्-अव्यक्तैः आवरणैः
आवृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डकरण्डमध्ये चतुर्दशभुवनान्तर्गते भूमण्डले
जम्बू-प्लक्ष-शाक-शाल्मलि-कुश-क्रौञ्च-पुष्कराख्य-सप्तद्वीपमध्ये जम्बूद्वीपे
भारत-किम्पुरुष-हरि-इलावृत-रम्यक-हिरण्य-कुरु-भद्राश्व-केतुमाल-

नववर्षमध्ये भारतवर्षे

इन्द्र-चेरु-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-चारण-भरत-नवखण्डमध्ये
भरतखण्डे सुमेरु-निषद-हेमकूट-हिमाचल-माल्यवत्-पारियात्रक-गन्धमादन-

कैलास-विन्ध्याचलादि-अनेकपुण्यशैलानां मध्ये

दण्डकारण्य-चम्पकारण्य-विन्ध्यारण्य-वीक्षारण्य-श्वेतारण्य-वेदारण्यादि-

अनेकपुण्यारण्यानां मध्ये कर्मभूमौ रामसेतुकेदारयोः मध्ये

भागीरथी-यमुना-नर्मदा-त्रिवेणी-मलापहारिणी-गौतमी-कृष्णवेणी-तुङ्गभद्रा-

कावेर्यादि-अनेकपुण्यनदी-विराजिते

इन्द्रप्रस्थ-यमप्रस्थ-अवन्तिकापुरी-हस्तिनापुरी-अयोध्यापुरी-द्वारका-मथुरा-
पुरी-मायापुरी-काशीपुरी-काञ्चीपुर्यादि-अनेकपुण्यपुरी-विराजिते –

सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनः ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे पञ्चाशद्-अब्दादौ
प्रथमे वर्षे प्रथमे मासे प्रथमे पक्षे प्रथमे दिवसे अहि द्वितीये यामे तृतीये
मुहूर्ते स्वायम्भुव-स्वारोचिष-उत्तम-तामस-रैवत-चाक्षुषाख्येषु षट् मनुषु
अतीतेषु सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे
अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये

()^{४६} नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् /
हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह
/ कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्ल /
कृष्ण) पक्षे () शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{४७} नक्षत्र ()^{४८} नाम योग () करण युक्तायां च

एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम् अस्याम् () शुभतिथौ-

अनादि-अविद्या-वासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः

कर्मगतिभिः विचित्रासु योनिषु पुनःपुनः अनेकधा जनित्वा केनापि

पुण्यकर्मविशेषेण इदानीन्तन-मानुष-द्विजजन्म-विशेषं प्राप्तवतः मम –

जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षणपर्यन्तं बाल्ये कौमारे यौवने मध्यमे

वयसि वार्धके च जागृत्-स्वप्न-सुषुप्ति-अवस्थासु

मनो-वाक्-कायाख्य-त्रिकरणचेष्टया कर्मेन्द्रिय-ज्ञानेन्द्रिय-व्यापारैः

सम्भावितानाम् इह जन्मनि जन्मान्तरे च ज्ञानाज्ञानकृतानां महापातकानां

महापातक-अनुमन्तृत्वादीनां समपातकानाम् उपपातकानां मलिनीकरणानां

गर्ह्यधन-आदान-उपजीवनादीनाम् अपात्रीकरणानां जातिभ्रंशकराणां

विहितकर्मत्याग-निन्दितसमाचरणादीनां ज्ञानतः सकृत् कृतानाम् अज्ञानतः

असकृत् कृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं –

^{४६}पृष्ठं ३४५ पश्यताम्

^{४७}पृष्ठं ३४६ पश्यताम्

^{४८}पृष्ठं ३४७ पश्यताम्

महागणपत्यादिसमस्तवैदिकदेवतासन्निधौ
()-पुण्यकाल-स्नानमहं करिष्ये। अप उपस्पृश्या।

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुम् अर्हसि॥

(प्रोक्षण-मन्त्राः/स्नान-मन्त्राः)

स्नात्वा वस्त्रं धृत्वा कुलाचारवत् पुण्ड्रधारणं च कृत्वा आचम्य।



विभाग: २

उपाङ्गा:

संवत्सर-नामानि

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च॥१॥

ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः॥२॥

सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ॥३॥

हेमलम्बो विलम्बोऽथ विकारी शार्वरी प्लवः।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ॥४॥

प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधिकृत्।
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः॥५॥

पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः॥६॥

- | | |
|--------------|----------------|
| १. प्रभवः | १२. बहुधान्यः |
| २. विभवः | १३. प्रमाथी |
| ३. शुक्लः | १४. विक्रमः |
| ४. प्रमोदः | १५. वृषः |
| ५. प्रजापतिः | १६. चित्रभानुः |
| ६. अङ्गिराः | १७. सुभानुः |
| ७. श्रीमुखः | १८. तारणः |
| ८. भावः | १९. पार्थिवः |
| ९. युवा | २०. व्ययः |
| १०. धाता | २१. सर्वजित् |
| ११. ईश्वरः | २२. सर्वधारी |

| | |
|----------------|------------------|
| २३. विरोधी | ४२. कीलकः |
| २४. विकृतिः | ४३. सौम्यः |
| २५. खरः | ४४. साधारणः |
| २६. नन्दनः | ४५. विरोधिकृत् |
| २७. विजयः | ४६. परितापी |
| २८. जयः | ४७. प्रमादी |
| २९. मन्मथः | ४८. आनन्दः |
| ३०. दुर्मुखः | ४९. राक्षसः |
| ३१. हेमलम्बः | ५०. नलः |
| ३२. विलम्बः | ५१. पिङ्गलः |
| ३३. विकारी | ५२. कालयुक्तिः |
| ३४. शार्वरी | ५३. सिद्धार्थी |
| ३५. प्लवः | ५४. रौद्रः |
| ३६. शुभकृत् | ५५. दुर्मतिः |
| ३७. शोभनः | ५६. दुन्दुभिः |
| ३८. क्रोधी | ५७. रुधिरोद्गारी |
| ३९. विश्वावसुः | ५८. रक्ताक्षः |
| ४०. पराभवः | ५९. क्रोधनः |
| ४१. प्लवङ्गः | ६०. क्षयः |

नक्षत्र-नामानि

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्लेषा मघास्तथा॥१॥

पूर्वफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफल्गुनी ततः।
हस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा तदननतरम्॥२॥

अनूराधा ततो जयेष्ठा ततो मूलं निगद्यते।
पूर्वाषाढोतराषाढा त्वभिजिह्वणस्ततः॥३॥

धनिष्ठा शतताराख्य पूर्वा भाद्रपदा ततः।
उत्तरा भाद्रपदा चैव रेवत्येतानि भानि च॥४॥

| | |
|------------------|---------------------|
| १. अश्विनी | १५. स्वाती |
| २. अपभरणी | १६. विशाखा |
| ३. कृत्तिका | १७. अनूराधा |
| ४. रोहिणी | १८. ज्येष्ठा |
| ५. मृगशीर्षम् | १९. मूला |
| ६. आर्द्रा | २०. पूर्वाषाढा |
| ७. पुनर्वसुः | २१. उत्तराषाढा |
| ८. पुष्यः | २२. श्रवणम् |
| ९. आश्लेषा | २३. श्रविष्ठा |
| १०. मघा | २४. शतभिषक् |
| ११. पूर्वफल्गुनी | २५. पूर्वप्रोष्ठपदा |
| १२. उत्तरफल्गुनी | २६. उत्तरप्रोष्ठपदा |
| १३. हस्तः | २७. रेवती |
| १४. चित्रा | |

योग-नामानि

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यं शोभनस्तथा।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥

गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा।
वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः।
सिद्धः साध्यः शुभः शुभ्रो ब्राह्मो माहेन्द्र-वैधृती॥

| | |
|--------------|--------------|
| १. विष्कम्भः | ३. आयुष्मान् |
| २. प्रीतिः | ४. सौभाग्यम् |

| | |
|--------------|----------------|
| ५. शोभनः | १७. व्यतीपातः |
| ६. अतिगण्डः | १८. वरीयान् |
| ७. सुकर्म | १९. परिघः |
| ८. धृतिः | २०. शिवः |
| ९. शूलः | २१. सिद्धः |
| १०. गण्डः | २२. साध्यः |
| ११. वृद्धिः | २३. शुभः |
| १२. ध्रुवः | २४. शुभ्रः |
| १३. व्याघातः | २५. ब्राह्मः |
| १४. हर्षणः | २६. माहेन्द्रः |
| १५. वज्रः | २७. वैधृतिः |
| १६. सिद्धिः | |

करण-नामानि

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा।
 गरश्च वणिजश्चापि विष्टिश्च शकुनिस्तथा।
 चतुष्पाच्चापि नागश्च किंस्तुघ्न इति कीर्तितम्॥८२॥

—श्रीब्रह्मवैवर्त-महापुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे उत्तरार्धे नारदनारायणसंवादे राधोद्धवसंवादे कालनिरूपणं नाम षण्णवतितमेऽध्याये

चराणि सप्त

१. बवम् २. बालवम् ३. कौलवम् ४. तैतिलम्

५. गरजा ६. वणिजा ७. भद्रा

स्थिराणि चत्वारि

१. शकुनिः २. चतुष्पात् ३. नागवान् ४. किंस्तुघ्नम्

॥ तिथीनां पूर्वोत्तरार्ध-करणानि ॥

| | तिथिः | पूर्वार्ध-करणम् | उत्तरार्ध-करणम् |
|-----|----------------|-----------------|-----------------|
| १. | शुक्ल-प्रथमा | किंस्तुघ्नम् | बवम् |
| २. | शुक्ल-द्वितीया | बालवम् | कौलवम् |
| ३. | शुक्ल-तृतीया | तैतिलम् | गरजा |
| ४. | शुक्ल-चतुर्थी | वणिजा | भद्रा |
| ५. | शुक्ल-पञ्चमी | बवम् | बालवम् |
| ६. | शुक्ल-षष्ठी | कौलवम् | तैतिलम् |
| ७. | शुक्ल-सप्तमी | गरजा | वणिजा |
| ८. | शुक्ल-अष्टमी | भद्रा | बवम् |
| ९. | शुक्ल-नवमी | बालवम् | कौलवम् |
| १०. | शुक्ल-दशमी | तैतिलम् | गरजा |
| ११. | शुक्ल-एकादशी | वणिजा | भद्रा |
| १२. | शुक्ल-द्वादशी | बवम् | बालवम् |
| १३. | शुक्ल-त्रयोदशी | कौलवम् | तैतिलम् |
| १४. | शुक्ल-चतुर्दशी | गरजा | वणिजा |
| १५. | पौर्णमासी | भद्रा | बवम् |
| १६. | कृष्ण-प्रथमा | बालवम् | कौलवम् |
| १७. | कृष्ण-द्वितीया | तैतिलम् | गरजा |
| १८. | कृष्ण-तृतीया | वणिजा | भद्रा |
| १९. | कृष्ण-चतुर्थी | बवम् | बालवम् |
| २०. | कृष्ण-पञ्चमी | कौलवम् | तैतिलम् |
| २१. | कृष्ण-षष्ठी | गरजा | वणिजा |
| २२. | कृष्ण-सप्तमी | भद्रा | बवम् |
| २३. | कृष्ण-अष्टमी | बालवम् | कौलवम् |
| २४. | कृष्ण-नवमी | तैतिलम् | गरजा |
| २५. | कृष्ण-दशमी | वणिजा | भद्रा |
| २६. | कृष्ण-एकादशी | बवम् | बालवम् |
| २७. | कृष्ण-द्वादशी | कौलवम् | तैतिलम् |
| २८. | कृष्ण-त्रयोदशी | गरजा | वणिजा |
| २९. | कृष्ण-चतुर्दशी | भद्रा | शकुनिः |
| ३०. | अमावास्या | चतुष्पात् | नागवान् |

